दैनिक

सांध्य प्रकाश

भोपाल की धड़कन

वर्ष 53/ अंक 86/ पृष्ठ 8 / मूल्य ₹ 2.10

संस्थापक- स्व. सुरेंद्र पटेल

आर.एन.आई 22296/71 डाक पंजीयन मप्र/भोपाल/125/12-14

भोपाल, गुरुवार 26 अक्टूबर 2023 भोपाल से प्रकाशित

dainiksandhyaprakash.in

आज का इतिहास

भारत का कश्मीर

भारत की आजादी के वक्त राजा हरीसिंह ने कश्मीर को स्वतंत्र रियासत घोषित करने का फैसला लिया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज शिरडी पहुंचे और उन्होंने साईंबाबा के दर्शन किए।

बुधनी में शिवराज का रोड शो...

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान आज अपने विधानसभा क्षेत्र बुधनी के बकतरा पहुंचे। मंदिर में पूजा करने के बाद उन्होंने रोड शो किया। उनके साथ उनकी पत्नी साधना सिंह भी रहीं।

छिंदवाड़ा में कमल नाथ बोले- अखिलेश से मनमुटाव नहीं, एमपी में मुकाबला भाजपा-कांग्रेस के बीच

छिंदवाड़ा। पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष कमलनाथ ने कहा है कि सपा प्रमुख अखिलेश यादव से कोई मनमुटाव नहीं है, लेकिन मध्य प्रदेश में मुकाबला भाजपा-कांग्रेस के बीच है। इसलिए समझौता नहीं किया गया। वे आज छिंदवाड़ा में मीडिया से चर्चा कर रहे थे। राजस्थान कांग्रेस प्रमुख गोविंद सिंह डोटासरा के जयपुर आवास पर प्रवर्तन निदेशालय की छापेमारी पर कमलनाथ ने कहा, वे (भाजपा) अब जो करना चाहें करें, मध्य प्रदेश के मतदाता और राजस्थान के मतदाता सब समझ रहे हैं।

छिंदवाड़ा। पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ अपने बेटे सांसद नकुल नाथ के साथ नामांकन रैली में शामिल हुए उन्होंने आज छिंदवाड़ा विधानसभा से अपना नामांकन पत्र भरा नामांकन भारा

निशा बांगरे कांग्रेस में शामल होंगी

भोपाल। एसडीएम पद से इस्तीफा देकर चर्चा में आईं पूर्व प्रशासनिक अधिकारी निशा बांगरे कांग्रेस में शामिल होंगी। मध्य प्रदेश कांग्रेस प्रभारी रणदीप सिंह सुरजेवाला ने भोपाल में मीडिया से बातचीत में यह जानकारी दी।

एसडीएम पद से इस्तीफा देकर चर्चा में आईं पूर्व प्रशासनिक अधिकारी निशा बांगरे ने कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री कमल नाथ से मुलाकात की है। पूर्व मुख्यमंत्री के शिकारपुर स्थित निवास पर नाथ ने गत दिवस निशा बांगरे से कुछ देर चर्चा की। माना जा रहा है कि निशा ने आमला से अपने टिकट को लेकर कमल नाथ से चर्चा की है, लेकिन टिकट मिलेगा या नहीं, इस बारे में उन्होंने कुछ नहीं कहा।

सांध्यप्रकाश विशेष

एससीओ की बैठक में शामिल हुए जयशंकर, बोले- संगठन में शामिल देशों का और करीब आना जरूरी

बिश्केक । विदेश मंत्री एस जयशंकर गुरुवार को किर्गिस्तान के बिश्केक में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की सरकार प्रमुखों की

बैठक में हिस्सा लिया है। यहां उन्होंने एससीओ में शामिल देशों को और करीब आने का संदेश देते हुए कहा कि आज पूरी दुनिया जिस तरह आर्थिक मंदी, टूटी हुई सप्लाई चेन, खाद्य और ऊर्जा असुरक्षा की समस्या से जूझ रही है। ऐसे समय में एससीओ के सहयोगी देशों को साथ आना होगा। इस लिहाज से मध्य एशियाई देशों की अहमियत आज और बढ़ जाती है।

जयशंकर ने कहा, ÷भारत एससीओ के साथी देशों के साझा तौर पर फायदेमंद और आर्थिक तौर पर व्यवहार्य चीजों पर कार्य करना चाहता है। हम क्षेत्र में ही व्यापार को बेहतर करना चाहते हैं, जिसके लिए हमें अच्छी कनेक्टिविटी और इन्फ्रास्ट्रक्चर की जरूरत है। भारत ने इन चीजों को अपनी विकास यात्रा में अहमियत दी है। साथ ही कनेक्टिविटी बढ़ाने के दौरान दूसरों की क्षेत्रीय अखंडता और स्वायत्ता का भी सम्मान किया गया है।

पीएफसी को जापान की जेबीआईसी से 165 करोड़ रुपये का ऋण मिलेगा

पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने बिजली मंत्रालय के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किए

नई दिल्ली। पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड (पीएफसी) ने डीपीई के प्रदर्शन मूल्यांकन प्रणाली के अनुसार 23 अक्टूबर को वित्त वर्ष 2023-24 और वित्त वर्ष 2024-25 के लिए बिजली मंत्रालय (एमओपी) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए।

विद्युत मंत्रालय के सचिव पंकज अग्रवाल और पीएफसी के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक (सीएमडी) परमिंदर चोपड़ा ने विद्युत मंत्रालय और पीएफसी के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। डीपीई की एमओयू प्रदर्शन मूल्यांकन प्रणाली का उपयोग विभिन्न वित्तीय और परिचालन मापदंडों पर सीपीएसई के लिए वार्षिक लक्ष्य निर्धारित करने के लिए किया जाता है, और सीपीएसई के समग्र प्रदर्शन को ऐसे एमओयू लक्ष्यों के विरुद्ध मूल्यांकित किया जाता है। पीएफसी को पिछले दो वर्षों (यानी वित्त वर्ष 2020-21 और वित्त वर्ष 2021-22) के दौरान उत्कृष्ट की उच्चतम रेटिंग से सम्मानित किया गया है, और वित्त वर्ष 2022-23 के लिए रेटिंग जल्द ही जारी होने की उम्मीद है।

पीएफसी एक महारत्न पीएसयू है और समेकित आधार पर भारत में सबसे बड़ा एनबीएफसी है। सबसे बड़े नवीकरणीय ऋण पोर्टफोलियो के साथ, पीएफसी भारत के ऊर्जा परिवर्तन का भी नेतृत्व करता है। इसके अतिरिक्त, पीएफसी ने बुनियादी ढांचे और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में परियोजनाओं को वित्त पोषित करना भी शुरू कर दिया है।

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के घर ईडी का छापा

पेपर लीक केस में डोटासरा से पूछताछ जारी, गहलोत के बेटे वैभव को भी समन

जयपुर। राजस्थान में विधानसभा चुनावों से पहले ईडी के छापों ने सियासी तूफान ला दिया है। प्रवर्तन निदेशालय ने गुरुवार सुबह प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा के ठिकानों पर छापे मारे हैं। पेपर लीक प्रकरण में ईडी की टीम ने डोटासरा के सिविल लाइंस स्थित सरकारी आवास पर दबिश दी। एक टीम उनके निजी आवास सीकर भी पहुंची। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के बेटे वैभव गहलोत को भी समन जारी किया गया है। खुद मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने ट्वीट कर यह जानकारी दी। वैभव पर फेमा कानून के उल्लंघन का आरोप है। उनसे इस पर ही पूछताछ होगी।

हाल ही में कांग्रेस की सदस्यता ले चुके निर्दलीय विधायक ओम प्रकाश हुडला पर भी ईडी का एक्शन हुआ है। हुडला को कांग्रेस ने महुआ से अपना प्रत्याशी बनाया है। डोटासरा के सीकर और जयपुर आवास पर छापे मारे हैं। ईडी ने कुल 12 स्थानों पर कार्रवाई की है। जयपुर में तीन और सीकर में दो ठिकाने शामिल हैं।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने सोशल मीडिया पर लिखा कि 25 अक्टूबर को कांग्रेस ने महिलाओं के लिए गारंटी लॉन्च की। वहीं, 26 अक्टूबर को राजस्थान कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा के यहां ईडी की रेड हुई। मेरे बेटे वैभव को हाजिर होने का समन मिला है। अब आप समझ सकते हैं कि जो मैं कहता आ रहा हूं कि राजस्थान के अंदर ईडी की रेड रोज इसलिए होती है क्योंकि भाजपा ये नहीं चाहती कि राजस्थान में महिलाओं को, किसानों को, कांग्रेस द्वारा दी जा रही गारंटियों का लाभ मिल सके। दोपहर को गहलोत ने प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाई है। इसमें ईडी के छापों को लेकर वह बयान दे सकते हैं।

कांग्रेस में आने के बाद से आए हुडला निशाने पर

कांग्रेस में शामिल होने के बाद ही हुडला भी ईडी के निशाने पर आए हैं। पेपर लीक मामले को भाजपा सांसद किरोड़ीलाल लगातार उठा रहे हैं। हुडला और किरोड़ी को एक-दूसरे का धुर विरोधी माना जाता है। टीम का छापा पडने की भनक लगते ही और हुडला मौके से फरार हो गए। हुडला की फरारी को लेकर कई तरह के कयास लगाए जा रहे हैं।

खरगे ने भी उठाए कार्रवाई पर सवाल

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भी ईडी की कार्रवाई पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि चुनाव आते ही ईडी, सीबीआई, आईटी आदि भाजपा के असली पन्ना प्रमुख बन जाते हैं। राजस्थान में अपनी निश्चित हार को देखते हुए भारतीय जनता पार्टी ने चला अपना आखिरी दांव ! ईडी ने छत्तीसगढ़ के बाद राजस्थान में भी विधानसभा चुनाव अभियान में उतरते हुए कांग्रेसी नेताओं के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी है। मोदी सरकार की तानाशाही लोकतंत्र के लिए घातक है। हम एजेंसियों के दुरुपयोग के खिलाफ लड़ते रहेंगे। जनता भाजपा को करारा जवाब देगी।

मुख्यमंत्री ने बोला झूठ, बिजली बिलों की जारी है लूट: सुरजेवाला

भोपाल। कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी रणदीप सुरजेवाला ने दावा किया है कि प्रदेश के मुख्यमंत्री झूठ बोल रहे हैं। प्रदेश में बिजली के बिल आज भी ज्यादा आ रहे हैं। जनता के साथ बिजली बिलों की लूट जारी है। सुरजेवाला आज पीसीसी में संवाददाताओं से चर्चा कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि मप्र के मुख्यमंत्री ने अगस्त माह में बुंदेलखंड के नौगांव में एक कार्यक्रम में जनता से कहा कि ''मुझे बताया गया है कि बिजली के बिल बहुत ज्यादा आ रहे हैं'', और जनता से पूछा तो जनता ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि हाँ बहुत ज्यादा आ रहे हैं। तब शिवराज ने मंच से घोषणा की, कि 'मैं गरीब जनता के जिनके कनेक्शन एक किलोवॉट तक के हैं, उनके बिजली के बिल छोड़ता हूँ और समीक्षा करके बढ़े हुए बिल मैं भरूंगा' अर्थात शिवराज सरकार भरेगी।

सीएम की इस घोषणा के बाद मप्र शासन के ऊर्जा विभाग ने 01 सितम्बर, 2023 को एक आदेश जारी दिया। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के अधीन 21 जिलों के 38 डिवीजन के डेटा का जब अध्ययन किया तो यह पाया कि 3,85,953 उपभोक्ताओं को बगैर सूचित किये उनके भार की वृद्धि कर 2 किलोवॉट कर दिया गया। इन सभी 3,85,953 उपभोक्ताओं के ओरिज़नल लोड व बढ़े हुए लोड की प्रतिलिपि कांग्रेस के पास है।

चौंकाने वाले तथ्य सामने आये हैं कि न तो उपभोक्ता ने आवेदन किया, न पंजीकरण शुल्क जमा किया गया, न ही विद्युत विभाग द्वारा मौका मुआयना किया गया और फर्जी तरीके से शिवराज सरकार ने लाखों उपभोक्ताओं के विद्युत कनेक्शन की भार वृद्धि कर दी।

सुरजेवाला ने कहा- अब कांग्रेस ने वचन दिया है कि 100 यूनिट तक खपत करने वाले प्रदेश के बिजली उपभोक्ताओं को बिजली का कोई बिल नहीं चुकाना होगा, साथ ही 200 यूनिट तक के उपभोक्ताओं का बिजली बिल हाफ हो जायेगा तथा 05 हॉर्स पॉवर तक की मोटर उपयोग करने वाले किसानों को बिजली का कोई बिल नहीं देना होगा।

संघ परिवार के हाथ में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा की कमान, ट्रस्ट को हर कदम पर मिलेगा विहिप का सहयोग

अयोध्या। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के गर्भगृह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 22 जनवरी को रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करेंगे। मंदिर निर्माण समिति के महामंत्री चंपत राय ने पीएम से नई दिल्ली में बुधवार को मुलाकात करने के बाद यह जानकारी दी। इस बारे में मोदी ने कहा कि वह खुद को धन्य महसूस कर रहे हैं।

एक्स पर लिखा, जय सियाराम। आज का दिन बहुत भावनाओं से भरा हुआ है। अभी श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के पदाधिकारी मुझसे मिलने मेरे निवास पर आए थे। उन्होंने मुझे श्रीराम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर अयोध्या आने के लिए निमंत्रित किया है। यह मेरा सौभाग्य है कि अपने जीवनकाल में मैं इस ऐतिहासिक अवसर का साक्षी बनूंगा। पीएम को निमंत्रण देने चंपत राय के साथ मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्र, श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र के ट्रस्टी तेजावर मठ के जगद्गुरु माधवाचार्य और ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष गोविंददेव गिरिजी महाराज दिल्ली पहुंचे थे।

संघ परिवार के हाथ में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा की कमान- वहीं, रामजन्मभूमि के नवनिर्मित भव्य मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह की कमान राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ परिवार के हाथों में होगी। श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को हर कदम पर विश्व हिंदू परिषद के शीर्ष नेतृत्व का भी सहयोग मिलेगा।

ग्वालियर आ रही पातालकोट एक्सप्रेस की दो बोगियां जलीं, यात्रियों में भगदड़

ग्वालियर। आगरा झांसी रेलवे ट्रैक स्थित भांडई रेलवे स्टेशन के नजदीक बुधवार दोपहर करीब 3.30 बजे गाड़ी नंबर 14624 पातालकोट एक्सप्रेस की दो जनरल बोगियों में अचानक आग लग गई। एक्सप्रेस फिरोजपुर पंजाब से छिंदवाड़ा होकर सिवनी जा रही थी। इसी बीच ट्रेन की दो बगियां जलकर खाक हो गईं। इस हादसे में करीब 20 लोग झुलस गए हैं और कुछ लोग भगदड़ में घायल हो गए। इस

हादसे के बाद यात्रियों में दहशत थी। ट्रेन में जो कुछ हुआ वो मंजर देख उनके पैर कांप रहे थे। ट्रेन में सफर कर रहा हाथरस निवासी मुकेश राजपूत ने बताया कि वह बोगी में बैठकर मोबाइल देख रहा था। मेरे साथ भाई मनवीर सिंह और कृष्णकांत राजपूत भी साथ था। हम तीनों मथुरा से इटारसी जा रहे थे। इसी बीच तेज आवाज के साथ धमाका हुआ। देखा तो बोगी में आग लग गई है। ये देख सभी घबरा गए। समय रहते ट्रेन रुक गई, जिससे नीचे उतर आए नहीं तो एक भी नहीं बचता। ट्रेन के यात्री एकांश राठौर ने बताया कि धुआं और फिर आग की लपटें देखी।

दो राज्यों में 3 सड़क हादसे, 22 लोगों की मौत

महाराष्ट्र में बस 150 फीट गहरी खाई में गिरी, कर्नाटक में बेंगलुरु-हैदराबाद हाईवे पर एक्सीडेंट

बेंगलुरु। महाराष्ट्र और कर्नाटक में बुधवार रात से गुरुवार सुबह के बीच तीन अलग-अलग सड़क हादसों में 22 लोगों की मौत हो गई। इनमें दो घटनाएं महाराष्ट्र के बीड जिले की है। एक्सीडेंट में दर्जनों लोग घायल हुए हैं। सभी को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

पहली घटना कर्नाटक के चिक्काबल्लापुर की है। यहां बेंगलुरु-हैदराबाद हाईवे पर एक कार और ट्रक की टक्कर में 12 लोगों की मौत हो गई। एक की हालत गंभीर है। सभी लोग बागेपल्ली से चिक्कबल्लापुर की ओर जा रहे थे। चिक्काबल्लापुर के एसपी डीएल नागेश ने बताया कि दुर्घटना के सटीक कारण की जांच की जा रही है। हालांकि, प्रारंभिक जांच से पता चला कि कोहरे के कारण

विजिबिलिटी कम थी। इससे कार और ट्रक के बीच टक्कर हो गई। यह हादसा ह॥ 44 पर बागेपल्ली ट्रैफिक थाना के पास हुआ।

दूसरी तरफ महाराष्ट्र के बीड जिले में गुरुवार सुबह 4 बजे मुंबई से आ रही एक बस सड़क से 150 फीट नीचे खाई में गिर गई। इसमें छह लोगों की मौत हो गई। बस में करीब 40-50 यात्री सवार थे। बीड जिले में दूसरी घटना अहमदनगर रोड पर हुई। यहां एक एम्बुलेंस ने ट्रक में पीछे से टक्कर मार दी। इसमें एम्बुलेंस पर सवार 4 लोगों की मौत हो गई। यह हादसा बुधवार की रात 9.30 बजे हुआ।

बस हादसे को लेकर बताया जा रहा है कि सागर ट्रैवल्स कंपनी की एक बस मुंबई से बीड जा रही थी। आष्टा हरिनारायण पर टर्न लेने के दौरान बस ड्राइवर का नियंत्रण बिगड़ गया। इससे बस सड़क से नीचे गहरी खाई में गिर गई। घायलों का आष्टी और जामखेड में इलाज चल रहा है। गंभीर रूप से घायल यात्रियों को अहमदनगर रेफर किया गया है।

हार्दिक के टखने में सूजन, फिट होने में लगेंगे दो हफ्ते, तीन मैचों से हो सकते हैं बाहर

नई दिल्ली। भारतीय टीम ने विश्व कप के मौजूद संस्करण में अब तक शानदार प्रदर्शन किया है। उसने पांच में से पांच मैच जीते हैं। टीम इंडिया अंक

तालिका में पहले स्थान पर हैं। उसे अपना अगला मुकाबला रविवार (29 अक्तूबर) को इंग्लैंड के खिलाफ खेलना है। उसके बाद टीम दो नवंबर को श्रीलंका और पांच नवंबर को दक्षिण अफ्रीका से खेलेगी। भारत के लिए चिंता की बात यह है कि ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या अब तक फिट नहीं हो पाए हैं और उनका अगले कई मैचों में खेलना संदिग्ध है। हार्दिक पांड्या 19 अक्तूबर को पुणे में बांग्लादेश के खिलाफ खेलते हुए बॉलिंग में गेंद के फॉलोअप में फिसल गए थे और 22 अक्तूबर को धर्मशाला में न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच में नहीं खेल पाए थे। बड़ौदा के इस खिलाड़ी ने चोट के प्रबंधन के लिए सोमवार को बंगलूरू में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) को रिपोर्ट किया था।

फार्म हाउस के मालिक बनें
मात्र 51000/- की बुकिंग राशि में
हमारे पूर्ण विकसित प्रोजेक्ट
DREAMLAND FARM
कोलार रोड़ में बुक करें और तुरंत पजेशन प्राप्त करें।
ऑफर मात्र नवरात्रि तक
सम्पर्क -7470487994

डिजिटल साक्षरता और साइबर सुरक्षा को लेकर किशोरी मेले का आयोजन

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

बालिकाओं के सशक्तिकरण के उद्देश्य से शुरू किए गए जीईपी अभियान 2023 के तहत, 11 अक्टूबर से 20 अक्टूबर के दौरान मध्य प्रदेश के भोपाल में किशोरी मेले का आयोजन किया गया। परियोजना से जुड़े 6 स्कूलों में आयोजित इस कार्यक्रम में कुल 2200 छात्र प्रतिभागियों और 140 शिक्षक प्रतिभागियों के साथ बच्चों और अभिभावकों, समुदाय के सदस्यों, शिक्षकों और टीम के सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इंटरनेट की सहज उपलब्धता और उपयोग के बारे में नए दृष्टिकोण के साथ लोगों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से किशोरी मेले का आयोजन किया गया, जिसमें साइबर सुरक्षा के साथ-साथ बेहतर एवं लैंगिक रूप से उत्तरदायी ऑनलाइन अनुभवों को बढ़ावा देने में पेशेवरों तथा अभिभावकों की महत्वपूर्ण भूमिकाओं पर बोल दिया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य किशोर बालिकाओं के लिए टेक्नोलॉजी की बदलाव लाने वाली शक्ति के बारे में जानकारी प्रदान करना भी था।

वर्तमान में जारी जीईपी अभियान 2023 के तहत भोपाल में हाल ही में आयोजित किशोरी मेला एक महत्वपूर्ण अवसर था, जिसने डिजिटल भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए सम्मिलित रूप से सभी के प्रयासों को प्रदर्शित किया। इस कार्यक्रम में बोल बहना समिति का गठन किया गया, जो स्कूलों की प्रोफाइलिंग करने, साइबर सुरक्षा के विषय पर चर्चाओं का नेतृत्व करने और विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करने के लिए प्रतिबद्ध एक समूह है। बोल बहना समिति उसकी अगवाई में आयोजित सुबह की सभा में साइबर सुरक्षा पर प्रतिज्ञा की गूंज सुनाई दी, जिसने शिक्षकों और छात्रों को एक साझा विचार के लिए संकल्प लेने के उद्देश्य से एकजुट किया। बालिकाएं इस जागरूकता अभियान की सच्ची वास्तुकार हैं, जिन्होंने साइबर सुरक्षा और डिजिटल अधिकारों के विषय पर एक कठपुतली शो तैयार किया और उसका प्रदर्शन किया, जिसे सभी को सोचने पर मजबूर कर दिया। इंटरएक्टिव लर्निंग की सोच के साथ, डिजिटल सुरक्षा- की थीम पर आधारित सांप और सीढ़ी गेम ने शिक्षकों और लड़कियों ने भाग लिया, जो उचित जानकारी के बिना डिजिटल क्षेत्र में नेविगेट करने के संभावित खतरों पर जोर देता है। साइबर सुरक्षा के विषय पर फिल्म की स्क्रीनिंग और उसके बाद गहन चर्चाओं ने सुरक्षित ऑनलाइन अभ्यास की अहमियत को सिनेमाई नजरिये से पेश किया। पुलिस विभाग की सक्रिय भागीदारी से इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका जुड़ गई, जिसमें अधिकारियों ने लड़कियों को अपना निशाना बनाने वाले प्रचलित साइबर अपराधों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी साझा की और ऑनलाइन सुरक्षित रहने के बारे में सही राह दिखाई। इस आयोजन में बड़ी संख्या में बालिकाओं की रचनात्मक अभिव्यक्ति भी दिखाई दी, जिसके तहत बालिकाओं ने पोस्टर-निर्माण गतिविधियों के माध्यम से अपनी कलात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया, और उन्होंने साइबर सुरक्षा के विषय पर केंद्रित सामग्री तैयार की।

इस मौके पर रूम टू रीड की कंट्री डायरेक्टर, सुश्री पूर्णिमा गर्ग ने कहा, किशोरों के लिए डिजिटल भविष्य को सुरक्षित बनाने की दिशा में जीईपी अभियान 2023 और किशोरी मेले जैसे आयोजनों की अहमियत काफी अधिक है। छात्र, शिक्षक, अभिभावक और समुदाय एकजुट होकर जीईपी अभियान के मिशन को आगे बढ़ा रहे हैं, और हम डिजिटल साक्षरता एवं साइबर सुरक्षा को बढ़ावा देने की दिशा में लगातार प्रगति कर रहे हैं।

भोपाल। सी सेक्टर शाहपुरा में नवरात्रि पर्व के उपलक्ष्य में गरबे का आयोजन किया गया। जिसमें कई महिलाओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।

प्राकृतिक चिकित्सा का दस दिवसीय आवासीय शिविर का हुआ शुभारंभ

संत हिरदाराम नगर। आरोग्य केन्द्र द्वारा आयोजित रोग निवारण एवं प्रशिक्षण मासिक शिविर श्रंखला के अंतर्गत दस दिवसीय शिविर का शुभारंभ बुधवार को किया गया। इस शिविर में विभिन्न स्थानों से कई साधकगण अपक्काहार एवं प्राकृतिक उपचार के साथ-साथ योगा, आयुर्वेदिक उपचार, फिजियोथैरेपी, एक्यूप्रेशर, एक्यूपंक्चर, शिरोधारा, पोटली मसाज आदि से भी लाभान्वित होने की उम्मीद से आए हैं। इस शिविर में शिविरार्थियों को प्राकृतिक उपचार, योग, उपवास एवं अपक्व आहार, रसाहार, फलाहार के माध्यम से स्वस्थ रहने की कला सिखाई जाएगी। शिविर के प्रथम दिन सुबह 7 बजे से शिविर में आए शिविरार्थियों का सर्वप्रथम पंजीयन एवं परामर्श प्राकृतिक चिकित्सकों द्वारा किया गया एवं इसके बाद शिविर का शुभारंभ व्याख्यान मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. गुलाब राय टेवानी द्वारा शाम 4 से 5 तक दिया गया।

डॉ गुलाब राय टेवानी ने शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए बताया कि इस शिविर का उद्देश्य प्राकृतिक चिकित्सा से संपूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करना है। इस दस दिवसीय शिविर में आप अपने शरीर का शुद्विकरण कैसे करें वो सीखेगें। शरीर का शुद्विकरण होना बहुत ही आवश्यक हैं। इस शिविर में आप दिनचर्या व उपवास की कला सीखेंगें जिससे आप सुखमय व स्वास्थ्यमय जीवन पा सकें। स्वस्थ जीवन प्राप्त करने के लिए एक ही उपाय है, अपनी अस्वस्थ दिनचर्या में परिवर्तन कर स्वस्थ दिनचर्या को अपनाना होगा। आप अपनी दिनचर्या में परिवर्तन करेंगे तो ही आप स्वास्थ्य लाभ पा सकेंगे। हमारा आहार ही हमारी औषधि हैं, इसलिए आहार ऐसा हो जो सुपाच्य, स्वादिष्ट, पौष्टिक व स्वास्थ्यवर्धक हो। पक्व आहार से जीवित तो रह सकते है, लेकिन स्वस्थ नहीं हो सकते हैं।

राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक मंच की सरस काव्य गोष्ठी संपन्न

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

अखिल भारतीय वरिष्ठ नागरिक मंच की काव्य गोष्ठी मध्यप्रदेश इकाई की अध्यक्ष जया आर्या की अध्यक्षता, अमेरिका से पधारे डॉक्टर शिववरन रघुवंशी के मुख्य आतिथ्य, गोकुल सोनी के सारस्वत आतिथ्य और वरिष्ठ लेखक सुरेश पटवा की विशिष्ट उपस्थिति में वनवासी कल्याण परिषद हॉल में संपन्न हुई। जया आर्या ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में मंच का संक्षिप्त परिचय दिया और मन की प्यास बुझा दो कविता का पाठ किया।

पेशे से वैज्ञानिक डॉक्टर शिववरन रघुवंशी ने मुख्य अतिथि के रूप में सभी रचनाकारों का उत्साह वर्धन करते हुए बारिश की बूँदों कविता को सराहते हुए कहा कि यह कविता मन में गहरी उतर जाती है। उन्होंने देश की वर्तमान स्थिति पर रचना सुनाई। गोकुल सोनी ने सारस्वत अतिथि की आसंदी से संबोधित करते हुए कहा कि रचनाकार को लोकहित में पंथ और विचारधारा निरपेक्ष होना चाहिए।

काव्य गोष्ठी में विशिष्ट रूप से उपस्थित वरिष्ठ लेखक सुरेश पटवा ने उपस्थित रचनाकारों को संबोधित करते हुए कहा कि संगीत आत्मा को मुदित करता है, गद्य मानसिक अभिव्यक्ति है तो पुलकित हृदय से निसृत काव्य हृदय को झंकृत करता है। कार्यक्रम का आरम्भ अतिथियों के स्वागत उद्बोधन और पुष्पहार द्वारा अभिनंदन से हुआ। श्यामा गुप्ता ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। जया आर्या ने स्वागत उद्बोधन में अतिथियों की खूबियों से रचनाकारों को परिचित कराया। गोष्ठी के संयोजक वीरेंद्र कुमार श्रीवास्तव ने उत्तम व्यवस्था में कोई कोताही नहीं बरती। कविता सिरोले ने ना सिर्फ़ गोष्ठी का सफल और सरस संचालन किया बल्कि हमारी आस्थाएँ पतन की पताका फहरा रही हैंकविता सुनकर विभोर कर दिया।

गोष्ठी में नगर के वरिष्ठ रचनाकारों ने रचनाएँ प्रस्तुत कीं। शिवांश सरल ने द्वन्द युद्ध उठता अकुलाता सदा नारी मन में, सुनीता केशवानी ने बारिश की बूँदों ने लिखी कविता खिड़की के शीशों पर, बिहारी लाल सोनी 'अनुज' ने सोये भाव जगा सकती है, अम्बर में आग लगा सकती है, सरोज लता ने हम तो पुतले फूंक रहे हैं ज़िंदा रावण घूम रहे हैं, ऊषा चतुर्वेदी ने पाँच साल में आता है प्रजातंत्र का पर्व, श्यामा देवी गुप्ता ने चल पड़ी चुनावी हवा, करुणा दयाल ने एक दिन बोला चाँद सूर्य से, वीरेंद्र श्रीवास्तव ने मैं आश्चर्यचकित था अंधेरा उजाले के गले में हाथ डाले घूम रहा था, मृदुल त्यागी ने ईश्वर की संतान है।

डेंगू लार्वा पाए जाने पर 4200 रुपए का स्पॉट फाईन वसूला

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

नगर निगम द्वारा डेंगू मलेरिया जैसी बीमारियों की रोकथाम एवं उनसे बचाव हेतु नागरिकों में जागरूकता उत्पन्न करने हेतु कार्यवाही निरंतर की जा रही है। उक्त कार्यवाही के तहत नगर निगम एवं स्वास्थ्य विभाग का अमला निरंतर घर-घर जाकर डेंगू लार्वा की जांच कर रहा है। इसी तारतम्य में वार्ड क्र. 63 के अंतर्गत रत्नागिरी, इन्द्रपुरी आदि क्षेत्रों में 06 घरों में डेंगू लार्वा पाए जाने पर निगम के अमले ने 06 प्रकरणों में 04 हजार 200 रुपये स्पॉट फाईन के रूप में वसूल किए और डेंगू जैसी बीमारियों के बचाव हेतु उपाय करने की समझाइश भी दी।

निगम आयुक्त श्री प्रेंक नोबल ए के निर्देश पर निगम के स्वास्थ्य विभाग के अमले ने जिला मलेरिया विभाग के अमले के साथ संयुक्त रूप से जोन क्र. 15 के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में डेंगू लार्वा की जांच की और रत्नागिरी एवं सोनागिरी सी-सेक्टर क्षेत्र में 06 घरों में डेंगू लार्वा पाया गया जिस पर निगम अमले ने 06 प्रकरणों में 04 हजार 200 रुपये की राशि स्पॉट फाईन के रूप में वसूली।

नगर निगम एवं मलेरिया विभाग के संयुक्त दलों द्वारा शहर के विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिदिन घर-घर जाकर डेंगू/मलेरिया की जांच की जा रही है। जांच दलों द्वारा पानी की टंकियों, जल भंडारण के अन्य पात्रों, कूलर, गमले, पुराने टायर व अन्य ऐसी वस्तुए जिनमें पानी जमा रहता है की सूक्ष्मता से जांच की जा रही है। जांच के दौरान डेंगू लार्वा पाया जाने पर उसे नष्ट करने की कार्यवाही की जा रही है साथ ही संबंधितों के विरूद्ध स्पॉट फाईन की कार्यवाही भी की जा रही है। जांच दलों द्वारा नागरिकों की समझाइश दी जा रही है कि वह पानी के बर्तनों को नियमित रूप से साफकरते रहे और उनका पानी बदलते रहे। गमलों, अनुपयोगी बर्तनों पुरानी टायरों आदि वस्तुओं में पानी जमा न होने दें और नियमित रूप से इनकी साफ-सफाई करते रहने की समझाइश भी दी जा रही है। नगर निगम द्वारा बीमारियों से रोकथाम हेतु नियमित साफ-सफाई के साथ ही ऐसे क्षेत्र जहां बीमारियां फैलने की संभावना है वहां विशेष साफ-सफाई एवं कीटनाशक रसायनों का छिड़काव आदि भी किया जा रहा है।

आईआईएसईआर के शोधकर्ताओं ने बायोमेडिकल पदार्थ को किया विकसित

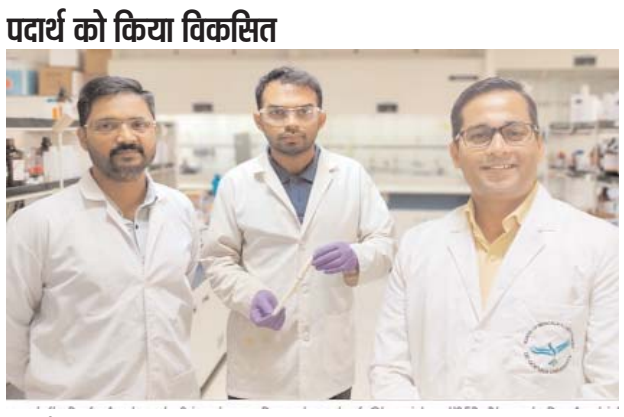

भोपाल। भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान भोपाल (आईआईएसईआर) के शोधकर्ताओं ने एक पारदर्शी सिंथेटिक और चिपक ने वाला बायोमेडिकल पदार्थ विकसित किया है जो घायल अंगों और विच्छेदित ऊतकों को प्रभावी ढंग से सील और ठीक कर सकता है।यह चिपक ने वाला पदार्थ जो कि बायोडिग्रेडेबल और बायोकंपैटिबल है, हवा और पानी दोनों ही परिस्थितियों में ऊतकों, हड्डियों, अंडे के छिलके और लकड़ी जैसी विभिन्न सतहों को जोडने में सक्षम है और इसके लिए इसको किसी अतिरिक्त क्रॉसलिंकिंग एजेंट या धातु आयन की आवश्यकता नहीं होती है। इस तरह के बायोडिग्रेडेबल और बायोकम्पैटिबल आसंजक पदार्थों का उपयोग चिकित्सा, दंत चिकित्सा, दवा वितरण और ऊतक इंजीनियरिंग में किया जाता है । इन आसंजक पदार्थों का उपयोग हड्डी को जोडने के लिए आर्थोपेडिक प्रक्रियाओं में भी किया जाता है और घाव से रिसाव को बंद करने में टांके, स्टेपल और तारों के विकल्प के रूप में भी इसका प्रयोग किया जा सकता है। इस शोध का नेतृत्व आईआईएसईआर भोपाल के रसायन विज्ञान विभाग के फैकल्टी प्रोफेसर आशीष श्रीवास्तव, द्वारा किया गया है वहीं इस शोध में जीडी गोयनका विश्वविद्यालय हरियाणा के स्कूल ऑफ मेडिकल एंड अलाइड साइंसेज के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. आशीष शर्मा और आईआईएसईआर भोपाल के पोस्टडॉक्टोरल शोधकर्ता डॉ. तन्मय दत्ता का विशेष सहयोग रहा है ।

डबल इंजन की सरकार से ही मप्र विकसित प्रदेश बनेगा: कृष्णा

गोविंदपुरा विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी का सघन जनसंपर्क जारी

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

भारतीय जनता पार्टी की गोविंदपुरा विधानसभा की भाजपा प्रत्याशी एवं विधायक कृष्णा गौर का सघन जनसंपर्क जारी है, जिसके अंतर्गत आज विधानसभा क्षेत्र 154 गोविन्दपुर में वार्ड क्रमांक 52 के ग्राम बावड़ियां कलां से जनमिलन कार्यक्रम रहवासियों के उत्साह और अपार आत्मीयता के साथ आरंभ हुआ। इस दौरान उन्होनें पंचायत भवन बावडिया,नर्मदा नगर, ओम नगर, न्यु फ्रेन्डस कॉलोनी, सोमित्र विहार पल्लवी नगर आदि में स्वजनों से संवाद किया। विधानसभा में निरंतर जनसंपर्क करते हुए भाजपा प्रत्याशी कृष्णा गौर ग्रामीण एवं शहरीय क्षेत्र में सक्रिय रूप से मिलकर जनता से रूबरू हो रही है, कृष्णा गौर डोर टू डोर जनसंपर्क करते हुए जनसमर्थन मांग रही है।

जनमिलन के दौरान कृष्णा गौर नें कहा कि गोविंदपुरा विधानसभा 2023 में भारतीय जनता पार्टी का फिर से परचम लहराएगा और भाजपा के हाथों को मजबूत करने का काम किया जाएगा क्योंकि जनता मन बना चुकी है कि दोबारा 2023 में एक बार फिर मप्र में भाजपा की सरकार बनाना है। विभिन्न स्थानों पर आयोजित चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए भाजपा प्रत्याशी एवं विधायक ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार गरीबों की सरकार, युवाओं और दीन दुखी सर्वहारा वर्ग की सरकार है।

आज मध्य प्रदेश प्रगति के पथ पर नई उड़ान उड़ने को तैयार है। आप सभी के एक-एक वोट से मप्र में भाजपा तथा विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों को मजबूत करें। डबल इंजन की सरकार से ही मध्य प्रदेश विकसित प्रदेश बनेगा।

कृष्णा गौर ने कहा कि डबल इंजन की सरकार जरूरी है, क्योंकि 15 महीने की एक्सीडेंटल कांग्रेस की कमलनाथ सरकार जब आई थी तो 3 लाख प्रधानमंत्री आवास लौटा दिए थे। गरीबों की जल कल्याणकारी सभी योजनाओं को बंद कर दिया था। कन्या विवाह बंद कर दिया था। मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना बंद कर दी थी। इसलिए यह सभी योजनाएं चलती रहे और प्रदेश की जनता सुखी और समृद्धिशाली हो, इसलिए भारतीय जनता पार्टी के कमल चुनाव चिन्ह पर स्वयं मतदान करें औरों को भी इस कार्य के लिए प्रेरित करें।

इन स्थानों पर हुआ जनमिलन कार्यक्रम

बुधवार को भाजपा प्रत्याशी कृष्णा गौर नें वार्ड क्रं 52 के अंतर्गत आने वाले पंचायत भवन बावडिया,नर्मदा नगर, ओम नगर, न्यु फ्रेन्डस कॉलोनी, सोमित्र विहार पल्लवी नगर, आम नगर, खनुजा इन्क्लेव, डि.के. कॉटेज, अधिष्टान, इंण्डस गार्डन, सहयोग विहार, ष्ट।ढ्ढक्कु, फार्चून गिलोरी, तिलक नगर मार्केट, रोहित नगर फेस 1 पार्क, ऋषि नगर, इंण्डस चौराहा, एम्पल हाईट्स, हेम कॉलोनी, बंसत विहार, आई.बी.डी. हाई राईस, रोहित नगर फेस 2, आकृति रिट्रीट, सात आम चौराहा आई.बी.डी., रॉयल मिसरोद, आकृति नीव में जनमिलन कार्यक्रम किया।

बहनों के सम्मान को कांग्रेस वाले कहते हैं नौटंकी : शिवराज सिंह

नरसिंहपुर में मुख्यमंत्री चौहान और केंद्रीय मंत्री प्रहलाद पटेल ने चुनावी सभा को किया संबोधित

नरसिंहपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशियों को रिकॉर्ड मतों से जिताएं और भाजपा को विकास के नये रिकॉर्ड कायम करने का अवसर दें। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा ही है, जो भारत के नए विकास की इबारत लिख सकते हैं। यह बात मुख्यमंत्री शवराज सिंह चौहान ने नरसिंहपुर में जनसभा को संबोधित करते हुए कही। चौहान नरसिंहपुर में केन्द्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग एवं जलशक्ति मंत्री प्रहलाद पटेल के नामांकन भरने के पूर्व आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने जनता को संकल्प दिलाया कि वे भाजपा को वोट दें। कार्यक्रम में केन्द्रीय मंत्री एवं नरसिंहपुर से प्रत्याशी प्रहलाद पटेल, गोटेगांव से महेंद्र नागेश, तेंदूखेड़ा से विश्वनाथ सिंह (मुलायम भैया) एवं गाडरवारा से उदय प्रताप सिंह सहित पार्टी के कार्यकर्ता व पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

चौहान ने कहा कि कांग्रेस जब-जब सत्ता में आई उसने योजनाएं बंद करने का काम किया है। उन्होंने कहा कि 15 महीने की सरकार में ही कमलनाथ ने महिलाओं, बेटियों और बुजुर्गों को मिलने वाली आर्थिक मदद बंद कर दी थी। जिससे जनता को बहुत परेशानियां हुईं। यदि यह दोबारा आए तो फिर यही करेंगे। उन्होंने कहा कि बहनों के सम्मान को कमलनाथ और दिग्विजय सिंह ने नौटंकी कहा, इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि कांग्रेस के नेताओं की मानसिकता क्या है और वे वास्तव में क्या सोचते हैं। श्री चौहान ने कहा कि लाड़ली बहना योजना ने महिलाओं के सम्मान की रक्षा की और ये योजना आगे भी जारी रहेगी।

केन्द्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग एवं जलशक्ति मंत्री एवं पार्टी प्रत्याशी श्री प्रहलाद पटेल ने कहा कि नरसिंहपुर से हमारे अपनों के संघर्ष और त्याग का परिणाम हैं कि आज हम देश और समाज की सेवा करने की स्थिति में हैं। उन्होंने कहा कि इस संघर्ष को हम व्यर्थ नहीं जाने देंगे। नरसिंहपुर की माटी का प्रताप है कि यहां के लोग कभी लालच में आकर वोट नहीं करते। उन्होंने कहा कि मेरे अनुज जालम सिंह को साधुवाद कि उन्होंने जिद ठानकर मेरे लिये नरसिंहपुर की सीट छोड़ दी। राजनीति में ऐसे उदाहरण कम ही हैं। उन्होंने कहा चुनाव का अवसर है इसलिए हम वोट मांग रहे हैं, लेकिन हमारे वोट मांगने का उद्देश्य अलग है। हम चाहते हैं कि जनता हमारे विकास, लक्ष्य और नीयत को ध्यान में रखकर हमें वोट दे।

डॉ.राकेश पाठक की किताब सिंधिया और 1857 का विमोचन 29 को

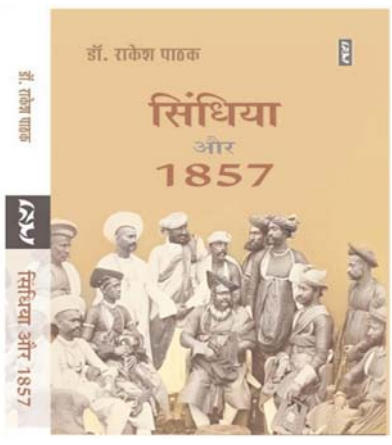

भोपाल। वरिष्ठ पत्रकार,कवि और लेखक डॉ. राकेश पाठक की पुस्तक सिंधिया और 1857 का विमोचन आगामी 29 अक्टूबर, रविवार, शाम साढ़े चार बजे होटल पलाश,टी टी नगर,भोपाल में होगा। विमोचन समारोह के मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित इतिहासकार डॉ. राम पुनियानी होंगे और अध्यक्षता विजयदत्त श्रीधर (पद्मश्री से विभूषित मूर्धन्य संपादक) करेंगे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में आनंदवर्धन सिंह (प्रधान संपादक, द पब्लिक इंडिया न्यूज चैनल), अशोक कुमार पांडे (प्रसिद्ध इतिहासविद), शीबा असलम फहमी (प्रतिष्ठित पत्रकार) और सरदार दया सिंह (अध्यक्ष आल इंडिया पीस मिशन) उपस्थित रहेंगे। पुस्तक सेतु प्रकाशन समूह से प्रकाशित हो रही है। इससे पूर्व डॉ. पाठक की तीन पुस्तकें काली चिड़ियों के देश में (यूरोप का यात्रा वृतांत), बसंत के पहले दिन से पहले (कविता संग्रह) और मप्र की स्वातंत्रोत्तर हिंदी पत्रकारिता का इतिहास (शोध पुस्तक)प्रकाशित हो चुकी हैं।

छात्राओं ने दिलाई निर्भीक, निष्पक्ष और नैतिक मतदान की शपथ

भोपाल। विधानसभा निर्वाचन - 2023 के अंतर्गत जिला निर्वाचन अधिकारी श्री आशीष सिंह के निर्देशानुसार जिले में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए स्वीप प्लान के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। मतदाताओं को जागरूक करने के उद्देश्य से पिछड़ा वर्ग बालिका छात्रावास की छात्राओं द्वारा रैली निकाल कर मतदान का महत्व और जानकारी दी। साथ ही मतदाताओं को मतदान प्रक्रिया में भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए जागरूक करने के साथ निर्भीक, निष्पक्ष और नैतिक मतदान की शपथ भी दिलाई।

हेलीकॉप्टर वाले बाबा को ज़मीन का अंदाज़ा नहीं है

प्रहलाद सिंह पटेल ने कमल नाथ को आम आदमी की तरह 24 घंटे ज़िंदगी जीने की चुनौती दी

शेयरचैट के लाईव ऑडियो चैटरूम पर जाने-माने न्यूज़ एंकर अनुराग मुस्कान के शो 'जनता की आवाज़' में एक्सक्लुज़िव बातचीत के दौरान भारतीय राजनेता श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कमल नाथ को चुनौती देते हुए उन्हें 'हेलीकॉप्टर वाले बाबा' कह कर पुकारा, जो इस क्षेत्र की ज़मीनी हकीकतों से परे हैं। ''अगर उन्हें यहां 1 किलोमीटर भी पैदल चलना पड़े या वे आम आदमी की तरह 24 घण्टे गुज़ार सकें, तब मैं उन्हें राजनीतिज्ञ कह सकता हूं। मैंने साबित कर दिया है कि आपके क्षेत्र में फर्श पर सो रहा हूं। हेलीकॉप्टर वाले बाबा को ज़मीन का अंदाज़ा नहीं है।'' इस सत्र में शेयरचैट पर 1 लाख से अधिक उपयोगकर्ता शामिल हुए।

मुफ्त बिजली और ओबीसी कार्ड पर कॉन्ग्रेस के वादों पर बात करते हुए उन्होंने कहा, ''कॉन्ग्रेस की नीतियां हमेशा से लालच, डर से भरी रही हैं, अब यह लालच और डर कारगर नहीं होने वाले है। मैंने देखा है कि किस तरह मोदी जी के प्रयासों ने बहुत सी महिलाओं के आंसू पौंछे हैं, इन महिलाओं के घर में शौचालय पहुंचा कर उन्हें सम्मान दिया गया, उनके घर तक पानी पहुंचा कर उनके जीवन को आसान बनाया गया। उन्होंने महिलाओं के स्वास्थ्य, समय और सम्मान में निवेश किया है। मेरा मानना है कि इस तरह का व्यवहार कॉन्ग्रेस के लिए नहीं चलेगा, कॉन्ग्रेस का नेता थका हुआ है!'' उन्होंने राहुल गांधी द्वारा हाल ही में की गई टिप्पणी पर बात करते हुए कहा ''राहुल गांधी हाल ही में तेलंगाना पहुंचे और दावा किया कि भाजपा, बीआरएस और एआईएमआईएम एक साथ मिलकर काम कर रहे हैं। जहां एक ओर वे उनसे गठबंधन की कोशिश में हैं, वहीं दूसरी ओर कहते हैं कि ये पार्टियां भाजपा के साथ हैं। दोनों बातों का एक समान आधार नहीं है। नर्मदा नदी के स्वच्छता अभियान और एमपी में पानी की समस्याओं पर बात करते हुए प्रहलाद पटेल ने मध्य प्रदेश में पेयजल की समस्या हल करने के लिए नीतियों पर चर्चा की और खासतौर पर क्षेत्र के युवाओं को स्वच्छता के बारे में जागरुक बनाने के महत्व पर ज़ोर दिया। पटेल ने राज्य की संभावनाओं पर आशा जताते हुए कहा कि मध्य प्रदेश आगामी वर्षों में विकास की स्थिति में है। उन्होंने राज्य की समृद्धि पर बात करते हुए जल संरक्षण, वन संरक्षण एवं स्थायी कृषि के महत्व पर ज़ोर दिया। पटेल ने स्थायी भोजन उत्पादन पर बात करते हुए कहा, ''भारतीय व्यंजन दुनिया भर में पंसद किए जाते हैं और हमें इन पर गर्व होना चाहिए। भारत दुनिया का 40 फीसदी श्री अन्न उत्पन्न करता है और हमें स्थायी भोजन पर ज़ोर देना चाहिए।'' पटेल ने कहा कि दुनिया को भारतीय खाद्य संस्कृति खासतौर पर श्री अन्न को अपनाना होगा, यही भोजन के संकट और भुखमरी को दूर करने का सबसे अच्छा तरीका है। पोषक भोजन आसानी से उगाया जा सकता है और मुश्किल परिस्थितियों में भी इसका सेवन किया जा सकता है। श्री अन्न को विश्वस्तरीय भोजन बनाने के मोदी जी के मिशन पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि खाद्य प्रसंस्करण दुनिया का सबसे तेज़ी से विकसित होता उद्योग है। इसके अलावा पटेल ने आगामी वर्ल्ड फूड फेस्टिवल में खाद्य प्रसंस्करण सेक्टर में निवेश आकर्षित करने की बात कही, जहां 21 देश और 12 विश्वस्तरीय संगठन हिस्सा लेंगे। पीएम मोदी के मार्गदर्शन में मंत्रालय श्री अन्न पर फोकस करते हुए इस फेस्टिवल में सक्रियता से शामिल होगा। पटेल ने पीएलआई योजना पर बात करते हुए घरेलु निर्माण को बढ़ावा देने तथा विश्वस्तरीय मानकों के अनुरूप असंगठित सेक्टर में सुधार लाने की सरकार की प्रतिबद्धता पर भी ज़ोर दिया। युवाओं को संदेश देते हुए उन्होंने कहा, ''हमारे युवा भारत का भविष्य हैं।'' गांधीजी के तीन मंत्रों पर बात करते हुए उन्होंने कहा, ''गांधी जी का चरखा आत्मनिर्भरता का प्रतीक है, जो हमें छोटा-बड़ा कोई भी काम कर आत्मनिर्भर जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है। दूसरा उन्होंने नई पीढ़ी को अपनी कमज़ोरियों से मुक्त होने के लिए प्रेरित किया। तीसरा उन्होंने अपने आस-पास स्वच्छता रखने पर ज़ोर दिया। मैं ये तीनों मंत्र अपनाता हूं और मेरा मानना है कि अगर मैं खुद इनका पालन नहीं करता तो इनका प्रचार भी नहीं कर सकता।

केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर श्योपुर एवं मुरैना में कार्यकर्ता सम्मेलन में पहुंचे, ली चुनावी सभाएं

श्योपुर। भारतीय जनता पार्टी की सरकारें ही विकास कार्य करती हैं। देश में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह की डबल इंजन की सरकार ने विकास के नए आयाम स्थापित किए हैं। श्योपुर अब पहले जैसा नहीं रहा है। श्योपुर का लगातार विकास हो रहा है। विकास को और गति देने और मध्यप्रदेश के अग्रणी जिलों में श्योपुर को शामिल कराने के लिए भाजपा को प्रचंड बहुमत से जिताना होगा। भाजपा में व्यक्ति विशेष नहीं, पार्टी विशेष होती है। भाजपा की सरकार ही विकास करती है। कांग्रेस विकास के पहिए को रोक देती है। ऐसे में कार्यकर्ताओं को जनता से संपर्क कर भाजपा सरकारों द्वारा कराए गए विकास कार्य जनता को बताएं और पार्टी प्रत्याशियों को प्रचंड बहुमत से जिताने के लिए कार्य करें। यह बात केंद्रीय मंत्री व प्रदेश चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक नरेंद्र सिंह तोमर ने श्योपुर में कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कही। केंद्रीय मंत्री तोमर ने विजयपुर में भी कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित किया। इस अवसर पर विजयपुर से पार्टी प्रत्याशी बाबूलाल मेहरा भी उपस्थित थे। तोमर ने मुरैना जिले के दिमनी में जनसभा को भी संबोधित किया।

केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने श्योपुर बाजार में गणेश जी के दर्शन करने के पश्चात् जनसंपर्क भी किया। जनसंपर्क करने के बाद श्योपुर विधानसभा के चुनाव कार्यालय में कार्यकर्ताओं के सम्मेलन को संबोधित करते हुए तोमर ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की पार्टी है। भाजपा में व्यक्ति विशेष नहीं, पार्टी विशेष होती है। हमारी पार्टी में सभी कार्यकर्ता ईमानदारी और पूरी निष्ठा के साथ समर्पण भाव से काम करते हैं। तोमर ने कहा कि केंद्रीय गृह व सहकारिता मंत्री अमित शाह जी श्योपुर प्रवास पर आ रहे हैं। सभी कार्यकर्ताओं के प्रयास से शाह के प्रवास कार्यक्रम को भव्य और दिव्य बनाना है।

तोमर ने कहा कि अब श्योपुर बदल रहा है, ये विकास के नित नये आयाम खड़े कर रहा है। श्योपुर में मूलभूत सुविधाएं पर्याप्त हैं, लेकिन अभी विकास के बहुत काम करना शेष है। श्योपुर विकास के नए आयाम स्थापित करें, इसके लिए पार्टी प्रत्याशी को जिताने के लिए सभी कार्यकर्ता जुट जाएं और मतदाताओं को भाजपा सरकार के विकास और जनकल्याणकारी कार्यों को बातएं। कार्यकर्ता सम्मेलन में श्योपुर से पार्टी प्रत्याशी दुर्गालाल विजय, सुरेंद्र सिंह जाट, महावीर सिंह सिसोदिया, कैलाश नारायण गुप्ता, राम लखन नापाखेड़ी, महामंत्री शशांक भूषण, नरेश धाकड़ सह मिडिया प्रभारी सहित समस्त मोर्चा के जिला अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष, प्रकोष्ठ संयोजक, महिला पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं की उपस्थित थे। मुरैना जिले की दिमनी विधानसभा क्षेत्र के आरोली, मलबसई में आमसभा को संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री, प्रदेश चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक व पार्टी प्रत्याशी नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि भाजपा को छोड़कर अन्य राजनीतिक दल देश को आगे बढने से रोकना चाहते हैं। कांग्रेस झूठ की बैसाखी के सहारे चल रही है, हाथी तो उत्तरप्रदेश में हांफ रहा है। 2023 विधानसभा चुनाव नाली और सडक़ का चुनाव नहीं है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी और भाजपा के नेतृत्व में देश में अनेकों बड़े काम हुए हैं।

ब्रैकीथेरेपी से ठीक हुआ कैंसर, महिला से खाना और पानी पीना भी नहीं हो रहा था

सांध्य प्रकाश संवाददाता
भोपाल

दमोह जिले के एक गाँव की रहने वाली 32 साल की रश्मि बदला हुआ नाम पिछले 7 महीने से निचले होंठ पर एक छाला पड़ने के कारण दर्द से परेशान रहा करती थी ना खाना खा सकती थी ना पानी पी सकती थी। पूरे जिले में तमाम डॉक्टरों को दिखाने के बाद पता चला कि होंठ में कैंसर हो गया है। तब गाँव वालों की सलाह पर एम्स भोपाल में आकर दिखाया। एम्स भोपाल के रेडियोथेरेपी विभाग के डॉक्टरों ने रश्मि का परीक्षण कर ब्रैकीथेरेपी करने का फैसला किया। डॉ वपिन खराड़े ने रेडियोथेरेपी विभाग के प्रोण् डॉण् मनीष गुप्ता और डॉण् सैकत दास के मार्गदर्शन में इलाज करना शुरु किया और केवल एक हफ्ते के इलाज के बाद ही होंठ का कैंसर पूरी तरह से ठीक हो गया। और इलाज पर भी कोई खर्च नहीं हुआ क्योंकि उनके पास आयुष्मान योजना का कार्ड भी था। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रोण् ;डॉण्द्ध अजय सिंह ने इस उपलब्धि के लिए पूरी टीम को बधाई दी। ब्रैकीथेरेपी में रेडिएशन सोर्स को ट्यूमर के अंदर उसके पास रख जाता है। इसमें उपयोग किए जाने वाले ज्यादातर रेडिएशन सोर्स. रेडिएशन आइसोटोप होते हैं जो कम उर्जा वाली गामा किरणों को उत्सर्जित करते है। इसलिए इसमें हाई डोज उपचार के साथ दृ साथ ट्यूमर के आस दृ पास वाले अंग सुरक्षित रहते हैं और उन्हें कोई नुकसान भी नहीं होता। अन्य परिस्थितियों में ऑपरेशन द्वारा कैंसर ग्रस्त ट्यूमर को निकाल कर प्लास्टिक सर्जरी करने की आवश्यकता पड़ती है। कैंसर ट्यूमर तक दवा पहुँचाने के लिए रेडिएशन आइसोटोप को शरीर के प्रभावित हिस्से में रखना होता है जिसके लिए इंटरस्टिशियल सुईयों सहित विभिन्न एप्लीकेटर विकसित किए गए हैं। इन एप्लीकेटर का डिजाईन ट्यूमर के आकारए प्रकार और स्थान के आधार पर निर्धारित होता है। मध्य प्रदेश के केवल कुछ चुनिंदा अस्पतालों में ही यह सुविधा उपलब्ध है।

डेंगू की रोकथाम के लिए कलेक्टर ने ली बैठक

भोपाल। नगर निगम एवं मलेरिया विभाग की समन्वय बैठक आई.एस.बी.टी. सभागार में कलेक्टर श्री आशीष सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। कलेक्टर द्वारा नगर निगम कमिश्नर एवं मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. प्रभाकर तिवारी एवं जिला मलेरिया अधिकारी श्री अखिलेश दुबे को डेंगू की रोकथाम के लिए निर्देश दिए गए। नगर निगम के स्वास्थ्य अमले के साथ सयुक्त प्लान तैयार किया गया हैं, जिसमे शहर के संवेदनशील इलाको में लार्वा सर्वे के साथ स्पॉट फाईन की कार्यवाही की जाए। डेंगू पाए गए एरिया में एक सप्ताह तक लगातार फॉगिंग का कार्य नगर निगम द्वारा किया जाए, जिससे संक्रमित मच्छर को खत्म किया जा सके।

मलेरिया अधिकारी द्वारा बताया गया कि 25 से 31 अक्टूबर तक सघन अभियान चला कर लार्वा विनाष्टीकरण की कार्यवाही की जाएगी। जलभराव वाली जगहों पर गंबुसिया मछली डाली जाए। मलेरिया कार्यालय की टीम के साथ नगर निगम कि टीम स्प्रे एवं चालान की कार्यवाही करेगी। बुधवार को भोपाल के सभी 21 जोन में 1301 घरों का सर्वे किया गया । नगर निगम द्वारा कुल तीन हजार 300 रुपए के चालान किए गए। इंद्रपुरी में मलेरिया, नगर निगम, एंबेड टीम द्वारा भी डेंगू नियंत्रण के लिए सघन जन जागरूकता अभियान चलाया गया।

विधायक रामेश्वर शर्मा हुजूर से नामांकन भरने जाते हुए।

कांग्रेस के दक्षिण पश्चिम में प्रत्याशी पीसी शर्मा नामांकन भरने कलेक्टर कार्यालय पहुंचे।

कांग्रेस जिला अध्यक्ष के पद पर नियुक्त हुए गुड्डन पांडे, बाबू चौधरी कार्यकारी अध्यक्ष बने

नर्मदापुरम। विधानसभा चुनाव के चलते प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा नर्मदापुरम जिले के संगठन में बड़ा फेर बदल किया गया, कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं द्वारा शिवाकांत गुड्डन पांडे को कांग्रेस का जिला अध्यक्ष एवं विजय बाबू चौधरी को जिला कांग्रेस कमेटी का कार्यकारी अध्यक्ष घोषित किया गया है। यह घोषणा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष की ओर से संगठन के उपाध्यक्ष राजीव सिंह ने की है। ज्ञात रहे की कांग्रेस के जिला अध्यक्ष पुष्पराज सिंह पटेल सुहागपुर से विधानसभा का चुनाव लड़ रहे हैं जिसके बाद से उक्त पद रिक्त था। शीर्ष नेताओं ने अपने चहेतों को यह पद देकर नवाजा है, इससे कहीं न कहीं कांग्रेस को मजबूती जरूर मिलेगी । सरल स्वभाव मिलनसार शिवाकांत गुड्डन पांडे को जिला कांग्रेस का अध्यक्ष नियुक्त होने से कांग्रेसियों में खुशी की लहर है। उनकी इस नियुक्ति पर कांग्रेस पदाधिकारी एवं उनके शुभचिंतकों उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की है।

स म्पा द की य

बिन पानी सब सून...!

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि भारत भूजल की कमी के चरम बिंदु की ओर बढ़ रहा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि गंगा बेसिन के कुछ इलाके पहले से ही इस चरम बिंदु को पार कर चुके हैं और 2025 तक इसका असर दिखना भी शुरू हो जाएगा। हमारी समस्या यह है कि हम विश्व स्तर की ऐसी तमाम रिपोर्टों को केवल ये कह कर नकारते जा रहे हैं कि ये भारत के खिलाफ दुष्प्रचार किया जा रहा है। जबकि लंबे समय से हिमालय के ग्लेशियर के पिघलने का मामला हो या फिर हिमालय के चारों ओर हिमस्खलन का मामला, लगातार घटनाओं में बहुत तेजी से इजाफा हो रहा है और हम इसे भी नजरअंदाज करते दिख रहे हैं।

असल में भूजल से संबंधित इंटरकनेक्टेड डिजास्टर रिस्क रिपोर्ट 2023 नाम से प्रकाशित रिपोर्ट को संयुक्त राष्ट्र यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट फॉर एनवायरमेंट एंड ह्युमन सिक्योरिटी ने तैयार किया है। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि 70 प्रतिशत भूजल का इस्तेमाल खेती के कामों में किया जाता है। सूखे या पानी की कमी की स्थिति में जमीन के अंदर मौजूद जलभृत पानी की कमी को पूरा करने में अहम योगदान देते हैं। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि अब भारत में कई जलभृत भी चरम सीमा को पार कर गए हैं। केवल भारत ही नहीं पूरी दुनिया के आधे से ज्यादा जलभृत यानि पानी के स्रोत तेजी से खाली हो रहे हैं। प्राकृतिक रूप से उनके फिर से भरने की गति बेहद धीमी हो गई है।

रिपोर्ट में यह चेतावनी दी गई है कि जैसे ही पानी की कमी होगी उससे खाद्य उत्पादन बुरी तरह प्रभावित होगा, जो कि स्वाभाविक है। और इससे दुनियाभर में खाद्य संकट गहरा जाएगा। सऊदी अरब में पहले से ही भूजल चरम बिंदु से नीचे चला गया है और भारत उन देशों में शामिल है, जो जल्द ही चरम बिंदु को पार कर जाएंगे। यहां यह उल्लेखनीय कि भारत में दुनिया में सबसे ज्यादा भूजल का इस्तेमाल किया जाता है और यह अमेरिका और चीन दोनों के कुल इस्तेमाल से भी ज्यादा है। भारत का उत्तर पश्चिमी इलाका देश की खाद्य जरूरतों को पूरा करने के लिहाज से महत्वपूर्ण है लेकिन यहां तेजी से भूजल का स्तर गिर रहा है और 2025 तक इसके नुकसान दिखने शुरू हो जाएंगे।

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में बताया गया है कि प्राकृतिक व्यवस्था में छह पर्यावरणीय प्रणालियां चरम बिंदु के करीब पहुंच रही हैं। इनमें तेजी से जीव विलुप्त होंगे, भूजल का स्तर गिरेगा, ग्लेशियर तेजी से पिघलेंगे, अंतरिक्ष में कचरा समस्या पैदा करेगा, गर्मी सहनशक्ति की सीमा को पार कर जाएगी और भविष्य को लेकर चिंता बढ़ जाएगी। पर्यावरणीय चरम बिंदु, वह महत्वपूर्ण सीमाएं हैं, जिसके परे जाने पर तेजी से विनाशकारी बदलाव होते हैं। इसका पारिस्थितिक तंत्र, जलवायु पैटर्न और समग्र पर्यावरण पर गहरा बदलाव होता है।

हम ऐसी रिपोर्ट को नकारने के बजाय उनका अध्ययन कर देश के परिप्रेक्ष्य में कुछ सही सर्वे करा सकते हैं। केंद्र सरकार ने जल जीवन मिशन चला रखा है, परंतु इसका उद्देश्य केवल घरों तक पानी पहुंचाना है। पहले एक और अभियान चला था, जिसका उद्देश्य भूजल स्तर में वृद्धि करना था, लेकिन यह भ्रष्टाचार और लापरवाही की भेंट चढ़ गया। भूजल स्तर के लिए पूर्व में प्रयास नहीं हुए, या अभी नहीं हो रहे हैं, यह कहना ठीक नहीं होगा। परंतु जिस स्तर पर प्रयास होना चाहिए और जिस तरह की ईमानदारी इस क्षेत्र में बरतना चाहिए, वो कहीं नहीं दिखाई दे रही है।

हर शहर की योजना बनने के साथ ही पानी को लेकर भी योजना बनाई जाती है। शहरों में वाटर हार्वेस्टिंग को अनिवार्य किया गया है, लेकिन वह केवल कागजों तक ही सीमित है। जिस तरह से भवन निर्माण में कोई नियम लागू नहीं हो रहा, भारी भ्रष्टाचार के चलते शहरों में पार्किंग से लेकर अन्य तमाम समस्याएं पैदा हो रही हैं, उसी तर्ज पर भूजल की योजनाएं चल रही हैं। कहीं कोई गंभीरता नहीं। पुराने जलस्रोत सूखते जा रहे हैं। उन्हें भरने के नाम पर भ्रष्टाचार होता है। कागजों में तमाम कुए, बावड़ियां मौजूद हैं, लेकिन उन्हें भरकर इमारतें बन चुकी हैं, इंदौर में तो बावड़ी के ऊपर मंदिर ही बना दिया गया। लेकिन मजाल है कि कई मौतों के बाद भी बावड़ी को वापस उसी शक्ल में लाया गया हो। मंदिर ज्यादा जरूरी है, पानी तो कहीं से भी मिल जाएगा।

हमें पूरी गंभीरता से सोचना होगा। पिछले तीन-चार दशकों से सुनते आ रहे हैं कि तीसरा विश्व युद्ध यदि हुआ तो पानी को लेकर होगा। लेकिन हम पानी को लेकर कतई गंभीर नहीं हैं। हमारी पूर्ति किसी तरह हो जाए, बस इतनी ही चिंता रहती है। अमीर लोग बिसलरी से काम चला रहे हैं, गरीबों के पास पोखर, बावड़ी का पानी भी नसीब नहीं हो पा रहा। सवाल बिसलरी का नहीं है, प्रश्न यह है कि जब भूजल स्रोत ही नहीं बचेंगे तो बाजार से कौन सा पानी खरीद पाएंगे? संयुक्त राष्ट्र की इस रिपोर्ट को गंभीरता से लेकर भूजल स्तर गिरने से रोकने का काम पहले होना चाहिए। इसके बाद रीचार्ज अभियान पूरी ईमानादारी से चलाया जाए। हर व्यक्ति को इसमें सहभागिता करनी होगी, नहीं तो हम पानी के लिए तरस जाएंगे। सदियों पहले हमारे कवि लिख गए थे-

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानस, चून।।

मध्यप्रदेश चुनावः क्या टिकट की मारामारी इसलिए क्योंकि

राजनीति ही सर्वाधिक 'लाभ का धंधा' है?

अजय बोकिल

सबसे बड़ा सवाल तो यह है कि क्या अब चुनाव का टिकट पाना या उसका कटना ही नेताओं के जीवन- मरण का प्रश्न बन गया है? क्या समाज में जनसेवा के दूसरे माध्यम बेमानी हो चुके हैं और यह भी कि क्या राजनीति अब सबसे ज्यादा लाभ और रौब का धंधा बन चुकी है?

मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव में इस बार सत्ता के दावेदार दो प्रमुख राजनीतिक दलों भाजपा और कांग्रेस में टिकट को लेकर जिस बड़े पैमाने पर बगावत और नाराजगी दिखाई दे रही है, वह देश की राजनीति में आ रहे चरित्रगत बदलाव का संकेत है। साथ ही यह वैचारिक और दलीय प्रतिबद्धता पर हावी हो रहे व्यक्तिवाद और निजी स्वार्थ की स्पष्ट छवि भी है।

चुनाव के लिए नामांकन प्रारंभ होने के बाद भाजपा और कांग्रेस में करीब 70 सीटों पर भारी असंतोष और बगावत की लपटें हैं। समय रहते इन्हें शांत नहीं किया जा सका तो ये बागी, चुनाव में राजनीतिक दलों के समीकरणों को बिगाड़ सकते हैं।

सबसे बड़ा सवाल तो यह है कि क्या अब चुनाव का टिकट पाना या उसका कटना ही नेताओं के जीवन- मरण का प्रश्न बन गया है? क्या समाज में जनसेवा के दूसरे माध्यम बेमानी हो चुके हैं और यह भी कि क्या राजनीति अब सबसे ज्यादा लाभ और रौब का धंधा बन चुकी है?

ऐसा नहीं है कि चुनाव के समय राजनीतिक दलों में टिकट वितरण को लेकर असंतोष नहीं होता। यह स्वाभाविक भी है कि जो राजनीतिक कार्यकर्ता वर्षों मेहनत करे और टिकट वितरण के समय उसे दरकिनार कर दूसरे या किसी आयातित व्यक्ति को टिकट दे दिया जाए तो राजनीति में निष्ठा और समर्पण का पैमाना अपने आप दफन होने लगता है।

वैसे भी हर पार्टी में एक सीट पर टिकट के एक से अधिक आकांक्षी होते हैं। दलों की संवैधानिक मर्यादा है कि वे चुनाव में किसी एक को ही टिकट दे सकती हैं। ऐसे में बाकी को या तो पार्टी के अधिकृत उम्मीदवार का समर्थन करना होगा या फिर दूसरे किसी दल से टिकट लेकर अथवा निर्दलीय चुनाव में खड़ा होना होगा।

तीसरे, वह पार्टी हाई कमान और टिकट वितरणकर्ताओं के सामने खुलकर अपनी नाराजगी का प्रदर्शन कर मन को हल्का करे। चौथा और अनैतिक विकल्प यह है कि वह पार्टी में रहकर ही भीतरघात कर पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी को हरवाकर अपनी उपेक्षा का बदला ले और अगले चुनाव में अपनी उम्मीदवारी का खाता खुला रखे।

मध्यप्रदेश में विरोध के दिख रहे अलग-अलग तरीकेः मध्यप्रदेश में जो सीन बन रहा है, वह इन सारे दृश्यों का नकारात्मक कोलाज है। बात अब विरोध के प्राचीन तरीकों जैसे कि नारेबाजी, धरना प्रदर्शन से मीलों आगे जाकर शीर्ष नेताओं के घरों के सामने आत्मदाह करने, पार्टी दफ्तरों पर हमले, नेताओं के कपड़े फाड़ने, हाथापाई, सामूहिक इस्तीफे और टिकट कटने के बाद मातमी अंदाज में जार-जार आंसू बहाने से लेकर इस परिस्थिति के लिए गालियां खाने की पावर ऑफ एटार्नी ट्रांसफर करने तक पहुंच गई है।

अमूमन ये सब करने और कराने वाले वही लोग होते हैं, जो टिकट कटने से पहले पार्टी के निष्ठावान और प्रतिबद्ध कार्यकर्ता कहलाते थे। आलम यह है कि कई जगह तो बड़े नेताओं को अपने ही कार्यकर्ताओं के हिंसक आक्रोश का शिकार होने से बचने जान बचाकर भागना पड़ रहा है। मानो सभी दलों में अनुशासनहीनता और अराजकता की एक अघोषित स्पर्द्धा चल रही हो, जिसमें हर असंतुष्ट अपने गिरोह के साथ दूसरे को पीछे छोड़ने की दबंगई में लगा है।

ऐसा नहीं है कि आला नेताओं को कार्यकर्ताओं के इस तरह उग्र अथवा बागी होने का अंदाजा न हो। लेकिन पार्टियां चुनाव का टिकट बांटती हैं तो टिकट देने और टिकट काटने के उसके अपने पैमाने होते हैं। कई बार तो ये पैमाने ही एक- दूसरे को काटते दिखाई देते हैं।

मप्र में भाजपा और कांग्रेस ने जो सूचियां जारी की हैं, उसमें कोई निश्चित पैटर्न या फार्मूला नजर नहीं आता, सिवाय किसी कीमत पर सत्ता में लौटने या उसे कायम रखने की व्यग्रता के। इसमें नेताओं की आपसी प्रतिद्वंद्विता, जुगाड़, डीलिंग, राजनीतिक शह और मात, तथाकथित सर्वे, निजी पसंद- नापसंद, किसी भी हद तक जाकर उपकृत करने की बेताबी और विवशता, जातिगत समीकरण, धन और बाहुबलीय क्षमता तथा अपने ही नैतिक प्रतिमानों का खुशी-खुशी विध्वंस भी इसमें शामिल है।

दोनों पार्टियों में टिकट बांटने के लिए बैठकों पर बैठकें हुईं। जोड़- तोड़ जुगाडों के सत्र चले। गोपनीयता का आवरण ओढ़ा गया। हर दिन राजनीतिक हानि-लाभ का नया चौघड़िया रचने की कोशिशें हुईं। चेहरों के हिसाब से दर्पण सजाने के उपक्रम हुए। इतना कुछ हुआ कि भगवान भी अगर इस टिकट वितरण का विश्लेषण करने बैठें तो चकरा जाएं। यानी एक दिन पहले पार्टी में शामिल को भी टिकट मिले तो उन बुजुर्गों को भी टिकट से नवाजा गया जो खुद चार धाम की यात्रा पर जाने की तैयारी में थे। कुछ को टिकट दिया भी उस क्षेत्र से, जहां उसे अपनी नेतागिरी का नारियल फोड़ना है। एक ऐसे नाराज माने जाने वाले विधायक को भी टिकट दिया गया, जिसने नाउम्मीदी में टिकटों की घोषणा से पहले ही राजधानी में अपना सरकारी आवास खाली कर दिया था।

कहीं भाई- भाई या सगे रिश्तेदारों को लड़ा दिया गया तो कहीं सालों से मेहनत करते कार्यकर्ता के हाथ में ऐन वक्त पर तुलसी पत्र पकड़ा दिया गया। कई उन मंत्रियों और विधायकों को फिर से टिकट मिल गया, जिन्होंने पांच साल में सिर्फ माल कमाया, अकड़ दिखाई और पब्लिक की गालियां खाईं। टिकट जुगाड़ने के लिए कहीं धमक काम आई, कहीं पैसा काम आया। कहीं सेवा का तड़का लगा तो कहीं चरणोदक काम आया। अगर इस समूची प्रक्रिया में कोई ठगा गया तो वह मतदाता।

चुनाव पर क्या होगा इसका असर?

जाहिर है कि जब दो प्रमुख दलों में इतने बड़े पैमाने पर बगावत है तो उसका असर चुनाव नतीजों पर पड़ेगा ही। अभी करीब एक दर्जन टिकटवंचित उम्मीदवार छोटे दलों के टिकट पर चुनाव मैदान में उतरने का एलान कर चुके हैं। नाम वापसी तक यह संख्या और बढ़ सकती है। हालांकि, नाराजों को बिठाने और चुप कराने के लिए दोनो? दलों में बड़े नेता साम-दाम-दंड-भेद सभी तरीके अपनाने में लगे हैं।

लेकिन राजनीतिक कार्यकर्ता यह बखूबी जानता है कि बड़े नेताओं द्वारा उससे किए वादे भी ज्यादातर चुनावी वादों की तरह खोखले अथवा आधे-अधूरे होते हैं। साथ में यह भी सच है कि बड़े दलों में अब वो ऋषि राजनेता नहीं रहे, जिनकी कार्यकर्ता के मन पर पकड़ थी और जो शीर्ष नेतृत्व और जमीनी कार्यकर्ता के बीच रेशमी धागे का काम करते थे। जो गरल को भी अमृत के भाव से पी सकते थे, पिला सकते थे।

ऐसे दिग्गत नेताओं का नैतिक प्रभाव खत्म होने के बाद आजकल कार्यकर्ताओं को मनाने का फार्मूला मोटे तौर पर अगले चुनाव में टिकट के वादे, सत्ता में आने पर किसी पद की रेवड़ी, किसी कार्यकर्ता के घर जाकर चाय आदि पीने की दरियादिली या फिर बात-बेबात उसकी पीठ थपथपाने, मंच से तारीफ के दो शब्द कहकर भावनात्मक शोषण करने या फिर कैश डीलिंग के रूप में भी हो सकता है।

ध्यान रहे कि राजनीति में 'ठगना' शब्द के अनेकार्थ हैं और वो परिस्थिति तथा पात्र के हिसाब से बदलते रहते हैं। चुनाव के मंगलाचरण में अगर बड़े नेताओं का यह 'समझाइश कैम्पेन' खास सफल नहीं रहा और घोषित तौर पर बैठे प्रत्याशी ने अघोषित रूप से अंदर ही अंदर पार्टी प्रत्याशी को पलीता लगा दिया तो नतीजे चौंकाने वाले हो सकते हैं।

धूमिल होती राजनीति की बुनियादी नैतिकता

यहां सबसे बड़ा सवाल तो राजनीति में बुनियादी नैतिकता का है? लोकतंत्र में चुनाव टिकट की आकांक्षा रखना स्वाभाविक है, लेकिन उसे जीने-मरने का सवाल बना देना क्या संदेश देता है? क्या चुनाव का टिकट मिलना कोई कुबेर के खजाने की चाभी है या उसका न मिलना घर के कर्ता पुरूष की असामयिक मौत है? टिकट न मिलने पर इतना शोक और रूदन क्यों? और मिल जाने पर आकाश स्पर्श का परमानंद क्यों?

दरअसल राजनीतिक व्यवस्था मूलतः लोकतंत्र को चलाने और इस तंत्र के असल मालिक लोक के जीवन को सुचारू और समृद्ध बनाने के लिए है, लोकतांत्रिक माफिया बनने के लिए तो नहीं है। लेकिन दुर्भाग्य से आजादी के अमृत काल में यह कड़वा सच है कि राजनीति अब अधिकांश लोगों के लिए शुद्ध रूप से चौतरफा लाभ का धंधा है। इसीलिए वो इसे छोड़ना तो दूर इसे किसी सेठ की गद्दी की तरह पीढ़ी दर पीढ़ी कायम रखना चाहते हैं ताकि पावर, पैसा और प्रतिष्ठा की गंगोत्री सूख न सके।

कहीं यह 'परिवारवाद' के रूप में है तो कहीं 'पैतृक सेवावाद' के रूप में है, जिसे इस कथित जनसेवा का चस्का लगा, वह दूसरों को यह 'मौका' भूलकर भी नहीं देना चाहता। और जिसे यह अब तक नहीं मिला, वो इसे पाने के लिए अघोरी साधना करने के लिए भी तैयार है। अफसोस, कि जिस जन की सेवा के लिए चुनाव टिकट रूपी एंट्री पास तैयार किया गया है, वह 'जन' पहले भी हतप्रभ था, आज भी है और शायद आगे भी रहेगा।

महिला और न्याय

एन के त्रिपाठी

सुप्रीम कोर्ट के एक निर्णय से पुनः यह प्रश्न उदित हुआ है कि क्या महिला को अपनी भावनाओं और शरीर पर पूर्ण अधिकार है? आदिकाल से सभी सामाजिक व्यवस्थाएँ महिलाओं के अधिकारों में भेदभाव करती रही हैं।विभिन्न धर्मों के उद्भव के साथ महिलाओं की स्थिति और विकट हो गयी। पितृसत्तात्मक सोच सदैव महिलाओं के प्राकृतिक न्याय के विरुद्ध रही है। समय के साथ जागरूकता बढ़ने पर अलग-अलग क्षेत्रों में महिलाओं पर रूढ़िवादी प्रतिबंध शिथिल होने लगे. परन्तु समाप्त नहीं हुए हैं। महिलाओं के अधिकार आज भी पुरुषवादी सोच से प्रताड़ित हैं। न्यायिक व्यवस्था भी इससे मुक्त नहीं है।

सुप्रीम कोर्ट के तीन जजों की एक बेंच ने, जिसमें चीफ़ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला तथा जस्टिस मनोज मिश्रा थे, एक महिला को उसकी इच्छा के विपरीत उसे अबॉर्शन की अनुमति नहीं दी। उन्होंने कहा कि उसे बच्चे को जन्म देना ही होगा भले ही वो चाहे तो बाद में उस बच्चे को किसी और को गोद में दे दे। उल्लेखनीय है कि इसके पहले इसी प्रकरण में दो जजों की पीठ, जस्टिस हिमा कोहली और जस्टिस नागरत्न ने उसे इसकी अनुमति दे दी थी, परंतु बाद में जस्टिस हिमा कोहली के अपने मत को बदल देने के कारण यह प्रकरण चीफ़ जस्टिस की 3 जजों की बेंच के समक्ष गया। वहाँ कई दिनों की लंबी बहस के बाद महिला की प्रार्थना अस्वीकार कर दी गई।

इस प्रकरण की महिला के दो बच्चे हैं जिसमें एक छोटा दूध पीता बच्चा है। यह महिला शारीरिक, भावनात्मक और आर्थिक दृष्टि से एक और बच्चे को संभाल पाने में अपने को असमर्थ अनुभव कर रही है । उसे अवसाद की मानसिक बीमारी भी है जिसकी वह दवा ले रही है। अपनी इसी स्थिति के कारण उसे अपनी गर्भावस्था का भी पता नहीं लगा और जब पता चला तब उसने नियमानुसार कोर्ट से अबॉर्शन की अनुमति प्राप्त करने का निवेदन किया। उसकी सुनवाई में कुछ सप्ताह और निकल गये। सुप्रीम कोर्ट ने उसके निवेदन को न केवल निरस्त कर दिया बल्कि उसे राह भी दिखाई कि वह कुछ सप्ताह बच्चे को और गर्भ में रखकर उसे जीवित जन्म दे और फिर वह किसी और को बच्चे को गोद में दे सकती है।

मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ़ प्रेगनेंसी एक्ट सामान्य मान्यता के विपरीत किसी महिला को अबॉर्शन की माँग का अधिकार नहीं देता है। इसमें केवल अपवाद स्वरूप महिला की जान बचाने के लिए डॉक्टर अबॉर्शन कर सकता है। अबॉर्शन की अनुमति महिला का जीवन बचाने अथवा गर्भस्थ शिशु की किसी गंभीर स्थिति के कारण दी जा सकती है। 20 सप्ताह के गर्भ तक एक डॉक्टर द्वारा, 20-24 सप्ताह के लिए दो डॉक्टर द्वारा तथा इसके बाद केवल असाधारण परिस्थितियों में अनुमति दी जा सकती है। स्पष्ट है कि इस एक्ट के अंतर्गत किसी महिला को अपनी इच्छानुसार अबॉर्शन का अधिकार नहीं है। यह अधिकार केवल डॉक्टरों के पास है। किसी अन्य परिस्थिति में किया गया अबॉर्शन भारतीय दंड विधान मे दंडनीय है।

अमेरिका सहित विश्व के अनेक देशों में स्थिति इससे भी विषम है। परन्तु उदार भारत में इसका संविधान सभी नागरिकों को पूर्ण समानता का अधिकार देता है। फिर भी पुरुष प्रधान सत्ता की अंतरात्मा के कारण यहाँ की कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका अभी भी महिलाओं को बराबर का अधिकार देने के लिए उद्यत नहीं है। पुरुषों की सोच इन संस्थाओं के माध्यम से महिलाओं को उसके शरीर पर उसे निर्णय लेने का अधिकार नहीं देती है। महिलाओं को अपने सभी अधिकारों के लिये अभी लंबा संघर्ष करना होगा।

चुनावी रणनीति सलाहकार कंपनियां बनाम जमीनी राजनेता टकराव

आलोक मेहता

भारतीय चुनावों में राजनीतिक पार्टियां, फण्ड करने वाली कारपोरेट कंपनियां, भविष्य की सरकारों की संभावनाएं टटोलने वाली विदेशी शक्तियां हाल के वर्षों में कथित चुनावी रणनीतिकारों, उनकी सर्वे कंपनियों पर करोड़ों रुपया खर्च कर रही हैं। जब ऐसी कंपनियों के कथित सर्वों और विभिन्न चुनाव क्षेत्रों के सही गलत उम्मीदवारों के आकलन, सलाह पर कांग्रेस या भाजपा या क्षेत्रीय पार्टियों के शीर्ष नेता फैसले करने लगते हैं, तो दशकों से जमीनी काम करते और जनता से जुड़े नेता बेहद उत्तेजित हो जाते हैं। इन दिनों इस स्थिति से सर्वाधिक दुखी राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गेहलोत और उनके वरिष्ठ करीबी सहयोगी नेता हुए हैं। विधान सभा चुनाव के उम्मीदवारों के चयन में जब एक दक्षिण भारतीय क़ानूगोलू की सर्वे रिपोर्ट को राहुल गाँधी और उनके करीबी नेता अधिक तरजीह देकर कांग्रेस के पुराने समर्पित नेता विधायकों के टिकट काटने पर दबाव बनाते रहे। मध्य प्रदेश के पुराने कांग्रेसी नेता पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ और दिग्विजय सिंह भी इस तरह के निजी कंपनियों के मालिकों की सलाह को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं होते ।

इसमें कोई शक नहीं कि अमेरिका और यूरोप की तरह विभिन्न देशों में पहले व्यापारिक बाजार के उपभोक्ताओं की पसंद या चुनावी तैयारी के लिए जनता का मूड जानने के लिए करीब तीन दशकों पहले सर्वे का प्रयोग शुरु हुआ। प्रणव रॉय को इस व्यवस्था का जनक कहा जा सकता है। उन्होंने इंडिया टुडे पत्रिका से शुरुवात की और फिर धीरे धीरे स्वयं एक बड़ी मीडिया कंपनी टीवी कंपनी के संस्थापक हो गए। लेकिन पिछले दस वर्षों में चुनावी रणनीतिकारों-सर्वे कंपनियों की पचासों दुकानें खुल गई हैं। ज्योतिष की भविष्यवाणियों की तरह कभी किसीका अनुमान सही निकल जाता है और अधिकांश का गलत हो, तब वे आंकड़ों के खेल और नेताओं की कमजोरियां गिनाकर अपना पल्ला झाड़ लेते हैं। कुछ साल पहले तो ऐसी कुछ कंपनियों का ही स्टिंग ऑपरेशन करके एक टीवी चैनल पर भंडाफोड़ भी हुआ। लेकिन राजनीति के पश्चिमी शिक्षित दीक्षित बड़े नेता अपने पार्टी के प्रादेशिक और स्थानीय नेताओं के बजाय इन दुकानदारों पर भरोसा करते हैं।

असल में कांग्रेस ने 2024 लोकसभा चुनाव के लिए जो टास्क फोर्स बनाया है उसमें पूर्व केंद्रीय मंत्री पी. चिदंबरम, मुकुल वासनिक, जयराम रमेश, के.सी. वेणुगोपाल, अजय माकन, प्रियंका गांधी, रणदीप सुरजेवाला, सुनील कोनगोलु को शामिल किया गया है। टास्क फोर्स के हर सदस्य को संगठन, संचार और मीडिया, वित्त और चुनाव प्रबंधन से संबंधित जिम्मेदारी मिली है। कांग्रेस में सुनील कोनगोलु का प्रवेश साथी कथित चुनाव रणनीतिकार प्रशांत किशोर और कांग्रेस के बीच बातचीत टूटने के बाद हुई। सुनील कनुगोलू का जन्म कर्नाटक के बल्लारी जिले में हुआ था, जहाँ से उन्होंने अपनी मिडिल स्कूल की शिक्षा पूरी की। बाद में वह चेन्नई बेंगलुरु में रहे। मूल रूप से तेलुगु भाषी होने के बावजूद, कनुगोलू की जड़ें कर्नाटक में हैं जो अब बेंगलुरु में रहते हैं।उन्होंने अतीत में भाजपा, द्रमुक और अन्नाद्रमुक के लिए काम किया है। स्थानीय मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार, 2017 के जल्लीकट्टू विरोध प्रदर्शन के दौरान तमिल गौरव और द्रविड़ मॉडल के पहलुओं के पीछे भी उनका हाथ था, जिससे डीएमके को आक्रामक भाजपा का मुकाबला करने में मदद मिली। पिछले साल 26 अप्रैल को प्रशांत किशोर द्वारा पार्टी में शामिल होने के कांग्रेस के प्रस्ताव को अस्वीकार करने के बाद, पूरे भारत में विभिन्न चुनावों के लिए पार्टी की चुनावी रणनीति में मदद करने के लिए सुनील कनुगोलू को बोर्ड में लाया गया था।

चुनाव-रणनीतिकार को राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा की योजना बनाने का भी श्रेय दिया गया है, जो एक यात्रा थी जो भारत के दक्षिणी छोर से जम्मू और कश्मीर तक 4,000 किमी से अधिक की लंबाई तय करती थी। माना जाता है कि यह यात्रा सबसे पुरानी पार्टी द्वारा उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम था, जिससे चुनाव परिणामों में कुछ हालिया मोड़ आए। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में अपने सफल काम के बाद, कनुगोलू ने मध्य प्रदेश में एक कार्यालय स्थापित किया।

सुनील कनुगोलू पहले प्रशांत किशोर की टीम का हिस्सा थे, जिन्होंने 2014 में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के चुनाव अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का दावा किया था । जबकि वह नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की मेहनत और वर्षों के जमीनी काम की सफलता थी।

कनुगोलू एक सर्वेक्षणकर्ता हैं और उन्होंने एसोसिएशन ऑफ ब्रिलियंट

माइंड्स (एबीएम) की स्थापना की थी, जो 2017 के उत्तर प्रदेश चुनावों के लिए भाजपा का अभियान निकाय था। पार्टी नेताओं के मुताबिक, उन्हें यूपी में बीजेपी के लिए काम करने के लिए जाना जाता है 7सुनील कोनगोलु जिनकी सोशल मीडिया पर उपस्थिति न के बराबर है और कहा जाता है कि पीके के विपरीत वह एक मायावी व्यक्ति हैं। उनके तौर-तरीके भी काफी अलग हैं। प्रशांत किशोर और सुनील कोनगोलु अलग होने से पहले दोनों ने 2014 में साथ काम किया था।

कहा जाता है कि वह अपने विचारों को पार्टी पर नहीं थोपते। प्रशांत किशोर से अलग होने के बाद सुनील कोनगोलु ने 2016 के विधानसभा चुनावों से पहले डी एम् के प्रमुख और तमिलनाडु के वर्तमान मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के लिए एक अभियान चलाया और यह सफल रहा। इस चुनाव में भले ही डीएमके हार गई लेकिन स्टालिन एक नेता के रूप में उभरे।

तमिलनाडु के बाद सुनील कोनगोलु ने फरवरी 2018 तक दिल्ली में भाजपा से मिलकर काम किया है। कोनगोलु 300 लोगों की एक टीम की मदद से उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और कर्नाटक में राज्य चुनावों सहित भाजपा के लिए अभियानों को आकार देने का दावा किया है । 2019 के लोकसभा चुनावों से पहले सुनील कोनगोलु डीएमके खेमे में गए और अब वह कांग्रेस में हैं।

उनके गुरु प्रशांत किशोर का राजनीति से जुड़ाव 34 वर्ष की उम्र में हुआ। वे तब यूनाइटेड नेशंस के तहत अफ्रीका में नौकरी कर रहे थे। 2011 में इनकी मुलाकात गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी से हुई। एक कार्यक्रम में प्रशांत किशोर की प्रस्तुति के अंदाज ने नरेंद्र मोदी को प्रभावित किया। इसके बाद दोनों एक-दूसरे के करीब आए। प्रशांत ने अपनी नौकरी छोड़कर गुजरात सरकार और नरेंद्र मोदी के लिए ब्रांड मैनेजर के तौर पर काम शुरू किया। उनका आई पैक नाम का एक संगठन है, जिसका पूरा नाम है इंडियन पालिटिकल एक्शन कमेटी। यह राजनीतिक दलों को ब्रांडिंग और चुनाव अभियान के लिए सेवाएं उपलब्ध कराता है। प्रशांत किशोर बतौर चुनावी रणनीतिकार बिहार में जदयू के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ काम कर चुके हैं। यह वह वक्त था, जब नीतीश, भाजपा से अलग होकर राजद के साथ चले गए थे। नीतीश ये चुनाव जीते थे। पंजाब में राहुल गांधी भी प्रशांत की सेवा ले चुके हैं। हाल में ममता बनर्जी ने पश्चिम बंगाल में प्रशांत की सेवाएं लीं। वे आम आदमी पार्टी और वाईएसआर कांग्रेस के लिए भी काम कर चुके हैं। बहरहाल अब प्रशांत किशोर स्वयं सिर पर मुकुट पहन बिहार की राजनीति में कूद गए हैं। अरविन्द केजरीवाल की तरह मुख्यमंत्री बनने का सपना संजोए हुए हैं।

बाजार का अनुसंधान करने वाली कंपनी एक्सिस माई इंडिया ने पिछले वर्षों में मीडिया संस्थानों में अपनी साख जमाई और हाल में कहा था कि वह 25 करोड़ परिवारों से जुड़ने के लिए 500 करोड़ का निवेश करेगी। इसके लिए कंपनी दोतरफा संचार समस्या समाधान पर ध्यान देने के साथ एक डिजिटल मंच विकसित कर रही है।एक्सिस माय इंडिया के संस्थापक और अध्यक्ष प्रदीप गुप्ता ने कहा कि कंपनी की परियोजना में 500 करोड़ रुपये तक का निवेश करने की योजना है। इसे ऋण और इक्विटी डाइल्यूशन के जरिये जुटाया जाएगा।एक्सिस माई इंडिया की शुरुआत वर्ष 1998 में हुई थी। कंपनी को दरअसल लोकसभा चुनाव और विधानसभा चुनावों के दौरान सर्वेक्षण करने के लिए जाना जाता है और इसी के जरिये उसने लगभग 8.5 करोड़ घरों तक पहुंचने का दावा किया है।

गुप्ता ने कहा है -' एग्जिट पोल या ओपिनियन पोल बाजार के अनुसंधान का हिस्सा होते हैं। हमारे पास सभी 25 करोड़ भारतीय परिवारों की समस्याओं को हल करने की एक दृष्टि है। यह एक महत्वाकांक्षी योजना है और निस्संदेह रूप से बहुत चुनौतीपूर्ण भी है।''

सेंटर फॉर वोटिंग ओपिनियन एंड ट्रेंड्स इन इलेक्शन रिसर्च, या सीवोटर ने भारत ही नहीं अमेरिका में भी चुनावी सर्वे का काम किया है। यशवंत देशमुख सीवोटर के निदेशक और संस्थापक संपादक हैं। सीवोटर इंडिया का कहना है कि इसमें 15 केंद्रीय बजट, 100 से अधिक राज्य चुनाव और 30 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम शामिल हैं। उसका दावा है कि मई 2016 में बंगाल, असम, तमिलनाडु और केरल में चुनाव हुए। सीवोटर तमिलनाडु के नतीजे की सही भविष्यवाणी करने वाली पांच मतदान एजेंसियों में से एकमात्र थी। इन बड़ी कंपनियों को देखकर देश भर में अनेकों चुनावी कम्पनियाँ और कथित रणनीतिकार खड़े हो गए हैं। यह बिजनेस चमक रहा है। लेकिन इससे राजनीतिक दलों के जमीनी नेताओं और कार्यकर्ताओं को बहुत कष्ट हो रहा है। अच्छे बुरे अनुभव से उनका भविष्य बने या बिगड़े, पता नहीं जनता का कितना भला होगा?

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक भरत पटेल द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस 11, प्रेस काम्प्लेक्स, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल से मुद्रित तथा 226, एमपी नगर जोन-2, भोपाल से प्रकाशित। संपादक — भरत पटेल, प्रबंध सलाहकार — भारती पटेल, संपादकीय सलाहकार — विष्णु कौशिक, सलाहकार संपादक - स्मिता पटेल, स्थानीय संपादक —संजय सक्सेना,
प्रकाशन से संबंधित समस्त समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार। समस्त न्यायिक कार्यवाहियों के लिए क्षेत्राधिकार भोपाल न्यायालय का रहेगा। रजि. नं. भोपाल डिवी. 48 म.प्र.। ई-मेल : dspbpl67@gmail.com, वेबसाईट: dainiksandhyaprakash.in

मंदसौर विधानसभा कांग्रेस प्रत्याशी विपिन जैन आज अपना नामांकन दाखिल करेंगे

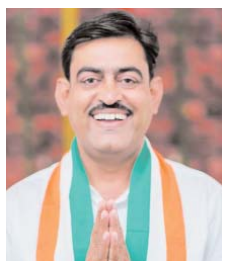

मंदसौर - पूरे मध्यप्रदेश में अपनी एक अलग ही पहचान बनाने वाले लोकप्रिय कांग्रेस प्रत्याशी श्री विपिन जैन मंदसौर विधानसभा से आज 26 अक्टूबर को अपना नामांकन दाखिल करेंगे द्य श्री जैन सुबह 10 बजे भगवान पशुपतिनाथ के दर्शन कर शिवना नदी के तट पर शिवना शुद्धिकरण का संकल्प लेकर जनकूपूरा स्थित चिंताहरण द्विमुखी गणेश मंदिर में दर्शन करेंगे द्य उसके पश्चात तलाई वाले बालाजी मंदिर दर्शन करने के पश्चात जिला कांग्रेस कार्यालय पहुंच कर कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ वाहनों द्वारा प्रातः 11 बजे नया कलेक्टर भवन पहुंच कर अपना नामांकन दाखिल करेंगे द्य श्री जैन के साथ जिला कांग्रेस प्रभारी श्रीमती अर्चना जायसवाल व कांग्रेस पार्टी के कई वरिष्ठजन साथ रहेंगे द्य नामांकन रैली को सफल बनाने की अपील मंदसौर शहर ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष डॉ राघवेंद्र सिंह तोमर,मंदसौर ग्रामीण ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष विकास दसोरा, दलोदा ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष बसंती लाल सोलंकी, मंडलम अध्यक्ष में सर्वश्री अजय सोनी, दशरथ सिंह राठौड़ डियर, पंकज जोशी, विजय जैन, शुभम कुमावत, विश्वनाथ सोनी, वकार खान,रमेश ब्रिजवानी,अजय मारू, नितेश सतीदासानी ने की है द्य यह जानकारी जिला कांग्रेस प्रवक्ता राजनारायण लाड़ ने दी

दशहरे पर लोगों को पान खिलाकर दी शुभकामनाएं

छतरपुर। छतरपुर विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी श्रीमती ललिता यादव ने मंगलवार की रात दशहरे के मौके पर अन्नपूर्णा रामलीला के मंच पर भारत माता की आरती की और मंदिर में पूजा अर्चना करके सबकी सुख समृद्धि की कामना की। इसके बाद गल्ला मंडी से रामगली बजरिया से होते हुए बाजार क्षेत्र से हटवारा तक जनसंपर्क करके व्यापारी भाइयों सहित आमजन को पान खिलाकर दशहरे की शुभकामना दीं। इस दौरान उन्होंने कहा कि जब आपके आर्शीवाद से मैं एक बार नगर पालिका अध्यक्ष और दो बार विधायक बनीं तब से अब तक हमेशा व्यापारी भाइयों के हर सुख दुख में सदैव एक पारिवारिक सदस्य की तरह उनके साथ रही हूं। ये रिश्ता इतना प्रगाढ और मजबूत है कि हम सभी जरूरत पडने पर एक दूसरे के काम आते रहे हैं। इस बार मैं फिर एक प्रत्याशी के रूप में आपसे सहयोग और समर्थन मांगने आई हूं। इसलिए मेरा आग्रह है कि आप सभी 17 नवंबर को कमल के फूल के सामने वाला बटन दबाकर छतरपुर में कमल खिलाकर फिर से सबकी सेवा करने का मौका दें। इस दौरान सभी व्यापारी भाइयों ने श्रीमती ललिता यादव के हाथों से पान खाकर उन्हें भारी मतों से जिताने के प्रति आश्वस्त भी किया है। इस जनसंपर्क के दौरान श्रीमती जवारे यात्रा में शामिल हुई। उन्होंने सिर पर जवारे रखकर महिलाओं के साथ देवी गीत गाये। साथ ही दशहरे के चल समारोह में भी सहभागिता की।

सूरजगंज इटारसी में पारंपरिक वेषभूषा में मनाया गया नवरात्रि गरबा महोत्सव

सूरजगंज गरबा नाइट में महिलाओ ने विशेष रूप से भारतीय पारंपरिक वस्त्रों को बढावा देकर गरबा महोत्सव मनाया, जिसमें विशेष रूप से माता रानी के पारंपरिक गानों भजनों पर गरबा किया गया, सूरजगंज गरबा नाइट में टीम के सभी लोगों ने मिलकर भारतीय गुजराती बंगाली परंपरा के को ध्यान में रखते हुए गरबा महोत्सव को आनंदमयी बनाया, सूरज गंज गरबा महोत्सव में अमनप्रीत कौर, रूबी अग्रवाल, कामाँक्षा , डाक्टर रुचि अग्रवाल मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित रहे. ईशान टाउन, श्री शारदा समिति और कामाँक्षा की ओर से पुरूस्कार वितरण किया गया। प्रोग्राम ओरेगनाइजर गुंजन ने बताया कि बेस्ट गरबा आउटफिट , बेस्ट गरबा मेकअप, बेस्ट गरबा डांस में 3 केटेगरी में पुरूस्कार वितरण किए गए और कहा की आगे भी ऐसे आयोजन करते रहेगें। कामाँक्षा की अंकिता चंद्रवंशी ने प्रोग्राम की सराहना करते हुए कहा की इस तरह के आयोजनों में हमारा सहयोग हमेशा रहेगा इससे नई पीढ़ी में जागरूकता का संदेश जाता है।

63 की उम्र में मोहन पाराशर ग्रीस में करेंगे देश का प्रतिनिधित्व

सीहोर। कुछ करने और सफल होने की कोई उम्र नहीं होती। जिला मुख्यालय के समीपस्थ ग्राम बिलकिसगंज निवासी 63 वर्षीय वेट लिफ्टर ने इस बात को सच कर दिखाया है। उन्होंने मात्र 13 साल वेट लिफ्टिंग शुरू की। अब 63 की उम्र में लगातार इंटरनेशनल प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक जीतकर एकबार फिर खुद को साबित करते आ रहे है। एक बार फिर आगामी 2 नवंबर को ग्रीस के एथेंस में होने वाली वेट लिफ्टिंग की मास्टर्स वर्ल्ड चैम्पियनशिप में देश का प्रतिनिधित्व करेंगे।

इस संबंध में मिली जानकारी के अनुसार 63 वर्षीय मोहन पाराशर किसी पहचान के मोहताज नहीं है। वेट लिफ्टिंग कोचिंग के साथ-साथ ही वह विश्व स्तर पर क्षेत्र का नाम रोशन करते हुए आ रहे है। उनका चयन आगामी दो नवंबर से पांच नवंबर तक ग्रीस के एथेंस में खेली जाने वाली वेट लिफ्टिंग वर्ल्ड चैम्पियनशिप में हुए है। इस संबंध में वेट लिफ्टिर श्री पाराशर ने बताया कि एथेंस में 60 से 64 आयु वर्ग एवं 89 किलोग्राम में देश के एक मात्र खिलाड़ी होंगे। वहं 30 अक्टूबर को ग्रीस के लिए रवाना होंगे। इससे पहले वर्ष 21 में आस्ट्रेलिया से कामनवेल्थ, 23 में वर्ल्ड कप से भारत के लिए स्पर्ण पदक जीत चुके है। इस मौके पर खिलाडियों के द्वारा उत्साह के साथ रवाना किया जाएगा।

कांग्रेस प्रत्याशी राजकुमार पटेल ने ली कार्यकर्ताओं की बैठक, महिला मोर्चा की महिलाओं से मिले पटवा

ओबेदुल्लागंज संवाददाता (सुरेश केवट) नगर में बुधवार को कांग्रेस के कार्यकर्ता बैठक का आयोजन किया गया जिसमें कांग्रेस उम्मीदवार राजकुमार पटेल के साथ समस्त मंडलम सेक्टर ब्लाक के कांग्रेस पदाधिकारी विशेष रूप से उपस्थित रहे इस दौरान भोजपुर से कांग्रेस उम्मीदवार राजकुमार पटेल ने उपस्थित पुरानी गलतियों से सबक लेकर हमें आगे की राह देखने की बात की उन्होंने कहा कि प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनने पर विकास की दौड़ में भोजपुर की भी अग्रणी भूमिका होगी कांग्रेस की सरकार बनने पर भोजपुर में विधुत समस्या का समुचित समाधान किया जायेगा इस चुनाव में कांग्रेस पार्टी जीत का परचम लहरायेगी ओर भोजपुर के समुचित विकास के लिए एक अच्छी कार्ययोजना बनायेगें मुझे पूरी आशा व विश्वास है कि कार्यकर्ताओं की मेहनत से इस बार भोजपुर में सुखद परिणाम अवश्य मिलेंगें कांग्रेस प्रत्याशी राजकुमार पटेल ने उपस्थित कार्यकर्ताओं को जीतेगें हम जीतेगा भोजपुर का मंत्र भी दिया। गुरुवार दोपहर एक बजे कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में राजकुमार पटेल अपने हजारों समर्थकों के साथ गौहरगंज में अपना नामांकन पत्र दाखिल करेगें।

पटवा ने किया ग्रामीण क्षेत्र का दौरा,,दूसरी ओर भोजपुर से भाजपा उम्मीदवार सुरेंद्र पटवा ने ग्रामीण क्षेत्र गुदावल बेगमपुरा घाटखेड़ी उमरावगंज का दौरा कर कार्यकर्ताओं से मुलाकात कर भाजपा को भारी बहुमत से जीत दिलाने की बात कही इस दौरान उन्होंने मंडीदीप ओबेदुल्लागंज में महिला मोर्चा की महिला कार्यकर्ताओं के साथ बैठक कर चुनावी तैयारियों का जायजा लिया।

वरिष्ठों ने बनाई अनोखी संस्था , हम 60 के साथ-साथ हैं

छतरपुर। गांधी आश्रम में गत दिवस वरिष्ठ नागरिकों की एक बैठक संपन्न हुई। बैठक में ऐसे लोगों को बुलाया गया जिनके बच्चे बाहर नौकरी कर रहे हों या पढ़ाई कर रहे हों और मां-बाप अकेले घर पर रह रहे हों।

बैठक का उद्देश्य था कि घर पर अकेले रह रहे मां-बाप की मन स्थिति बहुत खराब रहती हैं। हमेशा तनाव में रहते हैं मन में यह चिंता भी बनी रहती है कि हमें कुछ हो गया तो हमारे साथ कोई नहीं है हमारी सहायता के लिए कोई नहीं है हम अकेले हैं। इस अकेलेपन के तनाव से दूर करने के लिए यह संस्था बनाई गई। इसमें जितने भी सदस्य होंगे वे एक परिवार जैसे रहेंगे। सभी अलग-अलग घर में भले ही रह रहे हों लेकिन सब एक दूसरे से जुड़े रहेंगे और अपने सुख-दुख में भागीदारी बने रहेंगे। सबको यह महसूस हो कि वे अकेले नहीं है सब लोग साथ हैं। सभी मोबाइल से जुड़े रहेंगे और व्हाट्स एप में सक्रिय रहेंगे।

बैठक में सभी सदस्यों ने विचार व्यक्त किए और मदद के लिए कुछ युवाओं को भी जोड़ने की बात कही जो हमेशा मदद के लिए तैयार रहें। इस सेवा के लिए सेवा ही संकल्प समिति ने सहमति दी। संस्था के केएन सोमन ने बताया कि बैठक में जो लोग आए उन्हें इस संस्था के बारे में जानकारी दी गई और अधिक लोगों को जोड़ने के लिए सभी लोगों से प्रयास करने को कहा गया। अगली बैठक गांधी आश्रम में 24 नवंबर को शाम 4 बजे से होगी। इस संस्था की विशेषता यह है कि इस संस्था में कोई पद या पदाधिकारी नहीं है। बैठक में आरके मिश्रा, डॉ एमके तिवारी, आशा तिवारी, अरविंद खरे, अभिलाषा खरे, हरि ओम अग्रवाल, संतोष कुमार गुप्ता, लखन लाल असाटी, केएन सोमन, विमला सोमन, दिनेश कुमार खरे, संध्या श्रीवास्तव, स्मिता जैन, रहाना अंसारी, राजेंद्र कुमार खरे, रचना खरे और दमयंती पानी आदि ने भाग लिया।

मैं व्यापारियों का दर्द समझता हूं, उनके साथ हमेशा हूं:आलोक चतुर्वेदी

कांग्रेस प्रत्याशी ने किया बाजार क्षेत्र का भ्रमण

छतरपुर। छतरपुर विधानसभा के कांग्रेस प्रत्याशी आलोक चतुर्वेदी पज्जन भैया के द्वारा निरंतर अपने विधानसभा क्षेत्र में जनसंपर्क करते हुए हर वर्ग के लोगों को कांग्रेस से जोडने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसी क्रम में उन्होंने बुधवार को नगर के गल्लामण्डी, रामगली बजरिया, चौक बाजार, गोवर्धन टॉकीज क्षेत्र, शुक्लाना मोहल्ला आदि का भ्रमण करते हुए घर-घर जाकर जनता से आशीर्वाद मांगा। इस मौके पर विधायक आलोक चतुर्वेदी ने कहा कि हमें उधार खाना नहीं,दबाव बनाना नहीं, जमीन छुड़ाना नहीं। ये सभी काम आपके इस सेवक ने कभी नही किये। बल्कि हमेशा व्यापारियों की समस्या के समय उनके साथ खड़ा रहा। घर में घुसकर राजनीति नही की। सिर्फ पार्टी के नाम पर गुमराह करके वोट नही मांगे। हम खुद जीवन में व्यापार से जुड़े रहे इसलिए व्यापारियों का दुख दर्द अच्छे से समझते हैं। जिस तरह पिछले चुनाव में छतरपुर के व्यापारी समाज ने अपने इस सेवक पर

भरोसा जताया था उसी तरह इस बार भी अपने इस सेवक को विधानसभा भेजकर मजबूत बनाएं। मैं वचन देता हूँ। हमेशा आपकी लड़ाई लडूंगा।कोई आप पर जुल्म और अत्याचार करने की सोच भी नही पायेगा। आपको गुमराह करने वाले आएंगे और फिर कमीशनखोरी के लिए पांच साल राजनीति करेंगे। उन्होंने कहा कि छतरपुर विधानसभा की जनता को पार्टी, जाति, धर्म से ऊपर उठकर सेवा और परोपकार की राजनीति को अपना आशीर्वाद देना है। इस मौके पर व्यापारियों ने भी विधायक का जगह-जगह स्वागत किया।

न्यायालय का बड़ा फैसला- चिटफंड कंपनी के डायरेक्टर को 170 साल की सजा

सीहोर। जिला न्यायालय ने बड़ा फैसला सुनाते हुए रुपए का लालच देकर धोखाधड़ी करने वाले सांई प्रसाद चिट फंड कंपनी के डायरेक्टर बाला साहब भापकर को 170 साल की सजा और 9 लाख 35 हजार के जुर्माने से दंडित किया गया है। न्यायालय ने धारा चिट फंड अधिनियम में 5- 5 साल की सजा और निवेशकों की काउंटिंग में सजा सुनाई गई है। जिनमें 170 साल की सजा और 9 लाख 35 हजार का जुर्माना से दंडित किया गया है।

सहायक जिला अभियोजन अधिकारी प्रमोद अहिरवार ने मीडिया को जानकारी देते हुए बताया कि अभियुक्त बाला साहब भापकर एवं एजेन्टों ने वर्ष 2012 से लेकर दिनांक 2015 की अवधि में आपस में मिलीभगत करके एवं षडयंत्र करके सांई प्रसाद प्रापर्टी कंपनी लिमिटेड का अपने आपको चेयरमेन / डायरेक्टर / सीएमडी/ ऐजेन्ट बताकर सीहोर जिले के ग्राम आमला पानी थाना गोपालपुर के गांव के निवेशकों को साई प्रसाद कम्पनी में पैसा 5 साल में दुगना हो जाने का आश्वासन देते हुए एवं भरोसा दिलाते हुए निवेशकों से पैसा जमा कराया गया और पॉलिसियां दी गई। निवेशकों को दी गई पॉलिसियों परिपक्वता पूर्ण होने पर साई प्रसाद कम्पनी के कार्यालय में संपर्क किया गया तब पाया कि कम्पनी के कार्यालय पर ताले लगे थे। निवेशकों द्वारा आरोपीगण से सम्पर्क करने उनके द्वारा आश्वासन दिया किया उनका पैसा मिल जाएगा। जब निवेशको को उनका पैसा नहीं प्राप्त हुआ तो थाना गोपालपुर में फरियादी दयाराम के आवेदन पर से प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराई जिस पर से आरोपी सांई प्रसाद लिमिटेड कम्पनी/बाला साहब भापकर के विरूद्ध के विरूद्ध भादंसं 1860 की धारा 420 के अंतर्गत अपराध क्रमांक 17/20 पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। विवेचना अधिकारी निरी. ऊषा मरावी एवं निरी. हेमसिंह सिंघई के द्वारा प्रकरण का अनुसंधान किया गया एवं सम्पूर्ण अनुसंधान उपरांत समस्त आरोपी के विरूद्ध धारा 420/34, भादवि, धारा 6 मप्र निक्षेपकों के हितों का संरक्षण अधिनियम 2000 के अंतर्गत अभियोग-पत्र न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया। अभियोजन पक्ष द्वारा अभिलेख पर आई साक्ष्य एवं विधि के प्रावधानों के आधार पर बहस की जिससे सहमत होते हुए विशेष न्याायालय संजय कुमार शाही ने अभियुक्त आरोपी बाला साहब भापकर पिता केशवराव भापकर नि. साई दरबार बंगलो, चिंचबाड़ पूणे महाराष्ट्र को धारा 420 भादवि एवं धारा 6 निक्षेपकों के हितों का संरक्षण अधिनियम में क्रमश- 5-5 वर्ष (17 काउण्ट) कुल 170 वर्ष का सश्रम कारावास एवं कुल 9,35,000/- रूपये के अर्थदण्ड से दण्डित किया गया।

प्रेम जाल में फंसाकर नाबालिग की इज्जत को तार-तार करने वाले ग्रामीण युवक और उसके दो दोस्तों को 20-20 साल की कैद

सीहोर। नाबालिग को प्रेम जाल में फंसाने के बाद जबरदस्ती बाइक पर बैठाकर ले जाने और सामूहिक रूप से बलात्कार करने वले ग्रामीण युवक और उसके दो दोस्तों के खिलाफ कोर्ट ने कड़ी सजा सुनाई है। कोर्ट ने मामले में जघन्य एवं सनसनीखेज अपराध मानते हुए नाबालिग से बलात्कार करने वाले तीनों आरोपीगणों को 20-20 साल के सश्रम कारावास व दस-दस हजार रुपए अर्थदंड की सजा से दंडित किया है।

प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश सुरेश कुमार चौबे आष्टा ने प्रकरण में फैसला सुनाते हुए अभियुक्तगण गोलू उर्फ अंजुल पिता विक्रमसिंह परमार (25), बीनू उर्फ सद्दाम पिता इब्राहिम खॉ (29) एवं दीपू उर्फ रविन्द्र पिता लखन सिंह परमार (31) निवासीगण ग्राम अरनिया दाउद तहसील आष्टा जिला सीहोर को धारा 5एल/6 पॉक्सो एक्ट में 20-20 वर्ष का सश्रम कारावास एवं सात-सात हजार रुपए अर्थदंडएवं धारा 366 भादवि में 5-5 वर्ष का सश्रम कारावास एवं तीनं-तीन हजार रुपए अर्थदंड से दण्डित किया।

विशेष लोक अभियोजक, देवेन्द्र सिंह ठाकुर ने बताया गया कि की घटना का विवरण संक्षेप में यह है कि दिनांक 05 सितंबर 22 को अभियोक्त्री ने थाना उपस्थित होकर एक लेखिय आवेदन पत्र प्रस्तुत किया। जिसमें बताया कि उसके गांव के पास वाले गांव अरनिया दाउद का गोलू उर्फ अंजुल पिता विक्रमसिंह परमार हमारे गांव मे आता जाता रहता था, इसलिये मेरी उससे जान पहचान हो गई थी। आज से करीब एक साल पहले गोलू ने मुझे इंस्टाग्राम पर मैसेज किया था तो हमारी बातचीत होने लगी थी, फिर उसने मेरा मोबाइल नम्बर मांगा था तो मैने उसे अपनी चाची का मोबाइल नम्बर दिया था, फिर मेरी गोलू से फोन पर भी बातचीत होने लगी थी। गोलू उसके मोबाइल नम्बर से मुझे फोन लगाकर मुझसे बात करता था। पिछले साल अक्टूबर 2021 मे गोलू ने मुझे फोन पर प्रपोज किया और कहा की वो मुझसे प्यार करता है और मुझसे शादी करना चाहता है लेकिन मैने उसे मना कर दिया लेकिन इसके बाद भी वह बार बार मुझसे यही बोलता और मेरे मना करने पर वह मुझसे कहने लगा की यदि तूने मुझसे शादी के लिए हाँ नही कहाँ तो मै तेरी शादी किसी से नही होने दुंगा और तुझे व तेरे घर वालो को बदनाम कर दूंगा।

उसकी इन धमकियो से मैं बहुत डर गई थी तथा मैने उसे हाँ बोल दिया। फिर हमारी फोन पर बातचीत होती थी तथा मै कभी बाहर जाती थी तो वो गांव मे मुझसे मिलने आता रहता था। लेकिन दिनांक 19 अगस्त 22 को जन्माष्टमी के दिन मै गोलू से फोन पर बात कर रही थी तो मेरे पापा ने मुझे उससे बात करते हुए देख लिया था, फिर मेरे पापा ने मुझे डांटा तथा गोलू से बात करने से मना कर दिया था तथा मेरे पापा ने मुझे मेरे चाचा के साथ इन्दौर भेज दिया था, तो मेरी गोलू से बात नही हुई। मै दिनांक 03 सितंबर 22 के शाम को इन्दौर से अपनी चाची के साथ वापस अपने घर अरनिया राम आ गई थी। दिनांक 04 सितंबर के रात करीब 12 बजे मै पेशाब के लिये अपने घर के सामने रोड पर गई तथा पेशाब करने के बाद अपने घर के अंदर जा रही थी तभी गोलू उसके दो दोस्तो के साथ एक मोटर साइकल से वहाँ आ गया, गोलू ने मेरा मुहँ दबाया तथा उसके दोनो दोस्तो ने उसकी मदद की और वो तीनो मुझे उस बाइक मे बैठाकर जबरजस्ती उनके साथ ले गये, मै चिल्ला ना सकू इसलिये उन लोगो ने मेरा मुहँ एक काले रंग के कपडे से बांध दिया था, गोलू उन दोनो लडको को दीपू व बीनू नाम से बुला रहा था। वो तीनो मुझे लेकर जताखेडा जोड पर गये, वहाँ पर वो लोग मुझे एक खेत पर ले गये तथा सबसे पहले गोलू ने मेरे साथ जबरजस्ती शारीरिक संबंध बनाकर मेरा बलात्कार किया, इसके बाद उन दोनो लडको ने भी मेरे साथ जबरजस्ती शारीरिक संबंध बनाये और मेरा बलात्कार किया। इसके बाद वो तीनो मुझे लेकर वापस रोड पर आये तथा बाइक पर बैठा कर वो मुझे थोडी दूर ले गये, करीब 5 मिनट बाद ही वो लोग फिर टायलेट करने के लिये रुके तथा मुझे बाइक के पास ही खडा कर दिया, वो लोग थोडा दूर गये तो मै वहाँ से भाग कर आष्टा तरफ वाली रोड पर आ गई तो वो लोग मेरे पीछे आ ही रहे थे की मेरा भाई मुझे ढूंढता हुआ वहाँ पर आ गया, फिर मैने गोलू व उसके दोस्तो को मेरे भाई को बताया तो गोलू व उसके साथी वहाँ से बाइक पर बैठ कर भाग गये। फिर मेरा भाई मुझे उसकी मोटर साईकल से घर पर लेकर गया, फिर मैने अपने घर पर माता पिता, भाई व चाचा चाची को सारी बात बताई । फरियादी की उक्त रिपोर्ट पर से थाना आष्टा द्वारा अपराध क्रमांक-590/ 2022 अंतर्गत धारा 363, 366ए, 376 (घ), 506 भा.दं.सं एवं धारा 5जी/6 पॉक्सो एक्ट का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना उपरांत अभियोग पत्र न्यायालय में विशेष प्रकरण क्र 105/22 पर पेश किया गया ।न्यायालय द्वारा अभियोजन साक्ष्य एवं अंतिम बहस के दौरान अभियोजन के तर्को से सहमत होते हुए अभियुक्तिगणो को दोषसिद्ध पाते हुए धारा 5एल/6 पॉक्सो एक्ट में 20-20 वर्ष का सश्रम कारावास एवं सात-सात हजार रुपए अर्थदण्ड/ एवं धारा 366 भादवि में 5-5 वर्ष का सश्रम कारावास एवं तीन-तीन हजार रुपए अर्थदंड से दंडित किया।

पहले आओ पहले पाओ के सिद्धांत पर मिलेगी, आमसभा, रैली आदि के अनुमति

छतरपुर। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार छतरपुर जिले में विधानसभा निर्वाचन में राजनैतिक पार्टियों, उम्मीदवारों को आमसभा, रैली, हैलीपैड आदि की अनुमति पहले आओ पहले पाओ के सिद्धांत पर दी जाएगी।

विधानसभा चुनाव के दौरान राजनैतिक दलों और प्रत्याशियों को सभा के लिये मैदान की अनुमति लेने, रैली निकालने, लाउडस्पीकर, वाहन एवं हेलीपैड के लिये अनुमति लेने अब निर्वाचन अधिकारी के कार्यालय जाने की जरूरत नहीं पडेगी। वे इन अनुमतियों के लिये ऑनलाइन आवेदन भी कर सकते हैं। चुनाव आयोग ने पारदर्शिता के मद्देनजर किसी भी कार्य की अनुमति लेने के लिये राजनैतिक दलों और अभ्यर्थियों को पहले आओ पहले पाओ की सुविधा दी है। जो पहले ऑनलाइन आवेदन करेगा, उसे पहले अनुमति दी जायेगी। इसके लिये सुविधा एप पर तय समय के पूर्व ऑनलाइन आवेदन करना होगा। आवेदन करने के बाद उपलब्धता अनुसार उन्हें अनुमति दी जायेगी। आवेदन ऑनलाइन समस्त एनओसी के साथ प्रस्तुत करना होगा। एनओसी हेतु संबंधित विभागों के अधिकारी रिटर्निंग ऑफीसर के यहां पर कार्यालयीन समय पर उपस्थित रहेगें। अनुमति के लिए आवेदन ऑफलाइन भी दे सकते है।

आवेदनों के निराकरण की स्थिति कंट्रोल रूम से दूरभाष पर बताने के निर्देश

छतरपुर। कलेक्टर संदीप जी.आर. ने मंगलवार को जिला पंचायत सभाकक्ष में जिला स्तरीय जनसुनवाई की। आम लोगों से प्राप्त 121 आवेदनों को संबंधित विभागीय अधिकारियों को सौंपा गया। कलेक्टर ने विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिये कि जनसुनवाई में आई शिकायतों को प्राथमिकता से हल करें और विभाग आवेदक को प्रत्युत्तर दें। कलेक्टर के निर्देशों के परिपालन में जनसुनवाई में आवेदकों के शिकायती आवेदन निःशुल्क लिखे गए।

कलेक्टर ने लोकसेवा प्रबंधक को निर्देशित किया कि जनसुनवाई में आने वाले आवेदनों के निराकरण की स्थिति की जानकारी संबंधित व्यक्ति को कंट्रोल रूम के माध्यम से दूरभाष पर दी जाए। उन्होंने एसडीएम एवं तहसीलदात को कब्जा दिलाने के संबंध में आवेदनों की मौके पर परीक्षण कर निराकरण करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने दिव्यांगों की समस्याओं को अलग से समक्ष में जाकर सुना। जनसुनवाई में एडीएम नमः शिवाय अरजरिय, एसडीएम बलवीर सिंह रमन सहित जिला स्तरीय विभागीय अधिकारियों उपस्थित रहे। जनसुनवाई में शिक्षा, राजस्व, पुलिस, नगरीय निकाय, ग्रामीण विकास, विद्युत मण्डल, स्वास्थ्य, खाद्य, आदिम जाति, पीओडूडा, पुलिस विभाग, सामाजिक न्याय, महिला एवं बाल विकास सहित विभिन्न शिकायती आवेदन प्राप्त हुये।

विकास के लिए अपना आशीर्वाद देकर छतरपुर में कमल खिलायें: ललिता यादव

शहर के सिद्धगनेशन मार्ग, टौरिया मोहल्ला, साहू मोहल्ला में किया जनसंपर्क

छतरपुर। भाजपा की प्रदेश उपाध्यक्ष, पूर्व मंत्री और छतरपुर विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी श्रीमती ललिता यादव ने दूधनाथ मंदिर में पूजा अर्चना करके छतरपुर शहर में जनसंपर्क किया। इस दौरान उन्होंने शहर के वार्ड क्रमांक 4 में सिद्धगनेशन मार्ग, टौरिया मोहल्ला और साहू मोहल्ला में घर-घर जाकर मतदाताओं से विजयश्री का आर्शीवाद मांगा। भाजपा प्रत्याशी श्रीमती ललिता यादव ने घर-घर जाकर जनसंपर्क करते हुए लोगों से कहा छतरपुर अंचल के सभी लोग मेरे पारिवारिक सदस्य की तरह हैं। मैं आप सभी की दिल से आभारी हूं कि आप सभी ने मुझे एक बार नगर पालिका अध्यक्ष और दो बार विधायक बनाकर अपना आर्शीवाद दिया है। इन तीनों कार्यकाल में पूरे 15 साल तक मैने छतरपुर शहर सहित पूरे विधानसभा क्षेत्र के विकास के लिए योजनाबद्ध तरीके से ईमानदारी से कार्य करके आपकी सेवा की है। इस बार भाजपा ने चौथी बार मुझ पर भरोसा जताकर टिकट दिया है। मेरा आपसे हाथ जोडकर आग्रह है कि पहले की तरह इस बार भी आप सभी अपनी इस बहन, बेटी, बहू पर भरोसा करके विजयश्री का आर्शीवाद देकर छतरपुर में कमल खिलाइयेगा। श्रीमती ललिता यादव ने लोगों को केन्द्र और राज्य सरकार की जनहितकारी योजनाओं के बारे में बताते हुए सभी से डबल इंजन की सरकार बनाए रखने के लिए भाजपा को समर्थन देने की बात कही। जनसंपर्क के दौरान महिलाओं ने बडी आत्मीयता से उन्हें गले लगाकर भरपूर समर्थन देने का भरोसा दिलाया है।

वेस्टीज मार्केटिंग ने पेश किए वीस्लिम शेक के नए और बेहतर फ्लेवर

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत की अग्रणी घरेलू डायरेक्ट सेलिंग कंपनी वेस्टीज मार्केटिंग प्राइवेट लिमिटेड ने अपने वेस्टीज वीस्लिम शेक के नए वनीला फ्लेवर और बेहतरीन आम फ्लेवर को पेश करने का एलान किया है। मौजूदा हेल्दी सप्लीमेंट्स की श्रेणी में इन उत्पादों को जोड़ा गया है।इस भागमभाग वाली दुनिया में स्वयं को स्वस्थ रखना और उचित प्रकार से पोषण प्राप्त करना बहुत जरूरी है। हालांकि, अक्सर हम खानपान की गलत आदतों, आलसभरी लाइफस्टाइल और तनाव में फंसे रहते हैं, जिससे मोटापा और इससे संबंधित अन्य समस्याएं होने लगती हैं। आज की दुनिया में मोटापा तेजी से बढ़ रहा है और इसलिए यह ज्यादा जरूरी है कि हम अपने वजन को नियंत्रित रखें। 2019 से 2021 के बीच देश में हुए नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे के मुताबिक, इस समय हर चार में से एक व्यक्ति मोटापे का शिकार है। यह स्थिति निसंदेह चिंता बढ़ाने वाली है।अक्सर अस्वास्थ्यकर भोजन करने, शारीरिक गतिविधियां नहीं करने और सही से नींद नहीं लेने के कारण मोटापे की समस्या होती है। इन सभी कारणों से न केवल वजन बढ़ने की समस्या होती है, बल्कि दिल की बीमारियों, डायबिटीज, जोड़ों के दर्द और अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का खतरा भी बढ़ जाता है।

आरसीसीपीएल द्वारा भक्तों को तम्बू सुविधा प्रदत्त

मैहर, एजेंसी। आरसीसीपीएल मैहर आईयू (एमपी बिड़ला ग्रुप) प्रत्येक नवरात्रि में तीर्थयात्रियों मैहर रेलवे स्टेशन पर के लिए तम्बू की व्यवस्था करता रहा है। मैहर शारदा माता मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। तीर्थयात्री नियमित रूप से मंदिर में आते हैं। नवरात्रि के अवसर पर शारदा माता मंदिर में आने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या बढ़ जाती है। कंपनी की सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में, मैहर रेलवे स्टेशन पर आश्रय के लिए तम्बू की सुविधा प्रदान की जाती है। मैहर में आने वाले तीर्थयात्रियों के लिए प्राथमिक चिकित्सा उपचार के लिए मेडिकल टीम और किसी भी आपातकालीन चिकित्सा के लिए मोबाइल मेडिकल वैन मौजूद रहता है। नवरात्रि मेला 15 अक्टूबर से शुरू होकर 23 अक्टूबर 2023 (9 दिन) तक चला। कवर किए गए कुल मरीजों की संख्या 2889 थी, जो ज्यादातर बुखार, खांसी, सिरदर्द और शरीर दर्द से पीड़ित थे और 408 मरीजों को प्राथमिक उपचार दिया गया था। 4 आपातकालीन मामले थे जिन्हें प्राथमिक उपचार के बाद आगे के इलाज के लिए अस्पताल रेफर किया गया ।

शक्ति पंप्स को मिला छठा पेटेंट

पीथमपुर, एजेंसी। एनर्जी एफिशिएंट पंप्स और मोटर्स के अग्रणी निर्माता शक्ति पंप्स (इंडिया) लिमिटेड, को स्टैक असेंबली फॉर परमानेंट मैगनेट रोटर के आविष्कार के लिए भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय ने शक्ति पंप्स को पेटेंट प्रदान किया है। यह पेटेंट 20 वर्षों की अवधि के लिए घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों क्षेत्राधिकारों में वैध रहेगा। इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) मोटर टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में की गई अभूतपूर्व रिसर्च से इलेक्ट्रिक वाहनों के परफार्मेंस और एफिशियंसी में क्रांतिकारी बदलाव आएगा। शक्ति पंप्स इंडिया लिमिटेड के चेयरमेन दिनेश पाटीदार ने इस उपलब्धि पर कहा कि 'हमारी ईवी मोटर तकनीक में एफिशिएंसी में सुधार करने और इलेक्ट्रिक वाहनों की रेंज का विस्तार करने की क्षमता है जिससे वह एक सिंगल चार्ज में लम्बी दूरी तय कर पाएगी। इस तकनीक से पावर फैक्टर में सुधार होगा, साथ ही लॉस में कमी आएगी और ऑपरेटिंग तापमान कम होने से लोड कैपेसिटी और टॉर्क बढ़ेगा। जिसके परिणामस्वरुप खाड़ी इलाकों एवं मुश्किल स्थानों में ई-वाहनों की हैवी लोड उठाने की क्षमता बढ़ेगी व इसे चलाना आसान होगा।

बजाज फिनसर्व एसेट मैनेजमेंट ने लॉन्च किया बजाज फिनसर्व बैंकिंग एंड पीएसयू फंड

मुंबई/पुणे, एजेंसी। बजाज फिनसर्व एसेट मैनेजमेंट ने अपने चौथे फिक्स्ड इनकम इन्वेस्टमेंट प्रोडक्ट बजाज फिनसर्व बैंकिंग एंड पीएसयू फंड के लॉन्च की घोषणा की है। यह निवेशकों को कमाई का मौका देने के लिए डिजाइन किया गया निवेश का एक अवसर है। इस फंड का लक्ष्य निवेशकों को फिक्स्ड इनकम (निश्चित आय) में निवेश करने का अवसर देना है, साथ ही यह सुनिश्चित करना है कि उनके निवेश पोर्टफोलियो में हाई लेवल की क्रेडिट क्वालिटी हो। यह फंड स्थिर रिटर्न की संभावना को बढ़ाते हुए क्रेडिट रिस्क को कम कर सकता है। फंड को यील्ड कर्व पर चलने के लिए डिजाइन किया गया है, जिसमें लगभग 5-साल की मैच्योरिटी प्रोफाइल पर जोर दिया गया है। इससे फंड के प्रदर्शन की क्षमता बेहतर होती है और मौजूदा बाजार में यह निवेशकों को बेहतर रिस्क रिवार्ड प्रस्ताव प्रदान करता है, जहां यील्ड कर्व काफी हद तक फ्लैट है। यह निवेश योजना निवेशकों को उभरते बाजार बांड इंडेक्स में भारत के शामिल होने जैसे फैक्टर के चलते अपेक्षा के अनुसार कर्व के नीचे की ओर खिसकने और संभावित कैपिटल (पूंजी) की वैल्यू में बढ़ोतरी से लाभ उठाने का अवसर प्रदान करती है।

एचडीएफसी बैंक ने फेस्टिव ट्रीट्स लॉन्च की

मुंबई, एजेंसी। भारत के सबसे बड़े निजी क्षेत्र के बैंक, एचडीएफसी बैंक ने सुपरफास्ट बैंकिंग सेवाओं और कार्ड और ईजी ईएमआई पर 10,000+ ऑफर के साथ अपने वार्षिक अभियान - फेस्टिव ट्रीट्स के लॉन्च की घोषणा की। चार सफल अभियानों के बाद, इस वर्ष की थीम इस त्योहार नो इंतज़ार है, जिसका अर्थ है कि इस त्योहारी सीज़न में कोई इंतज़ार नहीं है। तत्काल सेवाओं की पेशकश के अलावा, बैंक इस त्योहारी सीजन के दौरान खरीदारी को सभी उपभोक्ताओं के लिए सुखद और सुलभ बनाने के लिए खातों, ऋण, कार्ड, ईजी ईएमआई, उपभोक्ता ऋण, कार्डलेस ईजी ईएमआई और अन्य उत्पादों पर कई ऑफर चलाएगा। फेस्टिव ट्रीट्स के तहत, वेतनभोगी व्यक्तियों और व्यवसाय मालिकों सहित सभी मौजूदा और गैर-बैंक ग्राहक ऑफ़र का लाभ उठा सकते हैं। बैंक घरों, वाहनों, व्यवसायों, व्यक्तिगत जरूरतों और अधिक के लिए रियायती ब्याज दरों और प्रसंस्करण शुल्क पर एक्सप्रेस ऋण की पेशकश कर रहा है। इसके अलावा, बैंक का ऐप्पल, सैमसंग, एलजी, सोनी, हायर, एचपी, एसर, आईकेईए, होम सेंटर, अमेज़ॅन, लाइफस्टाइल और कई अन्य प्लेटफॉर्मों जैसे शीर्ष ब्रांडों और व्यापारियों के साथ विशेष गठजोड़ किया है। इसके अलावा ग्राहकों के पास एचडीएफसी बैंक कार्ड और कार्ड उपभोक्ता ऋण पर ईजी ईएमआई विकल्पों का उपयोग करके 50,000 रुपये तक बचाने का मौका है। एचडीएफसी बैंक के मुख्य विपणन अधिकारी, श्री रवि संथानम ने कहा, फेस्टिव ट्रीट्स अभियान इस उत्सव के मौसम के दौरान खुशियाँ फैलाने के हमारे समर्पण का प्रतीक है। आकर्षक डील्स और ऑफर्स का इंतज़ार खत्म हो गया है।

नई शरारतों के साथ ओबोचामा का ड्रामा वापस आया!

मुंबई, एजेंसी। प्राथमिक विद्यालय का वह शरारती, लाड़ला और अमीर बच्चा कौन है जो मिठाइयों के प्रति अपने प्रेम और अपने प्रफुल्लित करने वाले कारनामों के लिए जाना जाता है जी हाँ, वह है ओबोचामा। बच्चों का चहेता ओबोचामा-कुन नए एपिसोड्स के साथ फिर से वापस आ रहा है, और इस बार दर्शक यह शो देखकर एक बार फिर अपनी हँसी रोक नहीं पाएंगे। इसकी शुरुआत केवल सोनी ये ! पर हो रही है। एक तरफ़ मिठाइयों से ओबोचामा-कुन के प्यार की कोई सीमा नहीं, तो दूसरी तरफ़ उसके मज़ेदार और मनोरंजक दोस्त इस सीरीज़ को बहुत दिलचस्प बना रहे हैं। अपनी कछुओं की सेना और विचित्र दोस्तों के साथ चामा की अद्भुत कल्पना और असाधारण कारनामे देखकर आप चकित रह जाएंगे। तो हँसी-मज़ाक़ से भरपूर यह मीठा अनुभव लेने के लिए तैयार हो जाइए केवल सोनी ये ! पर !

किसानों को पीएम मोदी का गिफ्ट, फर्टिलाइजर सब्सिडी को कैबिनेट मंजूरी

नई दिल्ली। मोदी सरकार ने देश के किसानों को दिवाली से पहले बड़ा गिफ्ट दिया है। सरकार ने फॉस्फेट और पोटाश वाले खादों पर 22303 करोड़ रुपए की सब्सिडी को मंजूरी दे दी है। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने यह जानकारी दी। इस सब्सिडी के बाद देश के किसानों को रबी की फसल के लिए सबसे जरूरी डीएपी खाद अब 1350 रुपए प्रति बोरी मिलेगी।

केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में किसानों के हित में फैसला किया गया है। इंटरनेशनल लेवल पर खाद के दाम बढ़ने के बावजूद किसान हितैषी सरकार ने भारत के किसानों के पक्ष में यह मंजूरी दी है। अनुराग ठाकुर ने कहा कि रबी की सीजन में नाइट्रोजन के लिए 47.2 रुपए प्रति किलो, सल्फर के लिए 1.89 रुपए प्रति किलो की सब्सिडी दी जाएगी। किसानों के लिए कुल 22303 करोड़ रुपए की सब्सिडी मंजूर की गई है। खाद की कीमतें क्या होंगी- किसानों को डीएपी 1350 रुपए प्रति बोरी मिलेगी। नाइट्रोजन फास्फोरस और पोटाश 1470 रुपए प्रति बोरी मिलेगा। डीएपी पर कुल 4500 रुपए प्रति टन की सब्सिडी दी जा रही है।

केंद्र सरकार ने सब्सिडी पर क्या कहा: केंद्र सरकार की तरफ से जारी बयान में कहा गया है कि खाद विनिर्मिताओं और आयातकों के माध्यम से किसानों को सब्सिडाइज्ड कीमतों पर खाद उपलब्ध कराया जाएगा। सरकार खादो के लिए 25 ग्रेड उपलब्ध करा रही है। खाद पर यह सब्सिडी 2010 से एनबीएस स्कीम के तहत दी जा रही है। इसी बीच तमिलनाडु सरकार ने 1 सरकारी कर्मचारियों के लिए महंगाई भत्ता 4 प्रतिशत तक बढ़ा दिया है। तमिलनाडु सरकार के फैसले से राज्य सरकार के कर्मचारी, शिक्षक, पेंशनधारियों को यह लाभ 1 जुलाई से लागू किया जा रहा है।

बासमती चावल के निर्यातकों को मिलेगी राहत, मोदी सरकार कर रही तैयारी

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्र सरकार ने बासमती चावल के निर्यातकों को राहत देने का फैसला किया है। सरकार ने बासमती चावल के लिए न्यूनतम निर्यात मूल्य को 1,200 डॉलर से घटाकर 950 डॉलर प्रति टन कर दिया है। मामले से जुड़े एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। हालांकि इसकी अधिसूचना अभी जारी नहीं हुई है। केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल और निर्यातकों के बीच हाल ही में इस मुद्दे पर व्यापक चर्चा हुई थी। चावल निर्यातक संघ का कहना था कि ज्यादा एमईपी लगाने से भारत का बासमती चावल निर्यात कम हो गया है, जिससे काफी नुकसान हो रहा है। पीयूष गोयल ने एमईपी की समीक्षा का आश्वासन दिया था।

इससे पहले केंद्रीय खाद्य सचिव संजीव चोपड़ा ने कहा था कि सरकार सक्रिय रूप से न्यूनतम निर्यात मूल्य की समीक्षा कर रही है और उचित समय पर सही निर्णय लिया जाएगा। तब तक मौजूदा व्यवस्था लागू रहेगी।

गौरतलब है कि केंद्र सरकार ने चावल की घरेलू आपूर्ति को बढ़ावा देने और कीमतों पर अंकुश लगाने के लिए अगस्त में बासमती चावल पर 1200 डॉलर प्रति टन के एमईपी की शर्त लगाई थी। अक्तूबर में भी इसमें कोई बदलाव नहीं किया गया था। चावल निर्यातक संघ इस दर को घटाकर लगभग 850 अमेरिकी डॉलर प्रति टन करने की मांग कर रहा था।

बता नें मोदी सरकार ने 14 अक्टूबर को बासमती पर निर्यात प्रतिबंध को अगली सूचना तक बढ़ा दिया था, जिसका किसान और निर्यातक विरोध कर रहे थे। निर्यातक संघ का कहना था कि ऊंची कीमत ने भारतीय खेप को अप्रतिस्पर्धी बना दिया है। भारत और पाकिस्तान बासमती चावल के प्रमुख उत्पादक हैं लेकिन इस प्रतिबंध से भारत वैश्विक बाजार खो रहा है।

खुल रहा एक और आईपीओ, 329 से 346 रुपये है प्राइस बैंड

नई दिल्ली, एजेंसी। एक और आईपीओ दांव लगाने के लिए खुल गया है। यह ब्लू जेट हेल्थकेयर का आईपीओ है। कंपनी का आईपीओ 25 अक्टूबर को सब्सक्रिप्शन के लिए खुला है और यह 27 अक्टूबर तक ओपन रहेगा। ब्लू जेट हेल्थकेयर के आईपीओ का प्राइस बैंड 329-346 रुपये है। कंपनी के आईपीओ को ग्रे मार्केट में पॉजिटिव रिस्पॉन्स मिल रहा है। ग्रे मार्केट में ब्लू जेट हेल्थकेयर के शेयर करीब 20 पर्सेंट के प्रीमियम पर ट्रेड कर रहे हैं। फार्मास्युटिकल्स कंपनी ब्लू जेट हेल्थकेयर के आईपीओ का प्राइस बैंड 329-346 रुपये है। कंपनी के शेयर ग्रे मार्केट में 63 रुपये के प्रीमियम पर ट्रेड कर रहे हैं। अगर कंपनी के शेयर 346 रुपये के अपर प्राइस बैंड पर अलॉट होते हैं तो ब्लू जेट हेल्थकेयर के शेयर 409 रुपये के करीब लिस्ट हो सकते हैं। यानी, कंपनी के आईपीओ में पैसा लगाने वाले निवेशकों को लिस्टिंग वाले दिन ही करीब 20 पर्सेंट का फायदा हो सकता है। कंपनी के शेयर बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में लिस्ट होंगे। आईपीओ में ब्लू जेट हेल्थकेयर के शेयरों का अलॉटमेंट 1 नवंबर 2023 को फाइनल हो सकता है। वहीं, कंपनी के शेयर 6 नवंबर को एक्सचेंज में लिस्ट हो सकते हैं। कंपनी के आईपीओ में रिटेल इनवेस्टर्स कम से कम 1 लॉट और अधिकतम 13 लॉट के लिए दांव लगा सकते हैं। कंपनी के आईपीओ की 1 लॉट में 43 शेयर हैं। यानी, रिटेल इनवेस्टर्स को कम से कम 14878 रुपये का इनवेस्टमेंट करना होगा। ब्लू जेट हेल्थकेयर की शुरुआत 1968 में हुई थी।

5 हजार से खड़ी कर दी 11 सौ करोड़ की कंपनी

बच्चों को गंदे पानी से हुई बीमारियां हुईं तो आरओ बनाने की ठानी

नई दिल्ली, एजेंसी। कुछ लोग होते हैं, जो समस्याओं से मुंह फेर कर निकल जाते हैं, बस अपना काम निकलना चाहिए। कुछ लोग होते हैं, तो समस्याओं को देखकर गुस्सा होते हैं और दूसरों को कोसते हैं। वहीं, कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो समस्याओं की जड़ तक जाते हैं और उसका सॉल्यूशन निकाल कर समाज को देते हैं। महेश गुप्ता इनमें से तीसरे वाले हैं। ढ्ढ्ढ्ञ कानपुर से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बाद सरकारी कंपनी इंडियन ऑयल में उनकी ऑफिसर वाली नौकरी थी। लेकिन लाइफ में अचानक कुछ ऐसा हुआ कि उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ी। उनके बेटे बीमार पड़ गए थे।

महेश गुप्ता के बच्चों को बार-बार ज्वाइंडिस हो रहा था। डॉक्टर के अनुसार गंदे पानी की वजह से उनके बच्चे बार-बार बीमार हो रहे थे। इससे महेश गुप्ता काफी परेशान थे। गंदे पानी की समस्या का सॉल्यूशन खोजना उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती बन गई थी। इसके बाद उन्हें कुछ ऐसा सूझा जिसने ना केवल उनके बच्चों को ठीक किया, बल्कि इसके साथ ही कैंट आरओ शुरू करने की प्रेरणा भी मिली।गुप्ता मार्केट से वाटर प्यूरिफॉयर लेकर आए, लेकिन वो इससे संतुष्ट नहीं हुए। क्योंकि बाजार में मिलने वाले आरओ अल्ट्रावायलेट टेक्नोलॉजी पर बेस्ड थे। इस कारण वे पानी को पूरी तरह से साफ नहीं कर पाते थे। अब वे अपना इंजीनियरिंग दिमाग चलाने लगे। उन्हें खुद के रिवर्स ऑस्मोसिस पर आधारित प्यूरिफायर बनाने का आइडिया आया। साल 1998 में उन्होंने आरओ बनाने का काम शुरू किया। उन्होंने अपनी कंपनी का नाम केंट आरओ रखा।

महेश ने केंट आरओ कंपनी की शुरुआत सिर्फ 5 हजार रुपये से की थी। बिक्री के लिए फाइनल प्रोडक्ट बनकर तैयार हुआ तो शुरुआत में एक आरओ की कीमत 20 हजार रुपये रखी गई। यह बाजार में मौजूद दूसरे आरओ से महंगा था। लेकिन कैंट के फायदों को देखते हुए ग्राहकों का भरोसा बढ़ता चला गया। धीरे-धीरे कंपनी चल निकली।

साधना नाइट्रो केम लिमिटेड नाइट्रोबेंजीन से पैरा एमिनोफेनॉल बनाने वाला दुनिया का दूसरा प्लांट बना

मुंबई, एजेंसी। साधना नाइट्रो केम लिमिटेड बीएसईः 506642 और एनएसई) दोनों पर सूचीबद्ध है, और वर्तमान में सार्वजनिक रूप से सूचीबद्ध कंपनी के रूप में अपना 50वां वर्ष मना रही है। साधना नाइट्रो केम लिमिटेड (एसएनसीएल) को यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि कंपनी को पैरा एमिनोफेनॉल (पीएपी) का उत्पादन स्थापित करने के लिए महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (एमपीसीबी) से सहमति मिल गई है। इसके अलावा, कंपनी को अपने पैरा एमिनोफेनॉल (पीएपी) प्लांट में कमर्शियल प्रोडक्शन के सफल ट्रांजिशन की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है, जो अब लगातार मोड में ऑपरेट कर रहा है। उल्लेखनीय रूप से, इस फैसिलिटी से नाइट्रोबेंजीन से पैरा एमिनोफेनॉल बनाने वाला यह दुनिया का दूसरा प्लांट है।

पैरा नाइट्रो क्लोरो बेंजीन से इसके निर्माण की तुलना में नाइट्रोबेंजीन से पैरा एमिनोफेनॉल का उत्पादन कई महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करता है। पैरा नाइट्रो क्लोरो बेंजीन मेथड सब्स्टैन्शल एफ्लूअन्ट प्रोडक्शन की तरफ इंगित करती है, जबकि नाइट्रोबेंजीन एप्रोच ग्रीन केमिस्ट्री प्रिन्सिपल के साथ एलाइनमेंट में होता है, जिससे ज़ीरो प्रवाह उत्पन्न होता है। विशेष रूप से, पैरा नाइट्रो क्लोरो बेंजीन (पीएनसीबी) प्रक्रिया के परिणामस्वरूप विभिन्न क्लोरीन-बेस्ड कन्टैमनन्ट निकलते हैं, विशेष रूप से पैरा क्लोरो एनिलिन (पीसीए), एक पदार्थ जो अपने हानिकारक प्रभावों के कारण बढ़ते प्रतिबंधों का सामना कर रहा है। इसके विपरीत, नाइट्रोबेंजीन मेथड किसी भी क्लोरीन-बेस्ड सामग्री का उपयोग करने से बचती है, जिससे प्रोडक्ट पैरा क्लोरो एनिलिन और अन्य हानिकारक अशुद्धियों से मुक्त हो जाता है।

इसके, प्लांट को बैच मोड में ऑपरेट करते हुए जून 2022 में प्रभावी ढंग से चालू कर दिया गया। प्लांट की स्टेबिलिटी और प्रोडक्ट क्वॉलिटी सुनिश्चित करने के लिए, कंपनी ने निरंतर प्रोडक्शन मोड में बदलाव करते हुए 100 से अधिक बैच चलाए। बैच से निरंतर प्रोडक्शन पर स्विच करने के लिए वेसल (जहाज) एलाइनमेंट, पाइपिंग और इंस्ट्रूमेंटेशन में सावधानीपूर्वक एडजस्टमेंट की आवश्यकता हुई, यह प्रॉसेस छह महीने तक चली।

निरंतर मोड शुरू करने पर, साधना नाइट्रो केम लिमिटेड ने तुरंत सफलता हासिल की, प्लांट को स्टेबल किया और अपने पहले से टार्गेट किए थ्रूपुट और क्वॉलिटी स्टेंडर्ड को पूरा किया। अपनी क्षमताओं का विस्तार करने से पहले, साधना नाइट्रो केम लिमिटेड का प्राथमिक लक्ष्य हमारे क्वॉलिटी स्टेंडर्ड को और ऊपर उठाना था, जिससे यह ग्लोबल कस्टमर्स के ब्रॉडर स्पेक्ट्रम को पूरा करने में सक्षम हो सके।

कंपनी ने अंतर्राष्ट्रीय ग्राहकों की मांगों को पूरा करने के लक्ष्य के साथ अपने उत्पाद की विशिष्टताओं को बेहतर बनाने के लिए अतिरिक्त चार महीने समर्पित किए। इन ग्राहकों के पास अक्सर कड़े और अनेक क्वॉलिटी स्टेंडर्ड होते हैं, क्योंकि प्रोडक्ट का उपयोग न केवल जेनेरिक ओवर-द-काउंटर पेरासिटामोल में किया जाता है, बल्कि प्रिस्क्रिप्शन दवाओं में भी किया जाता है।

साधना नाइट्रो केम लिमिटेड को यह बताते हुए खुशी हो रही है कि इसकी गुणवत्ता में वृद्धि, जो इसकी पहली बैच मैन्युफैक्चरिंग मोड में हासिल की गई थी, अब चीन सहित इसके किसी भी ग्लोबल प्रतिस्पर्धियों द्वारा निर्धारित स्टेंडर्ड से आगे निकल गई है। पैरा एमिनोफेनॉल (पीएपी) का यह प्रीमियम ग्रेड अब ग्लोबल क्लाइंट द्वारा मान्यता प्राप्त और अप्रूव है। कंपनी ने क्वॉलिटी और प्रोडक्शन थ्रूपुट के अपने टार्गेट लेवल हासिल कर लिए हैं। इसके अलावा, यह अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू दोनों ग्राहकों सहित ग्राहकों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए अपने उत्पादों की आपूर्ति को धीरे-धीरे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

रुशिल डेकोर ने वीआईआर एमडीएफ के लिए एआई-जनरेटेड टीवी विज्ञापन लॉन्च किया

अहमदाबाद/मुंबई, एजेंसी। अग्रणी लैमिनेट और एमडीएफ पैनल बोर्ड कंपनी, रुशिल डेकोर (बीएसई- 533470, एनएसई- रुशिल) ने अपने मुख्य संदेश एमडीएफ का मतलब है वीआईआर एमडीएफके साथ अपना एआई निर्मित टेलीविजन विज्ञापन लॉन्च किया है।

यह कंपनी ग्राहकों से बेहतर संपर्क विकसित करने के लिए सदैव तत्परता से नई टेक्नोलॉजीज़ को अपनाती रही है। इन त्योहारों पर कंपनी ने अपने वीआईआर एमडीएफटीवी विज्ञापन के लिए एमडीएफ सेगमेंट में पहली बार एआई टेक्नोलॉजी का उपयोग किया है।

इस नए टीवीसी में एमडीएफ की शक्ति दिखाई गई है, जो प्लाईवुड एवं अन्य वुड-आधारित पैनलों के मुक़ाबले बेहतर विकल्प है। 'एमडीएफ का मतलब है वीआईआर एमडीएफ' शीर्षक के इस कैंपेन में एक मैस्कॉट पेश किया गया है, जो वीआईआर एमडीएफकी शक्ति एवं टिकाऊपन को प्रदर्शित करता है। यह कार्पेंटर, इंटीरियर डेकोरेटर, आर्किटेक्ट, अंतिम उपभोक्ता, ओईएम, फर्नीचर निर्माताओं एवं बड़ी संख्या में लोगों को टिकाऊ और स्टाइलिश फर्नीचर, शेल्फ, दरवाजे, कैबिनेट्स एवं अन्य अनुप्रयोगों के लिए वीआईआर एमडीएफका उपयोग करने के लिए प्रेरित करता है। रुशिल डेकोर लिमिटेड के डायरेक्टर, रुशिल ठक्कर ने कहा, रुशिल डेकोर ग्राहकों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए नई टेक्नोलॉजीज़ को अपनाने के लिए मशहूर है। हमारा नया एआई-जनरेटेड वीआईआर एमडीएफविज्ञापन उनके साथ बेहतर संपर्क स्थापित करने की ओर एक कदम है। इस टेलीविज़न विज्ञापन में 'शक्ति' पर बल दिया गया है, जो वीआईआर एमडीएफका मौलिक गुण है, और हमारे उत्पाद एवं ग्राहकों के साथ हमारे संबंध दोनों में ही प्रदर्शित होता है। उन्होंने आगे कहा, हम इनोवेशन में हमेशा सबसे आगे रहते हैं। हमारा मानना है कि यह नया विज्ञापन उद्योग में एक नया मानक स्थापित करेगा, और दूसरे लोगों को अपने संचार में नए युग की टेक्नोलॉजीज़ को अपनाने की प्रेरणा देगा।

एसबीआई ने जिला प्रबंधकों को जनसुरक्षा योजनाओं का ज़मीनी स्तर पर विस्तार करने के लिए बनाया सशक्त

इसका लक्ष्य है, पीएमजेजेबीवाई और पीएमएसबीवाई के ज़रिये वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करना

गुरुग्राम। भारत के सबसे बड़े बैंक, भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने ग्राम पंचायत के स्तर पर जनसुरक्षा योजनाओं के पहुंच के विस्तार के लिए एक व्यापक कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में 11 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के बैंक अधिकारियों ने दो महत्वपूर्ण योजनाओं- प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पीएमएसबीवाई) के प्रसार संबंध में भाग लिया, जिसमें अग्रणी जिला प्रबंधकों (लीड डिस्ट्रिक्ट मैनेजर-एलडीएम) को इन योजनाओं के पात्र नागरिकों को इन्हें अपनाने में मदद करने के लिए सशक्त बनाया गया। इस अभियान के अंग के रूप में, बैंक के अधिकारी, देश भर के हर जिले, हर ग्राम पंचायत और हर वार्ड में सफल शिविरों का आयोजन कर जागरूकता फैलाएंगे। पीएमजेजेबीवाई योजना के तहत, जीवन बीमा सुरक्षा, जबकि पीएमएसबीवाई के तहत हर किसी को 2.00 लाख का दुर्घटना बीमा सुरक्षा मिलती है और यह क्रमशः 436 और 20 प्रति वर्ष के किफायती प्रीमियम पर हासिल किया जा सकता है।

इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम के उद्घाटन के मौके पर केंद्रीय वित्तीय सेवा विभाग में संयुक्त सचिव (एफआई) श्री प्रशांत कुमार गोयल, एसबीआई के प्रबंध निदेशक (आरबी एंड ओ) आलोक कुमार चौधरी और एसबीआई कॉर्पोरेट सेंटर, मुंबई मुख्य महाप्रबंधक - वित्तीय समावेशन, डॉ. पी.सी. साबू मौजूद रहे। इस कार्यशाला में सभी अग्रणी जिला प्रबंधकों (एलडीएम) ने भाग लिया, जिन पर विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों- उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, महाराष्ट्र, गुजरात, नई दिल्ली, उत्तराखंड, और दमन एवं दीव के एसबीआई, एसएलबीसी अधिकारियों और नोडल अधिकारियों को सौंपे गए जिलों की ज़िम्मेदारी है।यह पहल, वित्तीय समावेशन के प्रति एसबीआई की दृढ़ प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। केंद्रीय वित्तीय सेवा विभाग में संयुक्त सचिव (एफआई) श्री प्रशांत कुमार गोयल ने जनसुरक्षा योजना के तहत पात्र नागरिकों की पूर्ण सुरक्षा प्राप्त करने में मदद करने के उद्देश्य पर ज़ोर देते हुए कहा, हमारा लक्ष्य है, जनसुरक्षा योजना के तहत पात्र नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करना। एसबीआई में प्रबंध निदेशक आलोक कुमार चौधरी ने प्रतिभागियों को समाज के सभी वर्गों के बीच पीएमजेजेबीवाई और पीएमएसबीवाई जैसी सरकारी योजनाओं सहित बैंकिंग सेवाओं का विस्तार करने के लिए प्रेरित किया।

कोलगेट-पामोलिव इंडिया का विज़िबल व्हाईट टूथपेस्ट दाँतों को सुंदर बनाता है

कोलगेट विज़िबल व्हाईट के साथ रियल व्हाईट पाएं

नई दिल्ली, एजेंसी। ओरल केयर में अग्रणी, कोलगेट-पामोलिव (इंडिया) लिमिटेड अपने इनोवेटिव कोलगेट विज़िबल व्हाइट टूथपेस्ट के साथ दाँतों और मुँह को नई खूबसूरती प्रदान कर रहा है। भारत में मुँह का स्वास्थ्य व सुंदरता बढ़ाने के कोलगेट-पामोलिव के एजेंडे में विज़िबल व्हाइट के इस नए कैंपेन का उद्देश्य ज़्यादा सफ़ेद दाँतों के साथ मुस्कान के परिवर्तनकारी प्रभाव का प्रदर्शन करना है।कोलगेट-पामोलिव इंडिया मुँह की सुंदरता की ओर लोगों की बढ़ती रुचि को जानता है, और भारत के युवाओं के लिए उपयोगी व अत्याधुनिक तकनीक के उत्पाद पेश करने के लिए प्रतिबद्ध है।

इस नए कैंपेन के बारे में गुंजीत जैन, एक्ज़िक्यूटिव वाईस प्रेसिडेंट, मार्केटिंग, कोलगेट-पामोलिव इंडिया ने कहा, ब्यूटी और ग्रूमिंग सेगमेंट का तेजी से विभिन्न श्रेणियों में विस्तार हो रहा है। लाखों भारतीय ऐसे पर्सनल केयर प्रोडक्ट्स इस्तेमाल कर रहे हैं, जो दुनिया के सामने उन्हें अपने सबसे अच्छे रूप में पेश करें। लेकिन ओरल केयर के मामले में ज़्यादातर लोग परिवार के बाकी सदस्यों की तरह एक ही टूथपेस्ट का उपयोग करते रहते हैं। हम अपने दाँतों के रंग से संतुष्ट रहते हैं, और समझ ही नहीं पाते कि ज़्यादा सफेद दाँतों के साथ एक सुंदर मुस्कान क्या परिवर्तन ला सकती है। कोलगेट विज़िबल व्हाइट दाँतों को ज़्यादा सफ़ेद बनाता है, और लोगों की सुंदरता बढ़ाता है। यह टूथपेस्ट श्रेणी में सबसे तेजी से बढ़ते हुए उत्पादों में से एक है, और लाखों लोग इसे अपनाकर इसका लाभ ले सकते हैं।

कोलगेट विज़िबल व्हाइट टूथपेस्ट पहले हफ़्ते से ही दाँतों को ज़्यादा सफ़ेद बनाना शुरू कर देता है और आपकी मुस्कान को ज़्यादा सुंदर बनाता है। इस नए कैंपेन में दिलचस्प परिस्थितियों के माध्यम से कोलगेट विज़िबल व्हाइट टूथपेस्ट के फ़ायदों के बारे में बताया गया है।इस ऐड फिल्म में आकर्षक मुख्य पात्र विभिन्न सामाजिक परिदृश्यों में अपनी खूबसूरत मुस्कान से लोगों को मंत्रमुग्ध कर रही है। उसके चमकते सफेद दाँतों को देखकर लोगों को अपने दाँतों की याद आती है, और वो हास्यास्पद तरीक़े से अपनी मुस्कान छिपाने की कोशिश करते हैं। नायिका को हर जगह, चाहे वह लिफ्ट हो, आर्ट गैलरी हो, एक स्विमिंग पूल हो या शादी का रिसेप्शन हो, लोगों से ऐसी ही प्रतिक्रिया मिलती है, जो मुँह की सुंदरता को बढ़ाने के लिए कोलगेट विज़िबल व्हाइट की शक्ति पर जोर देती है।

दिन भर होता रहा माता रानी की प्रतिमाओं विसर्जन

छिंदवाड़ा। रावण दहन के बाद माता रानी की प्रतिमाओं का विसर्जन भव्य जुलुस निकाल, श्रृद्धालुओं ने नम आंखों से दी माता को दी विदाई, छोटा तालाब पेंच एवं कुलबेहरा नदी में देर रात तक चलता रहा विसर्जन । विसर्जन के दौरान नगर निगम एवं पुलिस ने व्यवस्था बनाई। सभी घाटों में 300 से अधिक मूर्तियों का विसर्जन हुआ।

सुन्दर और शिभम का इंडियन आर्मी में हुआ चयन

परासिया। देश की सेवा और आतंकवादियों, घुसपैठियों से देश को हमेशा सुरक्षित रखकर करोड़ों भारतीयों की रक्षा का संकल्प लेने वाले इंडियन आर्मी के जवान देशहित में अपनी जान की बाजी लगाने को तैयार रहते हैं, ऐसा ही जज्बाऔर हुनर के लिए जनपद पंचायत परासिया की ग्राम पंचायत सिरगोरी खुर्द के दो बेटे सुंदर ,और शिभम पिता गुलाब यदुवंशी और शिवम पिता राधेश्याम यदुवंशी ने इंडियन आर्मी में चयनित होकर देश सेवा के लिए मिसाल कायम की है, सिरगोरी खुर्द के दोनों जवान कृषक परिवार से हैं ,वे बचपन से ही प्रतिभाशाली और देश सेवा की भावना लिए हुए लगातार प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफल होने का प्रयास करते आ रहे थे। गत दिवस इनका इंडियन आर्मी में चयन किया गया, इन बेटों ने सिरगोरी खुर्द का नाम रोशन किया है ।चयनित होने के बाद इन युवाओं को उनके परिजनों एवं ग्रामीणों ने बधाई देकर जोरदार स्वागत किया है ,सिरगोरी खुर्द की सरपंच श्रीमती चित्रा डेहरिया मैं उक्त दोनों जवानों को इंडियन आर्मी में चयनित होने के बाद अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, है कि सिरगोरी खुर्द जैसे छोटे से ग्राम में इन बेटों की लगन परिश्रम और प्रतिभा की बदौलत उन्हें मिली उपलब्धि से सारा गांव उत्साहित है।

भिपेंद्र, पार्थ, हिमांशु, जानवी, लक्ष्मी व समीक्षा बने चैंपियन

जूनियर बेडमिंटन स्पर्धा सम्पन हुआ उत्कृष्ट खिलाडियों का सम्मान

छिंदवाड़ा। जिला बेडमिंटन संघ द्वारा जिला बेडमिंटन जूनियर चेम्पियनशिप 2023 का समापन पुरुस्कार वितरण के साथ हुआ । इस अवसर पर आशीष तिवारी आर आई,उमेश गोलाने टी आई कोतवाली ,इन्द्रजीत सिंह बैस, हाजी एस आई खान, रविकांत अहिरवार,एस के डेहरिया ,अज़हर खान, विजय पवार, संदीप रॉय व पवन मालवीय खिलाड़ियों को प्रोहोत्साहित करने हेतु विशेष रूप से उपस्थित थे ।इस स्पर्धा में भिपेंद्र यादव, हिमांशु पहाड़े, पार्थ हरजनी , अनुभव साहू ,जानवी विश्वकर्मा, लक्ष्मी मार्को, मन्नत डोडानी,अश्विन चोवे, समीक्षा कडू , खुशी मालवी, अनुज सरवैया, उदय गुलवास्कर, प्रथम शर्मा, अशवंत, आयुषी, रुद्र सोनी विजेता रहे इस अवसर पर राट्रीय स्तर पर भाग लेने वाली खिलाड़ी कुमारी समीक्षा कडू को विशेष रूप से सम्मानित किया गया ।संघ के सचिव जावेद खान ने बताया कि चयनित खिलाड़ी आगामी दिनों में आयोजित राज्यस्पर्धा इंदौर व भोपाल में जिले की टीम की ओर से भाग लेंगें ।प्रतियोगिता के सफल आयोजन में अनिल शर्मा ,तरुण विश्वकर्मा, पवन मालवीय, अरविंद गिरहितकर, शंकर गुलवास्कर व प्रकाश हरदिया ने सहयोग किया निर्णायक की भूमिका में रत्नेश दुबे,अशफ़ाक़ खान, कोमल शाह,भाविक, निकुंज, अनुज, प्रकृति, संवृद्धि व अनुज डेहरिया का सहयोग रहा ।इस अवसर पर अधिकारी गण व बेडमिंटन संघ के पदाधिकारी तथा पालक गण विशेष रूप से खिलाडियों के उत्साहबर्धन हेतु उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन जावेद खान तथा आभार प्रदर्शन रविकांत अहिरवार ने किया ।

बुजुर्ग का मिला कुएं में. शव, ग्राम में फैली सनसनी

अमरवाड़ा थाना अंतर्गत ग्राम घूघरला निवासी बुजुर्ग का व घर के नजदीकी कुएं में प्राप्त होने से गांव में सनसनी फैल गई, उसकी पहचान अरद्यती पिता पुसु राम मसराम के रूप में हुई ,कुएं से मृतक का शव निकालकर पंचनामा कर पोस्टमार्टम करा कर परिजनों को सौप कर मामले में मर्ग कायम कर प्रकरण विवेचना में लिया ।

सर्प दंश से मौत

अमरवाड़ा थाना अंतर्गत ग्राम गाडरवाडा निवासी केवल पिता गणपत भलावी उम्र 30 वर्ष निवासी गाडरवाडा को गंभीर हालत मे सिविल हॉस्पिटल लाया गया था युवक को विषैला सर्प ने काट लिया था इलाज के दौरान युवक की मौत हो गई सहायक उप निरीक्षक सुभाष तिवारी ने प्रकरण में मर्ग दर्ज कर विवेचना में लिया

पिता पुत्र की मिलकर की पिटाई

अमरवाड़ा थाना अंतर्गत सिंगोडी चौकी के ग्राम खाकरा चौरई निवासी महेश पिता लाल सिंह चंद्रवंशी मोटरसाइकिल से कोमल की रिपोर्ट करने आ रहे थे उसी समय कोमल चंद्रवंशी, शालिग्राम रोमेश चंद्रवंशी ने गंदी गंदी गाली देकर रोककर कहा बड़े आए रिपोर्ट करने वाले और जब महेश चंद्रवंशी ने गाली देने से मना किय तो कोमल सालक रोवेश ने पत्थर उठाकर मारपीट किया जिससे महेश के पैर में लाल सिंह को दाएं पैर की पिंडली में तथा मयंक को पीठ में चोट आई है तीनों आरोपी जाते-जाते बोल रहे थे की हमारी रिपोर्ट करोगे तो जान से खत्म कर देंगे घटना की रिपोर्ट करने पर आरोपियों के विरुद्ध प्रधान आरक्षक हरि प्रसाद ने मामला पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया।

दिव्यांग बच्चियों को रोटरी क्लब ऑफ प्राइड ने कन्याभोज कराया

छिंदवाड़ा। नवरात्री के पावन पर्व पर सी डब्लू एस एन छात्रावास के दिव्यांग बच्चो के बीच खुशी बांटने राम नवमी पर्व पर रोटरी क्लब ऑफ प्राइड द्वारा कन्याभोज का आयोजन किया गया और उपहार भी दिए गए । साथ दिव्यांग बच्चियों के बीच गरबा नृत्य का आयोजन भी किया गया जिसने सभी दिव्यांग बच्चियों सहित रोटरी क्लब ऑफ प्राइड के सभी क्लब मेंबर्स ने भी खुशियां बाटी इस अवसर पर क्लब की अध्यक्ष रोटेरियन नीलम डोडानी सचिब अंजली नायक, निधिअग्रवाल,अनिता वत्रा,स्वेता जैन, शिखा परशवानी, सुरभि माधवानी,रीत डोडानी उपस्थित रही।क्लब अध्यक्ष नीलम डोडानी ने कहा की हमारे क्लब का सौभाग्य है की हम ईश्वर के सबसे प्यारी बच्चियों के बीच पर्व के बीच इनकी खुशीयो में शामिल हो पाए है आज इनके चेहरे पर जो खुशी दिखी इससे पुनीत पुण्यार्थ का कार्य कुछ और नहीं हो सकता ।क्लब सचिव अंजली नायक ने कहा की हम लोग क्लब के माध्यम से हमेशा इन दिव्यांग बच्चियों के साथ जुड़े रहेंगे और इन्हे जब भी जिस वस्तु की आवश्यकता होगी हम पूरा करेगे।

बहुजन समाज पार्टी छिंदवाड़ा के प्रत्याशी ठाकुर त्रिविक्रम हिरपाची ने भरा नामांकन

छिंदवाड़ा। बहुजन समाज पार्टी छिंदवाड़ा के प्रत्याशी ठाकुर त्रिविक्रम हिरपाची ने नामांकन दाखिल रैली निकाली और कलेक्टर कार्यालय पहुँचकर अपना नाम दाखिल किया । इस अवसर पर ज्ञानेश्वर गजभिये जोन प्रभारी भोपाल, सतीश नागवंशी राष्ट्रीय अनुसूचित जाति मोर्चा, एड. सीताराम कटारे, जिला प्रभारी एड. बलदास डेहरिया, जिला अध्यक्ष छिंदवाड़ा, डॉ. सी.एम. गेडाम, वरिष्ठ मार्गदर्शक छिंदवाड़ा, अब्दुल रब खान, जिला उपाध्यक्ष, एवं जिला, विधानसभा के वरिष्ठ पदाधिकारी सहित सैंकड़ों कार्यकर्ता नामांकन रैली में उपस्थित थे ।

परासिया से सोहन वाल्मिकी एवं सीमान्त पुरिया ने भरा नामांकन

परासिया। परासिया विधानसभ क्षेत्र से कांग्रेस के प्रत्याशी सोहन वाल्मिकी एवं कांग्रेस से ही पूर्व विधायक लीलापुरिया के पुत्र सीमान्त पुरिया ने भी नामांकन पत्र भरा है।

देवी प्रसाद उईके ने भरा नामांकन

जुन्नारदेव। जुन्नारदेव विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस एवं निर्दलीय देवी प्रसाद उईके ने नामांकन पत्र भरा है।

फोगल बंसोड ने निर्दलीय भरा नामांकन

सौंसर। सौंसर विधानसभा से फोगल बंसोड ने निर्दलीय नामांकन पत्र भरा।

नरसिंहपुर रोड पर बड़ा हादसा

छिंदवाड़ा। सड़क हादसे में एक की मौत नेर रोड क्रॉसिंग पर हुआ बड़ा हादसा इमलीखेड़ा कोकड़ा निवास व्यक्ति की मौके पर हुई मौत।

अवैध कच्ची महुआ की शराब हुई बरामद

अमरवाड़ा। थाना अंतर्गत पिपरिया राजगुरु निवासी अनीता नामक महिला के पास से 15 लीटर शराब बरामद की गई वहीं अमरवाड़ा निवासी प्रदीप के पास से 7 लीटर कच्ची महुआ की शराब एवं ग्राम छुआ देही निवासी रज्जो के पास से थानेदार राजेंद्र सिंह अवैध शराब बरामद किया आरोपियों के विरुद्ध आबकारी अधिनियम में प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया

आपका प्यार और विश्वास मेरी सबसे बड़ी पूंजी: कमलनाथ

पाठई में कमलनाथ की ऐतिहासिक जनसभा

छिन्दवाड़ा। आगामी 17 नवम्बर को होने वाला विधानसभा चुनाव, केवल एक विधायक चुनने का चुनाव नहीं है बल्कि यह पांढुर्ना और म.प्र. के भविष्य को चुनने का चुनाव है। यह चुनाव यह तय करेगा कि हमारे नौजवानों, किसानों, व्यापारियों और आम नागरिकों का भविष्य कैसा होगा। आपने पिछले 18 सालों में भाजपा का राज देखा है सारी स ंचाई आपके सामने है। मुझे तो केवल 15 महीने सरकार चलाने का मौका मिला परन्तु उन पंद्रह महीनों में हमने अपनी नीति और नियत का परिचय दे दिया ।उक्त उदगार आज पांढुर्ना विधानसभा क्षेत्र के ब्लॉक नांदनवाड़ी के ग्राम पाठई में प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने व्यक्त किये-उन्होंने कहा कि ग्राम पाठई नांदनवाड़ी भी जिले के दो हजार गांवों में शामिल है हम बीते कल और आज की तुलना करके देख सकते हैं कि इन 42 सालों में हमने क्या पाया है, हम धीरे-धीरे आगे बढे है परन्तु अभी पूरा रास्ता तय नहीं हो पाया है, उन्होंने कहा कि मुझे कृषि क्षेत्र से जुड़े परिवारों के नौजवानों की सबसे अधिक चिन्ता है यदि कृषि क्षेत्र मजबूत होगा तो इस परिवार के ब ंचे भी अपना बेहतर भविष्य बना सकेंगे। परन्तु वर्तमान में पूरे जिले का किसान बेहाल है ।कमलनाथ ने कहा कि भाजपा ने सौदेबाजी करके मजबूत होते म.प्र. के कांग्रेस की सरकार को गिराकर हर गरीब मजदूर का हक छीना है। विधायक खरीदे गये मुझे भी कीमत बताई गई परन्तु मैंने कहा कि मैं सौदेबाजी से बनी सरकार की कुर्सी पर नहीं बैठूंगा। मैंने सौदा नहीं किया। लेकिन उन पन्द्रह महीनों में हमने अपने वादे के अनुसार पहली किश्त में 27 लाख किसानों का कर्जा माफ किया, जिले के 75 हजार किसानों का कर्जा माफ हुआ, हमने एक हजार गौशालायें खोली और सैकड़ों जनहित के काम हुये जो कि भाजपा को रास नहीं आये ।पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि अब फिर अवसर आया है जब आपको फिर से निलेश उइके को अपना समर्थन देकर प्रदेश में पांढुर्ना का झण्डा लहराना है ताकि हम छिन्दवाड़ा पांढुर्ना सहित सम्पूर्ण म.प्र. में छाये भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार, बेरोजगारी, महंगाई और नारी उत्पीड़न की समस्याओं को जड़ से मिटा सके। उन्होंने एकबार पुन: दोहराया कि मुझे आप सब पर पूरा भरोसा है और आपका प्यार और विश्वास ही मेरी सबसे बड़ी पूंजी है।

रोड शो कर नकुलनाथ ने कमलनाथ के वचन गिनाये

जिले के सांसद नकुलनाथ ने आज परासिया विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस प्रत्याशी सोहन वाल्मीक के समर्थन में क्षेत्र के चौदह दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों का भ्रमण कर आमजनों से भेंट की। प्रत्येक गांव में ग्रामीण जन ने अपने सांसद का आत्मीय स्वागत कर उनकी बातों का समर्थन किया नकुलनाथ ने कांग्रेस प्रत्याशी सोहन वाल्मीक के साथ ग्राम पलटवाड़ा, हरिनभटा, शिवपुरी, छिन्दा सेठिया, दीघावानी, रावनवाड़ा, हर्रई शंकरगढ़, खिरसाडोह, कोसमी, पंडरापानी, शहपानी, खैरीचेटु, छितरी व मोठार सहित अन्य संगम ग्रामों का भ्रमण करते हुये अमाजनों से भेंट की। अपने जनसम्पर्क के दौरान श्री नकुलनाथ ने आयोजित नुक्कड़ सभाओं में कांग्रेस की जनहितैषी एवं भाजपा की जनविरोधी नीतियों को उजागर करते हुये प्रदेश सरकार को आईना दिखाया ।सांसद ने कहा कि कमलनाथ ने म.प्र. में कांग्रेस सरकार बनते ही आमजनों को दिये गये 101 वचनों को शीघ्र पूरा करने का निर्णय लिया है। जिसमें पहले किये गये ग्यारह वचनों के साथ ही अब कक्षा पहली से पांचवी तक के ब ंचों को 500 रुपये, 6 वीं से 9 वीं तक के ब ंचों को हजार रुपये व दसवीं से 12 वीं तक के बच्चों 1500 सौ रुपये प्रतिमाह दिये जायेंगे। इसके अतिरिक्त नारी सम्मान योजना के 1500 रुपये महिलाओं को मिलेंगे साथ ही माह दिसम्बर से 500 रुपये में गैस सिलेण्डर दिये जायेंगे। नकुलनाथ ने बताया कि कमलनाथ द्वारा दिये गये वचनों में प्रत्येक परिवार का 25 लाख रुपयों का स्वास्थ्य बीमा व दस लाख रुपयों का दुर्घटना बीमा कराया जायेगा ।नकुलनाथ ने अपने रोड शो में और भी जनसमस्याओं को सुना और विधानसभा चुनावों के पश्चात उनके समुचित निराकरण के प्रयास किये जाने हेतु आश्वस्त किया।

वाहनों की चेकिंग में पुलिस ने 2,82,000/- बरामद किया

अमरवाड़ा। थाना अमरवाड़ा अंतर्गत नेशनल हाईवे पर सिंगोड़ी के पास SST चेक पोस्ट लगाकर लगातार वाहनों की चेकिंग की जा रही है दिनांक 23/10/23 की रात्रि क़रीब 10 baje चेकिंग के दौरान पिकअप MH 28 BB 6594 गाड़ी को चेक किया गया व चालक नीलेश पिता सुभाष वयार निवासी ग्राम खंडाला मेहकर थाना मेहकर ज़िला बुलढाना महाराष्ट्र से 2.82.000 (दो लाख बयासी हज़ार रुपये) नगद रुपये कहाँ से लाए इस संबंध में सही दस्तावेज पेश नहीं करने पर उक्त नगद राशि जप्त की गई । उक्त राशि का प्रतिवेदन एसडीएम की और भेजा गया है,उक्त कार्यवाही में टी आई अमरवाड़ा निरीक्षक राजेन्द्र धुर्वे , चौकी प्रभारी धर्मेन्द्र कुशराम कार्यपालिक मजिस्ट्रेट रमसा धुर्वे आर अभिसेख की मुख्य भूमिका रही।

आचार्य विभव सागर महाराज से कमलनाथ एवं बंटी साहू ने आशीर्वाद लिया

छिन्दवाड़ा। नगर की पावन धरा को जैन संस्कारों से अलंकृत करने पधारे आचार्य विभव सागर महाराज ने प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष व विधानसभा प्रत्याशी कमलनाथ को अपनी शुभाशीष दी। भाजपा प्रत्याशी विवेक बंटी साहू ने अपने समर्थको के साथ आशिर्वाद लिया।

आज नामांकन दाखिल करेंगे पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ

श्याम टॉकीज से प्रारम्भ होगी विशाल नामांकन रैली

छिंदवाड़ा- प्रदेश को भ्रष्टाचार और घोटालों के मुंह में धकेलने वाली भाजपा सरकार को उखाड़ फेंकने की प्रतिज्ञा और सुशासन को स्थापित कर म.प्र. को खुशहाल प्रदेश की श्रेणी में लाने के लिये निरंतर संघर्षरत पूर्व सीएम श्री कमलनाथ आज विशाल नामांकन रैली में सम्मिलित होंगे। जिले के युवा सांसद नकुलनाथ सहित कांग्रेस के अन्य वरिष्ठ पदाधिकारी, कार्यकर्ता व बड़ी संख्या में आमजन इस विशाल रैली का हिस्सा बनेंगे। शहर के प्रमुख मार्गों से होकर निकलने वाली इस नामांकन रैली के साथ-साथ छिन्दवाड़ा के विकास पुरुष कमलनाथ भी चलेंगे। नामांकन रैली में सम्मिलित होने के पूर्व कमलनाथ, नकुलनाथ व श्रीमती प्रियानाथ शहर के छोटी बाजार स्थित नगर शक्तिपीठ बड़ी माता मंदिर व राम मंदिर में पूजन अर्चन कर श्याम टॉकीज क्षेत्र के लिये प्रस्थान करेंगे। विगत 42 वर्षों से जिले व प्रदेश के विकास व हर वर्ग के लिये चिंतित रहने वाले पूर्व सीएम कमलनाथ की नामांकन रैली में जन-जन जुड़ते जायेंगे और कांरवा बढ़ता जायेगा। रैली में पूर्व सीएम कमलनाथ, सांसद नकुलनाथ व श्रीमती प्रियानाथ भी उपस्थित रहेंगी। चुनाव की आदर्श आचार संहिता का सम्पूर्ण पालन करते हुये नामांकन रैली शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुये गुजरेगी और स्थानीय मानसरोवर कॉम्प्लैक्स पहुंचेगी जहां विशाल आमसभा को पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ व सांसद नकुलनाथ सहित कांग्रेस के अन्य जनप्रतिनिधि सम्बोधित करेंगे। प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष कमलनाथ कलेक्ट्रेट पहुंचकर अपना नामांकन दाखिल

चौरई से भाजपा प्रत्याशी लखन वर्मा ने नामांकन पत्र भरा

छिंदवाड़ा। भाजपा प्रत्याशी लखन वर्मा ने चोरी विधानसभा क्षेत्र से अपना नामांकन पत्र भरा उनके साथ भाजपा नेता दौलत सिंह ठाकुर एवं अनिल राय एवं अन्य लोग उपस्थित थे

परासिया के पांच युवकों का सेना में हुआ चयन

परासिया। दुर्गा पंडाल वार्ड क्रमांक 11 में सेना में भर्ती हुए परासिया के पांच युवा सैनिक पहुचे तो भारत माता की जय के नारों से गूंज उठा पंडाल भारत माता की सेवा में जा रहे सैनिकों को भारतीय जनता पार्टी की अधिकृत प्रत्याशी ज्योति डहेरिया के द्वारा भारतीय सेना में भर्ती हुए पांच जवानों का स्वागत सत्कार किया गया पांचो सैनिकों को भारतीय सेना में भर्ती होने के लिए एवं उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए परासिया विधानसभा का और देश का नाम रोशन करने के लिए भारत माता की सेवा में समर्पित होने के लिए शुभकामनाएं दी गई सेना में भर्ती हुये निहाल साहू, सुन्दर श्याम,विजय विश्वकर्मा, नितेश सूर्यवंशी, नीरज यदुवंशी, सभी सैनिकों का पुष्पमाला पहनाकर एवं श्रीफल भेंट कर स्वागत किया गया ।

कांग्रेस के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने थामा भाजपा का दामन

छिंदवाड़ा। भारतीय जनता पार्टी की रीति नीति, भाजपा की जनकल्याणकारी योजनाओं से प्रभावित होकर बुधवार को डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी भवन जिला भाजपा कार्यालय में भाजपा जिलाध्यक्ष एवं छिंदवाड़ा विधानसभा प्रत्याशी विवेक बंटी साहू, अमरवाड़ा विधानसभा प्रत्याशी सुश्री मोनिका बट्टी, जिला महामंत्री टीकाराम चन्द्रवंशी, जिला उपाध्यक्ष हजारी साहू, जिला मंत्री मनोज नेमा, जिला कार्यालय मंत्री अलकेश लाम्बा, किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष संजय पटेल, भाजपा नेता संतोष पटेल, संजय अग्रवाल की उपस्थित में अमरवाड़ा विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न ग्रामों के कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ली ।

अग्नि बाण के संधान से जल गया बुराई का प्रतीक रावण, आया रामराज

दशहरा मैदान में एकत्रित हुए हजारों दर्शक, दिखा रोमांचक दृश्य

छिंदवाड़ा। देश की सर्वश्रेष्ठ रामलीला में स्थान रखने की वाली छिंदवाड़ा की महारामलीला का समापन दशहरे के भव्य कार्यक्रम के साथ हुआ। प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी कार्यक्रम उत्साह और उमंग के साथ कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। श्रीराम लीला मंडल के अध्यक्ष अरविंद राजपूत ने बताया कि कार्यक्रम की शुभारंभ मंगलाचरण एवं श्रीराम आरती के साथ हुआ जिसे मंडल के संरक्षक कस्तूरचंद जैन, राजू चरणागर, सतीश दुबे लाला, अशोक चौरसिया, संतोष जैन सरल एवं राजू माहोरे के मार्गदर्शन में समन्वित किया गया। उपाध्यक्ष राकेश चौरसिया और भोला सोनी ने बताया कि इस दौरान कार्यक्रम में अतिथि के रूप में मध्यप्रदेश शासन के पूर्व मुख्यमंत्री कमल नाथ, भाजपा जिलाध्यक्ष विवेक बंटी साहू, छिंदवाड़ा के सांसद नकुल नाथ, पूनमचंद साहू, दीपक सक्सेना, कांग्रेस जिलाध्यक्ष विश्वनाथ ऑक्टे, राजेश जुनेजा, अमित सक्सेना, शेषराव यादव, महापौर विक्रम अहके, निगम अध्यक्ष धर्मेंद्र सोनू मागो, नेता प्रतिपक्ष विजय पांडे, दीपक खंडेलवाल, जय सक्सेना, पूर्व महापौर श्रीमती कांता योगेश सदारंग सहित समस्त गणमान्य आमंत्रित अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया गया। इसमें प्रमुख रूप में निगमायुक्त राहुल सिंह, एस डी एम सुधीर जैन सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी का सम्मान किया गया।

कोषाध्यक्ष सुभाष साहू ने जानकारी दी कि इसके बाद सांकेतिक लीला का मंचन किया गया जिसमें कुंभकर्ण वध, मेघनाद वध और रावण वध की प्रतीकात्मक लीला खेली गई। मण्डल के मुख्य निर्देशक वीरेंद्र शुक्ल ने बताया कि रामलीला के प्रतीकात्मक लीला का प्रारंभ दशहरा मैदान में 5.45 पर हुआ। जिसमें सर्वप्रथम श्रीराम द्वारा कुंभकर्ण वध हुआ, कुंभकर्ण का बेहतरीन अभिनय विजय आनंद दुबे ने किया और रजत पांडे ने श्रीराम का मर्यादित किरदार निभाया फिर लक्ष्मण द्वारा मेघनाथ का वध को दर्शाया गया जिसमें लक्ष्मण के रूप में आयुष शुक्ला और मेघनाद के रूप में मयंक चौरसिया नज़र आए। हनुमान द्वारा मुष्टिका प्रहार पाकर रावण सकते में आ गया हनुमान का सशक्त अभिनय संतोष कुशवाह ने किया और रावण का जानदार किरदार निभाकर वरिष्ठ कलाकार जितेंद्र सोनी ने सभी की सराहना प्राप्त की।

इलेक्ट्रोनिक आतिशबाजी बनी आकर्षण का केंद्र

श्री रामलीला मंडल के भेष भूषा निर्देशक एवं आतिशबाजी प्रभारी राहुल द्विवेदी पिंटू ने बताया कि इस वर्ष आतिशबाजी का पूरा संग्रहण हैदराबाद से किया गया। दशहरा मैदान में पहली बार इलेट्रॉनिक आतिशबाजी की गई। जो आकर्षण का केंद्र बनी रही। रावण दहन के बाद प्रारंभ हुई आतिशबाजी।

दस दिवस तक चलता रहा भंडारा, संस्था के सदस्यों का साधुवाद: शंटी बेदी

छिंदवाड़ा। श्याम टाकिज छिंदवाड़ा में चल रहे मध्यप्रदेश के सबसे बड़े फलाहारी एवं भोजन भण्डारे का समापन कल दशहरे की रात्रि में हो गया। भण्डारा लगातार आठ दिन तक दोपहर 2 बजे से रात्रि 10 बजे तक एवं अंतिम दो दिवस नवमीं एवं दशहरे के दिन भोजन प्रसादी का कार्यक्रम दोपहर 12 बजे से रात्रि 2 बजे तक चलता रहा। कार्यक्रम मे बड़ी संख्या मे भक्तों ने फलाहर एवं प्रसादी का लाभ लिया। संस्था सेवा संस्कार समिति के तत्वाधान मे रॉयल क्लब द्वारा आयोजित इस 10 दिवसीय भण्डारे के बारे मे जानकारी देते हुये क्लब के अध्यक्ष गुरजीत सिंह शंटी बेदी ने बताया कि संस्था द्वारा इस विशाल भण्डारा के आयोजन के द्वितीय वर्ष में भक्तों का उम्मीद से अधिक प्रतिसाद मिला है। पहले वर्ष की तुलना में इस साल जनमानस को कार्यक्रम की जानकारी पहले से ही होने से बड़ी संख्या मे भक्तों ने उपस्थित होकर माता रानी के भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किया है। श्री बेदी ने कहा कि भण्डारे के 10 दिनों मे लगभग 5 लाख श्रद्धालुओं ने फलाहरी प्रसादी एवं भोजन ग्रहण किया है। दस दिवसीय इस कार्यक्रम में समाज के विभिन्न वर्गों एवं सामाजिक संस्थाओं के प्रमुखों सहित प्रमुख राजनितिक दलों के जनप्रतिनिधियों चौधरी चन्द्रभान सिंह , नकुलनाथ ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर श्रद्धालुओं को प्रसादी बांटी एवं भोजन ग्रहण किया। समिति सदस्यों का साधुवाद करते हुए शंटी बेदी ने कहा कि सेवा संस्कार समिति रॉयल क्लब इस पुनीत कार्यक्रम में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप सहयोगी सभी महानुभावों का हृदय के अन्तःकरण से साधुवाद देती है साथ ही सदस्यों के साथ-साथ जो मातृशक्ति एवं बहनें भोजन प्रसादी की व्यवस्था मे सेवारत् रही हैं उनके बिना इस कार्य को सफल बनाना असंभव था उनके चरणों में प्रणाम सफल कार्यक्रम के लिये संस्था सेवा संस्कार समिति रॉयल क्लब की संपूर्ण नगर मे भूरी-भूरी प्रशंसा की जा रही है एवं संस्था ऐसे ही जनकल्याण के सांस्कृतिक सामाजिक शैक्षणिक पर्यावरण एवं क्रीडा के कार्यक्रमों को संचालित करते रहे इसके लिये लगातार शुभकामनाऐं एवं बधाई प्राप्त हो रही है।

भाजपा मीडिया प्रभारी के खिलाफ शिकायत कमलनाथ को रावण बताने पर भड़की कांग्रेस

साइबर सेल में शिकायत कर एफआईआर करने की मांग

भोपाल। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर सूबे में सियासी घमासान चरम पर है। प्रदेश में पोस्टर वॉर पर सियासत जारी है। बीजेपी के दशहरे पर कांग्रेस चीफ कमलनाथ को रावण बताने पर कांग्रेस भड़क गई है। अब कांग्रेस ने पलटवार करते हुए भाजपा को छिछोरों की पार्टी बताया है। साथ ही कांग्रेस नेताओं ने साइबर सेल में आईटी एक्ट और धार्मिक भावनाएं भड़काने के मामले में एफआईआर दर्ज की मांग करते हुए शिकायत की है।

कांग्रेस प्रतिनिधि मंडल ने की शिकायत

पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के मीडिया सलाहकार पीयूष बबेले और प्रदेश कांग्रेस मीडिया विभाग के अध्यक्ष केके मिश्रा के नेतृत्व में कांग्रेस के प्रतिनिधि मंडल ने बीजेपी प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष अग्रवाल के खिलाफ क्राईम ब्रांच थाने में शिकायत की है। कांग्रेस नेताओं ने मामले में आईटी एक्ट और धार्मिक भावनाएं भड़काने को लेकर भादवि की धारा 188, 295, 499, 500 और 505 के तहत एफआईआर कराने के लिए आवेदन सौंपा। कांग्रेस नेताओं ने आशीष अग्रवाल के इस कार्य को गंभीर अपराध बताते हुए कार्रवाई की मांग की है। कांग्रेस ने सायबर सेल में शिकायत कर एफआईआर दर्ज करने की मांग की है। क्या है मामला- बीजेपी के प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष अग्रवाल ने एक पोस्टर शेयर किया। इसमें पूर्व सीएम कमलनाथ के दस सिर के साथ लिखा कि एमपी के सनातनी करेंगे घोटालों के रावण का दहन। इस पोस्टर में छापों में ओएसडी मामले में 281 करोड़, सिख नरसंहार, अवैध खनन की वसूली, ट्रांसफर घोटाला, न्यूक्लियर सीक्रेट लीक, 877 करोड़ के ई-टेंडर घोटाले, अगस्ता वेस्टलैंड हेलीकॉप्टर दलाली, भिंडरावाले को पैसे देना, 63 करोड़ के मोबाइल घोटाले और नीरा राडिया टेप लीक समेत 10 घोटाले गिनाएं हैं।

विधायक कृष्णा गौर ने गोविंदपुरा क्षेत्र से नामांकन दाखिल किया। इस मौके पर जिला भाजपा अध्यक्ष सुमित पचौरी भी मौजूद रहे।

स्कूटी पर बैठक कर नामांकन भरने पहुंचे विश्वास कैलाश सारंग

एमपी में विधानसभा में बेहतर परफॉर्मेंस नहीं रहा टिकट का आधार

सबसे ज्यादा उपस्थिति और सवाल पूछने वाले विधायक नहीं बन पाए प्रत्याशी

भोपाल। बीजेपी-कांग्रेस समेत सभी राजनीतिक दल उम्मीदवारी तय करते समय एक बात पर बार-बार जोर देते हैं कि परफार्मेंस ही टिकट का आधार होगा। लेकिन मध्यप्रदेश में ऐसा नहीं है। यहां पर दोनों प्रमुख राजनीतिक दल बीजेपी और कांग्रेस की कथनी और करनी में फर्क है। परफार्मेंस के मामले में दोनों ने एक ही तरह का काम किया है। जिन विधायकों का विधानसभा में बहुत अच्छा परफॉर्मेंस रहा है वे ही बेटिकट हो गए हैं। जिन विधायकों की टिकट काटी गई है, उनमें वे विधायक भी शामिल हैं जो उपस्थिति के मामले में टॉप 5 में शुमार रहे हैं। वहीं उन विधायकों को भी रिपीट नहीं किया गया जिन्होंने विधानसभा में सैकड़ों सवाल पूछे हैं। आइए आपको दिखाते हैं विधानसभा के परफार्मेंस और टिकट के क्राइटेरिया की पड़ताल करती रिपोर्ट। ये रिपोर्ट देश की प्रतिष्ठित संस्था एडीआर ने जारी की है।

[illegible] : विधानसभा में बेहतर परफॉर्मेंस फिर भी बेटिकट

विधानसभा	विधायक	उपस्थिति प्रतिशत में	सवाल पूछे
[illegible]	[illegible]	96	31
[illegible]	[illegible]	58	67
[illegible]	[illegible]	95	265
[illegible]	[illegible]	95	132
[illegible]	[illegible]	97	49
[illegible]	[illegible]	81	41
[illegible]	[illegible]	94	93
[illegible]	[illegible]	90	78
[illegible]	[illegible]	90	83
[illegible]	[illegible]	87	80
[illegible]	[illegible]	95	42
[illegible]	[illegible]	96	24
[illegible]	[illegible]	91	352
[illegible]	[illegible]	97	287
[illegible]	[illegible]	38	134
[illegible]	[illegible]	33	100
[illegible]	[illegible]	92	38
[illegible]	[illegible]	89	336
[illegible]	[illegible]	92	51
[illegible]	[illegible]	28	184

परफॉर्मेंस में फिट, फिर भी बेटिकट- एडीआर ने मध्यप्रदेश की पंद्रहवीं विधानसभा में विधायकों के प्रदर्शन पर एक रिपोर्ट जारी की है। जिसमें विधायकों की पांच साल की उपस्थिति और उनके पूछे गए सवालों की जानकारी है। हमने इस रिपोर्ट पर टिकट के क्राइटेरिया की पड़ताल की है। बीजेपी ने 32 मौजूदा विधायकों के टिकट काटे हैं उनमें से 20 विधायक ऐसे हैं जिनका परफॉर्मेंस विधानसभा में अच्छा रहा है। परफार्मेंस का आधार हमने उपस्थिति और उनके सवालों की संख्या को बनाया है। वहीं कांग्रेस के आठ विधायकों का विधानसभा का परफॉर्मेंस बेहतर है फिर भी उनको टिकट से वंचित होना पड़ा।

भोपाल। राजधानी में देवी प्रतिमाओं का विसर्जन जारी है

क्या मध्यप्रदेश में प्रत्याशियों के चेहरे बदलकर बड़ी गलती कर रही है कांग्रेस?

भोपाल। प्रत्याशियों के नाम डिक्लेयर होने के बाद अब कांग्रेस बीजेपी बगावत की आग झेल रही हैं। वैसे तो हर चुनाव में लिस्ट जारी होने के बाद इस आग का भड़कना तय होता है, कोई पॉलिटिकल दल ऐसा कोई फायर ब्रिगेड तैयार नहीं कर सका जो इस आग को बुझा सके, लेकिन इस बार दोनों पार्टियां खासतौर से कांग्रेस, इस आग को बुझाने के लिए पोर्टेबल फायर एक्सटेंगविशर का इंतजाम जरूर कर रही है, लेकिन दोनों दलों को ये बात भी ध्यान रखनी चाहिए कि आग बुझाने की कोशिश बैक फायर कर सकती है। जिसमें 2023 का रण जीतने की उनकी सारी कोशिश स्वाह भी हो सकती है, जिस डैमेज कंट्रोल की कोशिश में बीजेपी और कांग्रेस दोनों नए फैसले लेने की तैयारी में हैं हो सकता है कि वही फैसले उनके लिए जी का जंजाल बन जाएं।

बगावत की आग में जल रही कांग्रेस और बीजेपी- कांग्रेस ने मध्यप्रदेश की पूरी 230 सीटों पर कैंडिडेट डिक्लेयर कर चुनावी तस्वीर तो क्लियर कर दी, लेकिन खुद की रणनीति ही उसमें धुंधली दिखाई देने लगी है। इस टिकट वितरण से पहले इस बात का जबरदस्त शोर था कि दोनों ही दलों ने आंतरिक सर्वे करवाएं हैं और जांच परख कर टिकट दिया गया है, लेकिन जो लिस्ट सामने आई उसके बाद से ही दोनों दल बगावत की आग में जूझ रहे हैं। जिसका असर ये हुआ कि पहली लिस्ट जारी करने के पहले ही सप्ताह में कांग्रेस को अपने तीन फैसले बदलने पड़े। और अब चार सीटों पर चेहरे बदल दिए हैं। ये सिलसिला सिर्फ इतने पर ही और सिर्फ कांग्रेस में ही थमता नहीं दिखाई दे रहा। इस आग पर काबू पाने के लिए अब कांग्रेस कुछ और चेहरे बदलने की तैयारी में है और बीजेपी भी कुछ इसी थीम पर आगे बढ़ने की कोशिश में है। दोनों दलों को दशहरे के गुजरने का इंतजार था। जिसके बाद चुनावी बिसात पर फिर बड़े उल्टफेर की तैयारी है।

बेकार साबित हुए टिकट वितरण के सर्वे- जिन सर्वे पर भरोसा कर कांग्रेस ने टिकट बांटे हैं, वही सर्वे अब कांग्रेस के लिए मुश्किल बन गए हैं। खुद दिग्विजय सिंह ने ये गलती मान ली है कि सर्वे की वजह से इतनी मुश्किलें हुई हैं, बगावत की आग तो पार्टी को झुलसा ही रही है दिग्विजय सिंह का कहना है कि अब विषपान की तैयारी है। डैमेज कंट्रोल के लिए कुछ और सीटों पर चेहरे बदलने की भी पूरी तैयारी है। इस नए मंथन के बाद कांग्रेस को उम्मीद है कि जीत का अमृत से भरा प्याला जरूर निकलेगा, लेकिन मामला उल्टा भी पड़ सकता है। चुनावी पंडितों की मानें तो कांग्रेस एक घर संभालेगी तो दूसरा उसी घर में आग लगाने की तैयारी कर लेगा, हो सकता है डैमेज कंट्रोल की कोशिश, बागियों के गुस्से से ज्यादा भारी पड़ जाए।

हम भी खेलेंगे नहीं तो खेल बिगाड़ेंगे...- टिकट वितरण के बाद प्रदेश में बागियों का हाल कुछ ऐसा है जैसे ऐलान कर रहे हों कि हम भी खेलेंगे वर्ना खेल बिगाड़ेंगे। दिलचस्प बात ये है कि इन बागियों के तेवर से इस बार सियासी दल दबाव में आ रहे हैं। अमूमन ऐसा होता है कि टिकट वितरण के बाद वंचित दावेदारों की नाराजगी सामने आती है। लेकिन दल अपने फैसले पर कायम रहते हैं, लेकिन इस बार कांग्रेस ने दबाव में आकर पहले ही तीन जगह के टिकट बदल दिए, और ये सिलसिला आगे भी जारी रहने की तैयारी है। प्रदेश की करीब 47 सीटों पर पार्टी प्रत्याशियों का विरोध हो रहा है। 5 सीटों पर तो खुली बगावत हो रही है। सोमवार को भोपाल में कमलनाथ के बंगले पर शुजालपुर और होशंगाबाद विधानसभा क्षेत्र के नाराज कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया।

कांग्रेस ने चार सीटों पर बदले प्रत्याशी- भारी विरोध के बाद आखिरकार कांग्रेस ने फैसला लिया और चार और सीटों पर अपने प्रत्याशी बदल दिए। सुमावली में कुलदीप सिकरवार की जगह अजब सिंह कुशवाहा, पिपरिया में गुरु चरण खरे की जगह वीरेंद्र बेलवंशी, बड़नगर में राजेंद्र सिंह सोलंकी की जगह मुरली मोरवाल और जावरा में हिम्मत श्रीमाल की जगह वीरेंद्र सिंह सोलंकी को टिकट दिया गया है। बता दें कि दिग्विजय सिंह ने पहले ही कहा था कि रणदीप सुरजेवाला ने उन्हें बागियों को मनाने की जिम्मेदारी सौंपी है। साथ ही ये भी मान लिया गया था कि कुछ जगह पर टिकट बदले जा सकते हैं। जिसके बाद कांग्रेस ने उनके नामों की लिस्ट जारी कर ही दी।

कहां किसका विरोध और कौन मांग रहा टिकट

शुजालपुर सीट से कांग्रेस के घोषित प्रत्याशी रामवीर सिंह का विरोध किया। यहां टिकट की दावेदारी कर रहे योगेंद्र सिंह बंटी बना के समर्थक प्रदर्शन किया, समर्थकों ने उनके लिए टिकट की मांग की हैं। होशंगाबाद सीट पर बीजेपी से आए गिरिजाशंकर शर्मा को टिकट देने पर नाराजगी है। यहां कार्यकर्ता चंद्रगोपाल मलैया को टिकट देने पर जोर दे रहे हैं, शर्मा परिवार को लेकर होशंगाबाद सीट पर नाराजगी बताई जा रही है। शिवपुरी से वीरेंद्र सिंह रघुवंशी को टिकट दिया जा सकता है। पिछोर में तीसरी बार प्रत्याशी बदल कर वापस केपी सिंह को भेजा सकता है। इससे पहले 15 अक्टूबर को जारी पहली सूची में शैलेंद्र सिंह को पिछोर से टिकट दिया गया था। 22 अक्टूबर को शैलेंद्र का टिकट ड्राप कर अरविंद सिंह लोधी को टिकट दे दिया गया। केपी इस सीट से 6 बार से विधायक हैं।

बीजेपी ने नहीं लिया कांग्रेस जैसा कोई फैसला

बगावत की आग कुछ 22 सीटों पर बीजेपी भी झेल रही है, लेकिन बीजेपी ने अब तक कांग्रेस जैसा प्रत्याशी बदलने का कोई फैसला नहीं लिया है। कुछ सीटों पर बगावत खुलकर सामने है और दलबदल की कवायद भी शुरु हो गई है। पूर्व स्वास्थ्य मंत्री रुस्तम सिंह ने बीजेपी को झटका देते हुए बहुजन समाज पार्टी ज्वॉइन कर ली, वे अपने बेटे राकेश सिंह के लिए मुरैना से टिकट मांग रहे थे लेकिन पार्टी ने यहां से रघुराज कंसाना को मौका दिया है। टीकमगढ़, पवई, भोपाल दक्षिण पश्चिम, त्यौंथर, जबलपुर उत्तर, उज्जैन उत्तर, बुरहानपुर, जोबट, अलीराजपुर, काला पीपल, ग्वालियर पूर्व, ग्वालियर दक्षिण, अटेर, रैगांव, नागौद, वारासिवनी, होशंगाबाद, भिंड, महू, मनावर, महेश्वर और देपालपुर पर प्रत्याशी का विरोध हो रहा है। इंदौर के पूर्व विधायक अश्विन जोशी भी तीन नंबर विधानसभा क्षेत्र से निर्दलीय चुनाव लड़ने उतर सकते हैं। पवई विधानसभा क्षेत्र से बीजेपी का टिकट बदलने के लिए पार्टी नेता संजय नगायच ने कुछ दिन का अल्टीमेटम दिया है। हालांकि बीजेपी अब तक ऐसे किसी दबाव में न आने का दावा ही कर रही है।

अपने फैसलों को लेकर कन्फ्यूजन में कांग्रेस

बगावत के बाद कांग्रेस पूरी तरह से डैमेज कंट्रोल में जुटी हुई है। इस कदम को चुनावी पंडित और ज्यादा नुकसानदायी मानते हैं। चुनावी पंडितों की मानें तो टिकट देने के बाद चेहरा बदलना ये जाहिर करता है कि खुद पार्टी ही अपने फैसलों को लेकर कंफ्यूज है। जिसका मैसेज मतदाता के बीच गलत जाता है। दूसरा असर ये होता है कि जिसे पहले टिकट मिल चुका होता है, वो प्रत्याशी टिकट कटने के बाद ज्यादा नाराज हो सकता है और उसके समर्थक भी पार्टी को ज्यादा नुकसान पहुंचा सकते हैं। इसका खामियाजा कांग्रेस को बहुत ज्यादा भुगतना पड़ सकता है। फिलहाल नामाकंन की आखिरी डेट गुजरने में अभी वक्त है, उससे पहले चेहरा बदलने के कुछ और फैसले नजर आएं तो भी ताज्जुब नहीं होगा।

30 अक्टूबर तक कुछ और सीटों पर बदल सकती तस्वीर

चार चार सर्वे या चार चार कंफ्यूजन सर्वे के आधार पर टिकट बांटने वाली कांग्रेस की लिस्ट और बदलते फैसले देखकर ये सवाल उठना लाजमी है। कांग्रेस इससे पहले तक अपने क्षत्रपों और समर्थकों की राय के आधार पर फैसले लेती रही है। इस बार बीजेपी की चाल चलने की कोशिश की तो उसी में उलझ कर रह गई। सात सीटों पर कांग्रेस ने चेहरे बदल दिए हैं, 30 अक्टूबर तक कुछ और सीटों पर तस्वीर बदल सकती है, अब तक बीजेपी को नर्वस बता रही कांग्रेस क्या जीत को लेकर खुद कंफ्यूज है या फिर ये नेताओं में तालमेल की कमी की एक और बानगी नजर आ रही है।

बीएसपी ने जारी की प्रत्याशियों की 12वीं लिस्ट

12वीं लिस्ट में 12 नए प्रत्याशियों के नाम, 13वीं सीट पर प्रत्याशी परिवर्तन

भोपाल। मध्यप्रदेश में बहुजन समाज पार्टी का अपना स्थाई वोटबैंक है। ऐसे में यहां मायावती की पार्टी भी पूरे जोश ओ खरोश के साथ चुनाव मैदान में है। पार्टी लगातार अपने प्रत्याशियों का ऐलान करती चली आ रही है। अब उसने अपनी 12वीं लिस्ट जारी की है, इस लिस्ट में 13 नाम हैं, 12 सीटों पर उम्मीदवारों का ऐलान किया गया है जबकि सोनकच्छ की सीट पर प्रत्याशी बदला गया है।

चंबल-विंध्य पर खास फोकस

बहुजन समाज पार्टी को ग्वालियर चंबल और बुंदेलखंड में अच्छा जनाधार है। ताजा लिस्ट में मुरैना की सुमावली सीट से कुलदीप सिकरवार को प्रत्याशी बना दिया गया है। सिंगरौली सीट से चंद्रप्रताप वर्मा, श्योपुर से विहारी सिंह सोलंकी और टीकमगढ़ से सीताराम लोधी समेत पन्ना से विनय कुमार अहिरवार को उम्मीदवार घोषित किया गया है।

सांसद दिग्विजय सिंह बोले- मैंने कमलनाथ को सपा को 4 सीटें देने को कहा था, वे 6 मांग रहे थे, जानिए किस बात को बताया गलत

भोपाल। मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव में सीट को लेकर पीसीसी चीफ कमलनाथ और सपा प्रमुख अखिलेश यादव के बीच बयानबाजी हुई। अब राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह ने बयान दिया है। उन्होंने कहा कि कमलनाथ को ऐसा नहीं बोलना चाहिए था, उन्होंने ऐसा क्यों कहा मैं नहीं जानता। मैंने कमलनाथ को सपा को 4 सीटें देने के लिए कहा था जबकि सपा 4 सीटें मांग रही थी।

हम उनके लिए 4 सीटें छोड़ सकते थे- पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने कहा कि मेरी समाजवादी पार्टियों के नेताओं से बातचीत हुई थी। वे पिछले चुनाव में 1 सीट जीते थे और 2 पर दूसरे नंबर पर आए थे। वे 6 सीटें मांग रहे थे। उन्होंने कहा कि हम उनके लिए 4 सीटें छोड़ सकते थे।

दिग्विजय सिंह ने की बहस कम करने की कोशिश- दिग्विजय सिंह ने कहा कि ये ठीक है गठबंधन सहयोगियों के बीच दोस्ताना झगड़े होते रहते हैं, लेकिन मैं जानता हूं कि सपा और अखिलेश कभी भी बीजेपी के साथ नहीं जाएंगे।' पिछले हफ्ते मध्य प्रदेश में गठबंधन नहीं करने के लिए सपा अध्यक्ष द्वारा कांग्रेस नेतृत्व की आलोचना करने के बाद, गठबंधन के मुद्दे पर मीडियाकर्मियों के सवालों का जवाब देते हुए कमलनाथ ने कहा था कि छोड़िए अखिलेश-वखिलेश।

ऐसी प्रतिक्रियाओं से बचना चाहिए- दिग्विजय सिंह ने कहा कि मुझे नहीं पता कि उन्होंने (कमलनाथ ने) ऐसा कैसे कहा। इंडिया गठबंधन के किसी नेता के बारे में ऐसी प्रतिक्रियाओं से बचना चाहिए। राज्यसभा सदस्य ने कहा कि 230 सदस्यीय विधानसभा के चुनाव के लिए सपा के साथ गठबंधन को लेकर कांग्रेस के भीतर चर्चा हुई थी। दिग्विजय सिंह ने कहा कि कमलनाथ ने दीप नारायण यादव के नेतृत्व वाले सपा नेताओं के साथ चर्चा के लिए कांग्रेस नेता अशोक सिंह को मेरे पास भेजा था। इस कमरे में (भोपाल में उनके निवास पर) हमारी चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि सपा एक सीट बिजावर (2018 के चुनावों में) बुंदेलखंड क्षेत्र में जीती थी और 2 अन्य सीटों पर वो दूसरे नंबर पर थी। सपा 6 सीटें चाहती थी और मैंने कमलनाथ को सपा के लिए 4 सीटें छोड़ने का सुझाव

कन्या भोज के बहाने अपहरण के मामले मैं कई खुलासे, दिल्ली की डॉक्टर भी गिरोह में शामिल

भोपाल। राजधानी भोपाल में कन्या भोज के बहाने दो बच्चियों को अगवा करने वाले गिरोह से अहम खुलासे हुए हैं। गैंग के तार दिल्ली की एक महिला फिजियोथैरपिस्ट से जुड़े हैं। अगवा की गईं दोनों बच्चियां उसी डॉक्टर को बेची जानी थीं।

दरअसल, नवमी के दिन भोपाल के पीरगेट स्थित कर्फ्यू माता मंदिर से कन्या भोज के बहाने दो बच्चियों को अगवा कर लिया गया था. सूचना मिलते ही सक्रिय हुई पुलिस ने शहर के 200 से ज्यादा सीसीटीवी फुटेज खंगालकर आरोपियों तक पहुंच गई। पुलिस ने बताया कि आरोपियों ने कोलार की एक इंग्लिश विला कॉलोनी में बीते 6-7 महीने से किराए पर मकान लेकर रखा था. उसी मकान से इस गैंग के पांच सदस्य पुलिस के हत्थे चढ़ गए।

आरोपियों में हरियाणा निवासी अर्चना सैनी, केरल निवासी लिव इन पार्टनर निशांत रामास्वामी समेत अर्चना का बेटा सूरज, नाबालिग बेटी और सूरज की गर्लफ्रेंड मुस्कान बानो शामिल हैं. पुलिस ने आरोपियों के पास अगवा हुई बच्चियों को तो बरामद किया ही, साथ ही अन्य दो बच्चों को भी छुड़ाया है. केरल और हरियाणा के रहने वाले बताए जा रहे हैं।

पहचान छिपाने करा दिया मुंडन - शातिर गैंग ने कन्या भोज के बहाने बच्चियों काजल और दीपाली को मंदिर परिसर से उठाने के बाद पहचान छिपाने के लिए उनका मुंडन करवा दिया. जबकि आरोपियों का कहना है कि बच्चियां भीख मांगती थीं. गंदगी से रहने के चलते उनके बाल काफी उलझे हुए थे, इसलिए कंघी भी नहीं कर पा रहे थे. यही वजह रही कि उनका मुंडन करा दिया।

मर्सिडीज में चलते थे आरोपी

पुलिस ने आरोपियों के पास एक महंगी कार भी जब्त की है. मर्सिडीज कार का इस्तेमाल आरोपी मानव तस्करी में करते थे ताकि किसी को शक न हो. उन्होंने सेकंड हैंड कार नोएडा से 5 लाख रुपए में खरीदी थी. यही नहीं, गैंग ने भोपाल की अच्छी कॉलोनी में मकान किराए पर लिया था।

कैसे और कहां से अगवा की गई बच्चियां?

बीते शनिवार को कन्या पूजन के दौरान तमाम बच्चियां पुराने भोपाल के कर्फ्यू वाली माता मंदिर के पास पहुंची हुई थीं. इसी दौरान गैंग की दो महिलाएं अर्चना और मुस्कान की नजर मासूम काजल और दीपाली पर पड़ी. दोनों ने उनको घर पर भोजन कराने के बहाने पहले ई रिक्शा में बैठाया और फिर थोड़ी दूर खड़ी मर्सिडीज कार में बैठा लिया।